लें० — म० मिक्रुकोव

मास्को विश्वविद्यालय के पत्रकारिता-विभाग में पत्रव्यवहार द्वारा शिक्षा प्राप्त करनेवाला छात्र एवं 'मास्को विश्वविद्यालय' नामक समाचारपत्र का कर्मचारी

अनुवादक — ओंकारनाथ पचालर

М. МИКРЮКОВ

СТУДЕНТЫ МОСКОВСКОГО УНИВЕРСИТЕТА

विषय – सूची

पृष्ठ

मास्को विश्वविद्यालय के इतिहास का संक्षिप्त परिचय . ५

प्रथम अध्याय। ज्ञान – हमारे नवजीवन के निर्माण की कुंजी . १३

नये छात्र . १८

व्याख्यान कक्षों, कक्षाओं और प्रयोगशालाओं में ३३

विज्ञान की ओर . ५०

स्वतन्त्र प्रयास के राजपथ पर ७०

द्वितीय अध्याय। शरीर और मानस से स्वस्थ और सबल होना आवश्यक है . ८१

मास्को विश्वविद्यालय के खेलकूद-क्लब मे ८४

मंज़िल की खोज ८६

विद्यार्थियो की छुट्टिया . १०४

तृतीय अध्याय। दिन की पढाई के बाद ११५

हमेशा अगली पंक्ति में . १२३

जहां विद्यार्थी रहते हैं १२८

प्रेम के बारे मे . . १३७

विश्वविद्यालय की शौकिया कला-मंडलिया . १५०

हर एक देश और हर जाति जवानों के ही दम से जगमगाती . . १५४

१५८

मास्को विश्वविद्यालय के इतिहास का संक्षिप्त परिचय

प्रिय पाठको, मास्को विश्वविद्यालय के विद्यार्थी-जीवन से आपको परिचित कराने के पहले, मैं सक्षेप में रूस के इस प्रथम विश्वविद्यालय के इतिहास के बारे में बताना चाहूगा।

मास्को विश्वविद्यालय ने १९५५ की मई में अपनी २०० वीं वर्षगाठ मनायी। इस विश्वविद्यालय की स्थापना महान रूसी वैज्ञानिक म० व० लोमोनोसोव ने की थी। एक साधारण मछुवे का लडका ज्ञानार्जन करने के लिए, विद्या का शिखर मापने के लिए, उत्तरी आर्कटिक महासागर के तटो पर बसे अपने गाव से मास्को के लिए पैदल चल पडा। लोमोनोसोव ने अपने को बहुत ही तेजस्वी छात्र सिद्ध किया।

१७५५ की ७ मई (२६ अप्रैल, पुरानी पद्धति) को रूस के इस प्रथम विश्वविद्यालय की स्थापना के उपलक्ष्य मे रेड स्क्वायर मे धूमधाम से समारोह मनाया गया।

लोमोनोसोव ने विश्वविद्यालय के संगठन, विभागो और उपविभागो की सख्या और पाठ्य-क्रमो के संबध में मौलिक योजना बनायी थी। पचास वर्षो तक मास्को विश्वविद्यालय उसी योजना के अनुसार काम करता रहा। तीन विभागो – दर्शनशास्त्र, चिकित्साशास्त्र और विधिशास्त्र – की स्थापना की गयी। दर्शनशास्त्र विभाग के

अन्तर्गत् — दर्शनशास्त्र, भौतिकशास्त्र, वक्तृता और इतिहास के उपविभाग थे; चिकित्साशास्त्र विभाग के अन्तर्गत् — रसायनशास्त्र, प्राकृतिक इतिहास और शरीरशास्त्र के उपविभाग, और विधिशास्त्र विभाग के अन्तर्गत् — सामान्य विधिशास्त्र, रूसी विधिशास्त्र और राजनीति के उपविभाग थे।

लोमोनोसोव ने विश्वविद्यालय का जो चार्टर तैयार किया उसके अनुसार केवल रईसो के बाल-बच्चों का ही नही बल्कि 'विद्यार्जन के इच्छुक' सभी व्यक्तियो के दाखिले की व्यवस्था थी। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि लोमोनोसोव के शिष्यो ने, जिन्हे लोमोनोसोव ने सेंट-पीटर्सबर्ग की विज्ञान अकादमी से बुलाया था, लैटिन में व्याख्यान देने की प्रचलित परम्परा को तोड़कर रूसी भाषा में अपने व्याख्यान देने शुरू कर दिये ताकि वे नीचे तबके के छात्रो की भी समझ में आ सके। विश्वविद्यालय में ऐसे छात्रो की संख्या कम नही थी। लोमोनोसोव के एक घनिष्ट अनुयायी, प्रो० न० न० पोपोव्स्की ने अपने प्रथम व्याख्यान में कहा था —

"ऐसा कोई भी विचार नही जो रूसी भाषा में व्यक्त न किया जा सके।"

मास्को विश्वविद्यालय की स्थापना से रूसी विज्ञान और संस्कृति के क्रमिक विकास पर गहरा प्रभाव पड़नेवाला था। यह शीघ्र ही देश में विद्या और प्रगतिशील विचारो का प्रमुख केन्द्र बन गया।

विश्वविद्यालय का मौलिक भवन, रेड स्क्वायर में केन्द्रीय फ़ार्मेसी की पुरानी इमारत में था, जहा आजकल ऐतिहासिक अजायबघर है। १७९३ में विश्वविद्यालय मोखोवाया स्ट्रीट पर क्रेमलिन के सामने स्थित अपनी नयी इमारत में चला गया। इस इमारत की डिज़ाइन खास तौर पर वास्तुकार म० फ० कोज़ाकोव ने तैयार की

थी। मानव-विज्ञान विभाग अभी भी इस भवन में ही मौजूद है जो १८१२ में नेपोलियन के आक्रमण के समय मास्को के अग्निकाड के बाद वास्तुकार गिलयार्डी की डिज़ाइन पर फिर से बनाया गया था। वह १६ वी शताब्दी की वास्तुकला के अनुरूप दिखाई पडने लगा।

मास्को विश्वविद्यालय की अपनी समृद्ध क्रान्तिकारी परम्परा है। इसके प्राध्यापक और विद्यार्थी अपने समय के प्रगतिशील राजनैतिक आन्दोलनो में हमेशा आगे रहे हैं। १८१६ में रूस में स्थापित प्रथम राजनैतिक गुप्तसस्था—'मुक्ति-सस्था'—के छ सस्थापको में से चार सस्थापक इसी विश्वविद्यालय के छात्र थे। जिन गुप्त सस्थाओ ने १८२५ में दिसेम्ब्रिस्टो के आन्दोलन को बढावा दिया, उनके तिहाई सदस्य, अर्थात् ६३ सदस्य इसी विश्वविद्यालय के शिष्य थे। उनमें से काखोव्स्की और वेस्तूजेव-रूमिन, आन्दोलन के उन पाच मुख्य नेताओ में से थे जिन्हे ज़ार ने फासी पर लटकवा दिया था।

वेलीन्स्की, हर्ज़न, ओगारेव तथा अन्य व्यक्तियो द्वारा विश्वविद्यालय में संगठित मडलियो ने १६वी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में रूस के क्रान्तिकारी जनवादी आन्दोलन के क्रमिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

उक्त शताब्दी के अन्त मे प्रथम मार्क्सवादी मडलिया विश्वविद्यालय में कायम की गयी। क्रान्तिकारी सर्वहारा के प्रभाव से विद्यार्थी राजनीतिक सघर्षो मे सक्रिय भाग लेने लगे। १६०२ में आम छात्र-आन्दोलन की लहर दौड गयी। १६०५—१६०७ की क्रान्ति के समय विश्वविद्यालय के लेक्चर-हॉलो में तूफानी राजनीतिक सभाएं होती थी जिनका आयोजन, विश्वविद्यालय की सामाजिक जनवादी संस्था मास्को के कर्मियों के सहयोग से करती थी। १६११ में

ज़ारशाही हुकूमत के शिक्षा-मंत्री कस्सो ने जब छात्र-आन्दोलन को दबाने के लिए सशस्त्र सैनिकों को भेजा तो एक सौ से अधिक विख्यात वैज्ञानिकों ने आन्दोलन का समर्थन किया। उनमें तिमिर्याज़ेव, लेबेदेव, ज़ेलीन्स्की, चापलीगिन, पिचेता, वेरनादस्की आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

विश्वविद्यालय से संबद्ध विद्वानों ने विश्व के और रूस के विज्ञान में जो अंशदान दिया है, उसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। जुकोव्स्की ने, जिन्हें लेनिन 'रूसी विमान-चालन के जनक' कहा करते थे, आधुनिक विमान-चालन के आधारभूत सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया।

चापलीगिन ने ५० साल पहले सबसोनिक वेलोसिटीज के आयरोडिनामिक्स के सिद्धान्त को विकसित किया; ब्रेदीहिन और वेलोपोल्स्की ने खगोल सम्बन्धी नयी खोजें कीं और मार्कोव्नीकोव और ज़ेलीन्स्की ने रसायनशास्त्र में नयी ईजादें कीं; स्तोलेतोव ने फोटोइलेक्ट्रिकल फ़ेनोमेना का अध्ययन किया; न० अ० उमोव ने ऊर्जा की गति का अध्ययन किया; लेबेदेव ने चमत्कारपूर्ण प्रयोगों के क्रम में ठोस पदार्थों और गैसों पर प्रकाश के दबाव संबंधी सिद्धान्त को सुस्थिर किया; तिमिर्याज़ेव पौद-विज्ञान के विख्यात विद्वान और रूस में डार्विनवाद के अथक प्रशंसक थे। उन्होंने पेड़-पौधों द्वारा प्रकाश ग्रहण करने के संबंध में महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त प्रतिपादित किये। रूसी शरीर-विज्ञान के जनक सेचेनोव ने मनोविज्ञान में प्रकृति-विज्ञान के आधार पर एक मौलिक शाखा का निर्माण किया और कन्डीशनल रेफ्लेक्सेज़ पर पावलोव के महान् सिद्धान्तों की नींव डाली।

विश्वविद्यालय के सभी प्रख्यात विद्वानों और प्राध्यापकों की सूची तैयार करने में कई पृष्ठ लग जायेंगे। मैं केवल इतना ही कहूंगा
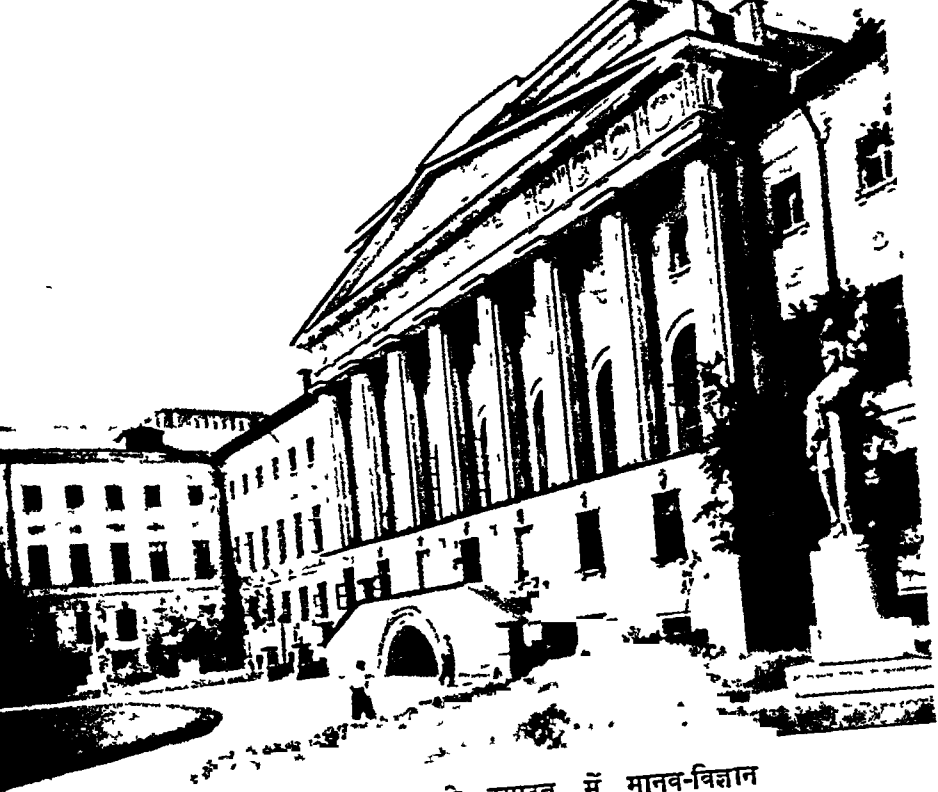
पुराने मास्को विश्वविद्यालय की इमारत में मानव-विज्ञान विभाग अवस्थित हैं

मानव-विज्ञान विभाग का पुस्तकालय
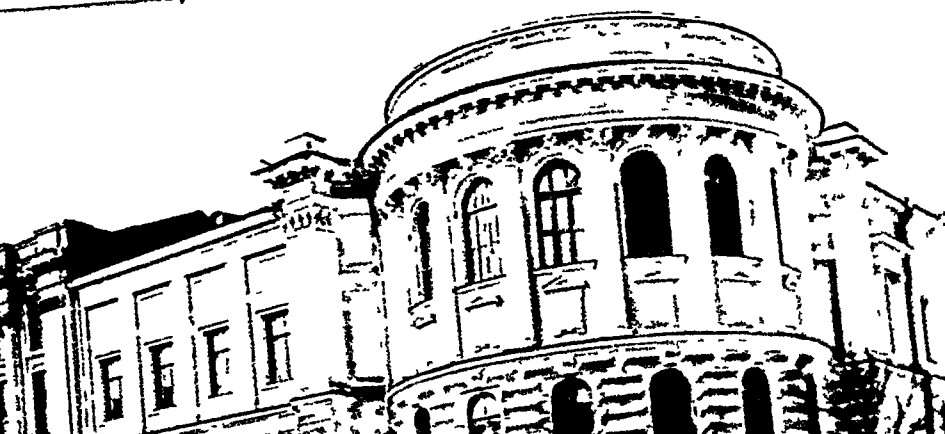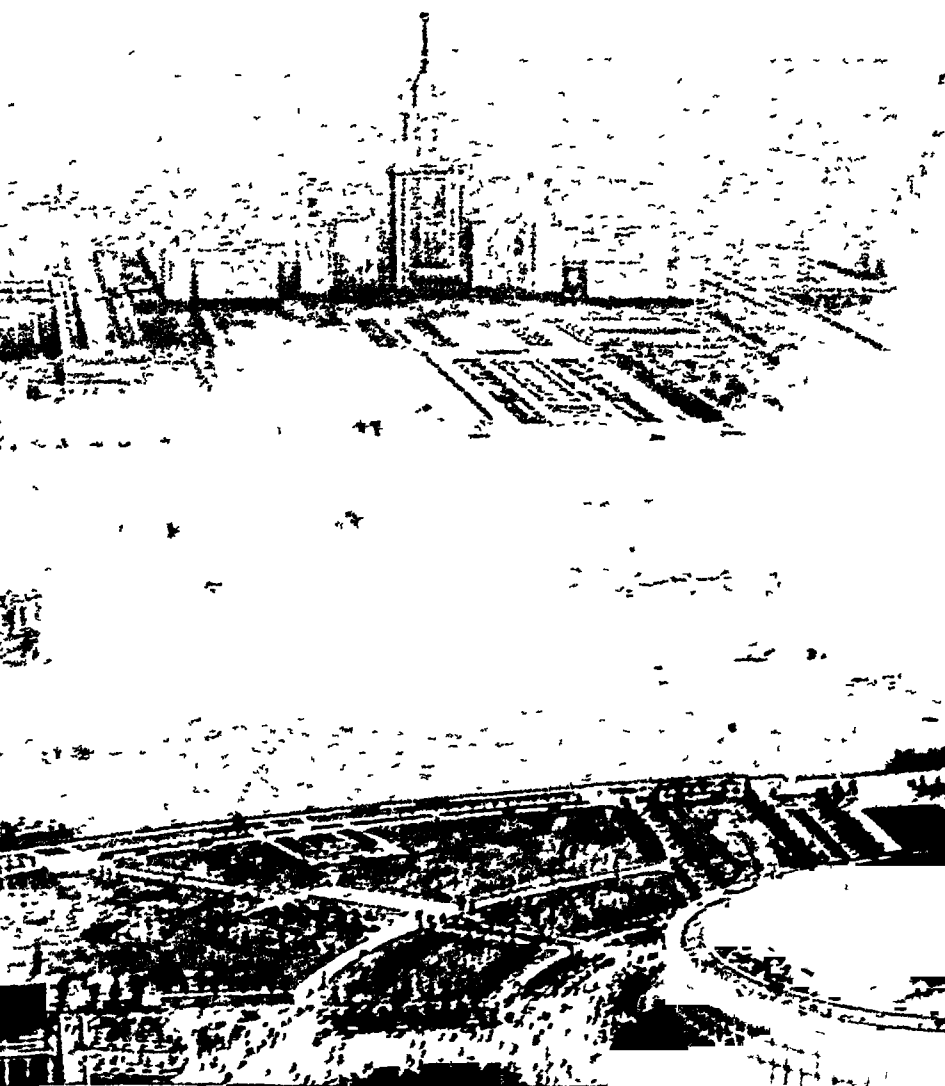
लेनिन पहाडी पर नये विश्वविद्यालय की इमारतें। सामने केन्द्रीय स्टेडियम दिखाई पडता है।

रसायन विभाग में। यहां प्रोफ़ेसर जॉन बर्नल ने अभी अभी भाषण दिया है। बाएं से दाहिने—अकादमीशियन ई०ग० पेत्रोव्स्की, मास्को विश्वविद्यालय के प्राचार्य; अकादमीशियन व० अ० एनगेलगार्ट, प्रोफ़ेसर जॉन बर्नल और अकादमीशियन अ० ई० ओपारिन।

कि प्राणिविज्ञान, भूगोल, भू-रसायन, चिकित्सा आदि के क्षेत्रो में उनके नाम विख्यात है।

मास्को विश्वविद्यालय फोन्वीज़ीन और जुकोव्स्की, ग्रिबोयेदोव और लेर्मोन्तोव, फेत और गोचारोव, तुर्गेनेव और अ० ओस्त्रोव्स्की, चेखोव और ब्रूसोव जैसे प्रख्यात रूसी लेखको और कवियो का 'अल्मा मातेर' भी रहा है।

महान् अक्तूवर समाजवादी क्रान्ति ने हमारे देश में विज्ञान, सस्कृति और शिक्षा का नवविकास किया, विश्वविद्यालय के लिए नवद्वार खोला; शोध और अध्ययन के लिए पथ प्रशस्त किया, नये जनतंत्र के लिए अपेक्षित विपेशज्ञों के लिए नये अवसर प्रदान किये।

१९४० में मास्को विश्वविद्यालय ने अपनी १८५ वी जयन्ती मनायी। उस वर्ष उसका नामकरण इसके सस्थापक मिखाईल लोमोनोसोव के नाम पर किया गया और विज्ञान एव उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रमुख सिद्धियो के लिए उसे लेनिन पदक से पुरस्कृत किया गया।

उसके वाद आये १९४१-१९४५ के युद्धवाले मनहूस वर्ष। ३००० से अधिक विद्यार्थी और प्राध्यापक सोवियत सेना में भर्त्ती होकर लड़ने के लिए मोर्चे पर चले गये। अध्ययन और शोधकार्य, फिर भी, निर्वाध रूप से चलते रहे। विजय के वाद नाज़ी आक्रमण से विनष्ट देश की अर्थ-व्यवस्था के पुनर्निर्माण के लिए हमें विशेपज्ञो की एक पलटन की ही जरूरत थी। उस अवधि में १८०० तरुण विशेपज्ञो ने स्नातक-परीक्षा में सफलता प्राप्त की।

१९४८ में सोवियत संघ की मन्त्रि-परिपद् ने लेनिन पहाड़ी पर मास्को विश्वविद्यालय के लिए कई इमारते वनाने का निर्णय किया। साढ़े चार साल वाद, १ सितम्वर १९५३ को नयी इमारतो के दरवाजे

खोल दिये गये। लोगों ने विश्वविद्यालय की इन नयी इमारतों का नाम 'विद्या-भवन' रखा है और जो लोग वहां जा चुके है वे कबूल करेंगे कि यह नाम बिल्कुल उपयुक्त है।

फिलहाल, विश्वविद्यालय में १२ विभाग है। उनमें से छ., जिनके अन्तर्गत् प्राकृतिक विज्ञान विभाग—भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, गणित एवं यन्त्रशास्त्र, भूगोल, भूगर्भशास्त्र, प्राणिशास्त्र और मृदा विज्ञान—है, लेनिन पहाड़ी पर नयी इमारतों में अवस्थित है। मानव-विज्ञान के छ विभाग—भाषाशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास, दर्शनशास्त्र, विधिशास्त्र और पत्रकारिता—अभी भी मोखोवाया स्ट्रीट पर पुरानी इमारत में है। विद्यार्थियों की संख्या २२००० से अधिक है। इनके अन्तर्गत् लगभग २००० स्नातकोत्तर छात्र है और ५५०० छात्र ऐसे है जो पत्रव्यवहार द्वारा शिक्षा प्राप्त करते है। प्राध्यापकों में प्रमुख वैज्ञानिक हैं, जैसे—सोवियत संघ विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष नेस्मेयानोव, अकादमीशियन पेत्रोव्स्की, कोल्मोगोरोव, अलेक्सान्द्रोव, सोबोलेव, स्कोबेलत्सीन, ओपारीन और विनोग्रादोव। विश्वविद्यालय के ३० प्राध्यापक, सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी के नियमित सदस्य है और ५९ प्राध्यापक, उसके संबद्ध सदस्य हैं।

मास्को विश्वविद्यालय व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क कायम रखता है। इसके सदस्य नियमित रूप से अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक कांग्रेसों और सम्मेलनों में भाग लेते हैं।

१९५६ में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ब्राज़िल में भूगोलशास्त्रियों की १७ वीं अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस और बेल्जियम में व्यावहारिक यन्त्रशास्त्र सम्बन्धी ९ वीं कांग्रेस में भाग लिया। उसके बाद के वर्ष में उन्होंने जापान में भूगोलशास्त्रियों के अन्तर्राष्ट्रीय संघ के प्रादेशिक सम्मेलन में, पोलैंड में वैश्लेपिक रसायन सम्बन्धी द्वितीय

अखिल पोलिश सम्मेलन में, फ्रास मे 'युनेस्को' द्वारा आयोजित शोव-कार्यो में रेडियो सक्रिय आइसोटोपों के व्यवहार सम्वन्वी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में और स्पेन में अस्ट्रोनाटो की ८ वीं अन्तर्राष्ट्रीय काग्रेस में भाग लिया। इनमें कई अन्य वैज्ञानिक सम्मेलनो का तो जिक्र ही नही किया गया है।

विज्ञान एव सामाजिक विचारो के क्षेत्र में विदेशो के ख्यातिप्राप्त व्यक्ति हमारे विश्वविद्यालय में आये दिन मेहमान वनते रहते है। १९५६ मे इसने अपनी अपनी व्याख्यान-माला पढने के लिए भौतिकशास्त्र और प्राणिशास्त्र विभाग में, प्रोफेसर वर्नाल को और गणित एव यत्रशास्त्र विभाग में, प्रोफेसर डेनजोय को तथा भापाशास्त्र विभाग में, प्रोफेसर दोलान्स्की को आमंत्रित किया। हाल के वर्पो में जिन विदेशी मेहमानो को आमत्रित किया गया उनमें विख्यात फ़ासीसी भौतिकविज्ञानी जोलिओट कूरी, भारत के प्रधान-मत्री जवाहरलाल नेहरू और इन्डोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्ण उल्लेखनीय है।

हर साल विश्वविद्यालय में विदेशो से आनेवाले छात्रो की सख्या वढती जा रही है। यह कहना अनावश्यक है कि इन अन्तर्राष्ट्रीय सपर्को से ससार के लोगो के वीच सद्भावना और घनिष्ट मैत्री कायम होती है।

मुझे सक्षेप में मास्को विश्वविद्यालय के इतिहास के वारे में इतना ही कहना था और अव मैं आपको इसके विद्यार्थियो, उनके पठन-पाठन और उनके वहुमुखी कार्य-कलापो से परिचित कराऊगा।

प्रथम अध्याय

ज्ञान—हमारे नवजीवन के निर्माण की कुंजी

नये छात्र

लेनिन पहाड़ी . सबसे ऊची और शायद सोवियत राजधानी की सबसे खूबसूरत जगह।

केवल छ-सात साल पहले यह पहाडी छिट-पुट जगल-झाड़ियो से भरी पडी थी। गरमियो में मास्कोनिवासी, नगर की गरमी और कोलाहल से दूर अपने रविवार यहा विताया करते थे। जाडो में स्किइग करनेवालो के लिए यह प्रिय स्थान था। एक पुराने गिरजाघर और कुछेक लकडी के घरो को छोडकर वहा कोई भी इमारत नही थी। आज ग्रेनाइट के बने उस चबूतरे की विशाल रेलिंग के सहारे टिककर खडे होने पर आपको अपने सामने मास्को राजकीय विश्वविद्यालय की बत्तीस मजिला इमारत शान से खडी दिखाई पडेगी जिसका नामकरण लोमोनोसोव के नाम पर किया गया है। दाहिने और बायें चौड़ी पक्की सड़के मिलेगी जिनके बीच मे फूलो की सुन्दर क्यारिया और फौव्वारे दिखाई पडेंगे। वन-झाड़ियो से भरी पहाडी के स्थान में अब वहा विद्यार्थियो का एक नया नगर पनप उठा है।

ऊची लेनिन पहाडी पर से मास्को उसी तरह से दिखाई पडता है मानो वह आपकी हथेली पर हो। तडके सुबह ओसकणो ने चमकते हुए छप्परो का असीम सागर। उगते हुए सूरज की गुलाबी आभा

से देदीप्यमान वे नयी इमारतें, जो हर जगह बनती हुई नज़र आयेंगी। अनगिनत क्रेन, जिन्हें यहां से ठीक ठीक देख पाना मुश्किल है, अभी भी निश्चल है। जहा-तहां कारखानो की चिमनियो से धुए के बादल निकल रहे हैं। बहुमजिले मकानो की आकृतियां आसमान की पृष्ठभूमि में साफ दिखाई पड़ रही हैं। गुलाबी धूप में गिरजाघरो के प्याज़नुमा गुंबद चमक रहे है। हरी-पीली पत्तियो की जाली से घिरी हुई ऊची और पुरानी नोवो-देविची मीनार सादगी से खडी दिखाई पड़ती है। और दूर पर, नगर के बीचोबीच मास्को के क्रेमलिन की चहारदीवारी की अस्पष्ट झाकी मिलती हैं। आपके ठीक नीचे चौड़े घुमाववाली मस्कवा नदी सामने के तट पर स्थित खेल-कूद के नये नगर को —जो १००,००० दर्शको के लिए केन्द्रीय लेनिन स्टेडियम, तैरने के तालाब, खेल-कूद भवन और अन्य खेलो के मैदानो से युक्त है—घोड़े के नाल की तरह घेरकर बहती हुई नज़र आयगी।

पहली सितम्बर, विद्या-वर्ष का पहला दिन। अभी सुबह के केवल ८ बजे हैं। पहला व्याख्यान शुरू होने में अभी भी एक घटे की देर है लेकिन लडके और लडकियो की टोली विश्वविद्यालय की ओर जानेवाली पगडडियो पर तेज़ी से बढ़ती हुई दिखाई पड़ेगी। वे नये छात्र हैं। वे व्याख्यान शुरू होने के नियत समय तक इन्तज़ार नही कर सकते क्योंकि उन्हे डर है कि कही उन्हें देर न हो जाय और यह बडी ही शर्मनाक बात होगी। (यहा यह भी उल्लेख कर दू कि शीघ्र ही उनकी इस धारणा में परिवर्तन हो जायगा)। प्रथम वर्ष के छात्रो की हरेक भाव-भगिमा में, प्रत्येक गतिविधि में, उनकी आह्लादपूर्ण हंसी और गूंजनेवाली आवाज़ो में, उनके हृदय के उल्लास का अनुभव सहज ही किया जा सकता है। अब वे देश के सबसे अधिक लोकप्रिय विश्वविद्यालय—मास्को विश्वविद्यालय—के छात्र हैं। हमारे बहुत-से

युवक और युवतियां इस विश्वविद्यालय की छाया में आना चाहती है लेकिन सब के सपने पूरे नही हो पाते। विश्वविद्यालय में दाखिल होने के इच्छुक युवक-समुदाय को, उनकी बढती हुई सख्या के कारण भर्ती करना असभव है। उच्च शिक्षावाले अन्य विद्यालयो की अपेक्षा यहा की प्रवेश-प्रतियोगिता बहुत कठिन है। प्रत्येक स्थान के लिए छ से लेकर १० प्रतियोगी रहते है। अत, सबसे उत्तम विद्यार्थी, अच्छे प्रशिक्षण और विस्तृत ज्ञानवाले विद्यार्थी ही दाखिल किये जाते है।

मास्को विश्वविद्यालय को बहुराष्ट्रीय उच्च शैक्षणिक सस्था कहा जा सकता है। सोवियत सघ के सभी जनतत्रो के युवक और युवतिया तथा विदेशो के भी काफी छात्र इस विश्वविद्यालय मे शिक्षा प्राप्त करते है। कुल मिलाकर लगभग ७० विभिन्न राष्ट्रो के छात्र यहा शिक्षा प्राप्त करते है।

इस विशाल मीनार-घडी की ओर देखनेवाले ये युवक और युवतिया कौन है? उनमें से अधिकाश मास्को के निवासी नही है। उनमें से प्रत्येक को उसकी योग्यता के बल पर दाखिल किया गया है। उदाहरणार्थ, जिन छात्रो ने स्वर्ण-तमगा के साथ स्कूल की शिक्षा समाप्त की उनका साक्षात्कार केवल एक विभागीय सदस्य ने किया ताकि छात्र के सामान्य विकास के बारे में और सबद्ध विभाग के अन्तर्गत् पढाये जानेवाले बुनियादी विषय सबधी उनके ज्ञान के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सके। रजत-तमगा के साथ स्कूल की शिक्षा समाप्त करनेवाले छात्रो को बुनियादी विषय की परीक्षा में बैठना पडा। अत गणित एव यत्रशास्त्र विभाग या भौतिकशास्त्र, भूगोल और भूगर्भशास्त्र के विभागो मे दाखिल होनेवाले छात्रो को गणित की परीक्षा देनी पड़ी; मानव-विज्ञान विभाग के किसी भी उपविभाग में दाखिल होने के लिए उन्हे रूसी भाषा और साहित्य

की परीक्षा देनी पड़ी। सामान्य परीक्षा में बैठने की अनुमति पानेवाले छात्रों को छ. विभिन्न विषयो में उत्तीर्ण होना पड़ा।*

प्रथम वर्ष के अधिकाश छात्र आज एक दूसरे से पहली बार मिल रहे हैं। अत उनका एक दूसरे के बारे में, उनके घरवालों के बारे में, उनके अपने गांव-शहर आदि के बारे में ढेरो सवाल पूछना स्वाभाविक है।

एक छोटी-सी भीड़ के बीच एक सांवली लड़की, जिसकी सजीव भूरी आंखें चश्मे के भीतर से झाक रही हैं, बड़ी तन्मयता से कुछ सुना रही है। वह क्लारा बाइमिशेवा है जो बुपहले कज़ाख़स्तान की राजधानी अल्मा-अता की रहनेवाली है। बाइमिशेवा परिवार की कहानी बहुत ही दिलचस्प है। कज़ाख लोगों के कई परिवारो की यही कहानी है।

क्लारा की दादी और दादा मवेशी पालनेवाले बजारे थे। गर्मियो के आते ही वे अपना जाडे का पड़ाव छोड़कर अच्छे चरागाह की खोज में स्तेपी में भटका करते थे। तब आये क्रान्ति के दिन और उनके साथ साथ सोवियत सत्ता। बजारों ने नयी ज़िन्दगी देखी। धीरे धीरे वे इस नयी ज़िन्दगी के आदी हो गये। नयी बस्तियां और नये नगर पनप उठे। कज़ाख सस्कृति अब निर्बाध रूप से फलने-फूलने लगी।

क्लारा के मां-बाप–क्रान्ति के समवयस्क–नयी ज़िन्दगी के साथ बढ़ते गये। उन दोनो ने उच्च शिक्षा प्राप्त की। उसके पिता कृषि-अकादमी से स्नातक हुए और श्रमिक जनता के प्रतिनिधियो की

---

*१९५८ में लागू किये गये नये नियमो के अनुसार उच्च शिक्षालयों में प्रवेश पानेवाले सभी छात्रों को, जिनमें तमगोंवाले छात्र भी शामिल हैं, एक आम इम्तहान पास करता पड़ता है।

जिला सोवियत की कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। उसकी मा एक पत्रकार बनी। क्लारा के सामने भी विस्तृत क्षेत्र खुला पडा है। उसने स्कूल में जी लगाकर पढ़ा और उसकी अभिरुचि गणित की ओर रही। उसने रजत-तमगा के साथ माध्यमिक स्कूल की पढाई खत्म की और मास्को विश्वविद्यालय के गणित एव यत्रशास्त्र विभाग में दाखिल हो गयी।

" क्या कह रहे हो! ६ हजार क्यो, व्लादिवोस्तोक यहा से ६ हजार किलोमीटर से अधिक है," पास ही से कोई आश्चर्यभरे स्वर में कह उठा। "चुकोत्का की दूरी १२ हजार किलोमीटर है," सुनहरे बालोवाली एक नाटी लडकी ने कहा। "तुम्हे अपने देश का भूगोल नही मालूम। हमारा चुकोत्स्की प्रायद्वीप देश का आखिरी पूर्वी छोर है।"

दूर के स्थानो की जिन्दगी के बारे में जानने के लिए हर कोई उत्सुक है, उत्तरी छोर की जानकारी केवल पुस्तको से मिलती है।

"जान्ना, चुकोत्का के बारे में हमें कुछ सुनाओ," उसके मित्रो ने उससे अनुरोध किया।

"वहा के बारे में क्या कहना है, उत्तर आखिर उत्तर है।"

"उत्तरी ध्रुव की तरह ही शायद वहा भीषण ठडक है, है न?"

"मैं कभी उत्तरी ध्रुव नही गयी हू, मैं क्या बताऊ," जान्ना ने हसते हुए जवाब दिया। "लेकिन चुकोत्का में कभी कभी तापमान शून्य से ६०-६२° (सेटीग्रेड) नीचे गिर जाता है।"

"हे भगवान," बूपोवाले दक्षिण से आये उसकी सहपाठी के मुख से आश्चर्यभरे शब्द निकल पड़े।

"अच्छा जब अभी मास्को में गर्मी है तो वहां का क्या हाल होगा?"

"सितम्बर यहां का शरत्काल होता है," जान्ना ने कहा—"लेकिन चुकोत्का में ऐसा नही होता। वहां ठडी हवा और वर्फ की भीषण वारिश के साथ असल जाडा शुरू हो चुका रहता है। ऐसी हालत जून तक वनी रहती है। कभी कभी तो गर्मियो में रात में भी वर्फ की वारिश हो जाती है। जाडो में नीची जमीन पर इतनी वर्फ जमा हो जाती है कि गर्मियो की छोटी-सी अवधि में वह पिघल भी नही पाती और अगले जाड़े के आने तक जमी रहती है।"

"क्या वहां वर्फीले तूफान वड़े भयानक रूप से आते है?" किसी ने पूछा।

"हां," जान्ना ने जवाव दिया —"आप सुवह उठे और पायेंगे कि आप का घर से वाहर निकलना नामुमकिन है क्योंकि वह वर्फ से पूरी तरह जकड़ा होता है। तव हम लोग छतो से वाहर निकलते हैं। हमारी सभी छतो में इस तरह के खास छेद होते हैं।"

"ओह कितना भयकर और कितना दिलचस्प है यह!"

जान्ना अपने चारो ओर थोड़ा वडप्पन के साथ देखती है। मास्को की ओर शायद उत्तर का असली निवासी कम ही आता रहा होगा।

सामान्य प्रवेशिका परीक्षा में उसने ३० में से २७ अक प्राप्त किये। (हमारा उच्चतम अक ५ है और निम्नतम २ और विश्वविद्यालय में दाखिल होने के समय ६ परीक्षाएं देनी पड़ती है।) यद्यपि जान्ना ने भौतिकशास्त्र, अग्रेजी भाषा और रचना के लिए तीन '४' प्राप्त किये थे, फिर भी उसे दाखिल कर लिया गया। ध्रुवी कर्मी की लडकी होने के नाते उसे प्रवेश-प्रतियोगिता से छूट दे दी गयी। विश्वविद्यालय के भर्त्ती सवधी नियमो के अनुसार उन व्यक्तियो को, प्रवेश-प्रतियोगिता से छूट दे दी जाती है, जिन्होंने स्कूल की पढाई समाप्त करने के वाद २ वर्षो तक उत्पादन-कार्य

किया हो, सोवियत सेना और नौसेना से वियोजित कर दिये गये हो या महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध के सैनिक रह चुके हो।

"जान्ना, तुमने मास्को तक का सफर कैसे किया ?" आर्मेनिया की ईन्ना अत्नियान ने सवाल किया।

"लगभग हर प्रकार की सवारी से," जान्ना ने जवाब दिया। "कुत्तो और बारहसिगो द्वारा खीचे जानेवाली स्लेज-गाडी से लेकर, नाव और हवाई जहाज़ तक की सवारी मैंने की।"

"यहा पहुचने में काफी दिन लग गये होगे," एस्तोनिया के ईगोर केइस ने पूछा।

"नहीं, बहुत नही, केवल एक महीने से कुछ अधिक।"

"और हमें अपने घर पहुचने में केवल दो दिन लगते है," इस बार यूरी रावायेव ने कहा, जो पहाडी जार्जिया में रहनेवाली ६००० की छोटी आबादी 'ताति' का प्रतिनिधित्व करता था।

"और मेरे घर पहुचने में केवल आध घटे," एक मास्कोवासी ने हसते हुए कहा। "लेकिन हम लोगो के बीच दूर के एक और साथी है। वे चुपचाप पीछे बैठे हुए हैं लेकिन मुझे यकीन है कि वे बहुत कुछ दिलचस्प बाते बता सकते है।"

"आ जाओ, येगोर अब तुम्हारी बारी है।"

लेकिन येगोर वसील्येव—जिसका याकूत शिकारियो की पीढी से सीधा सबध था—मितभाषी था। जो कुछ वह कह सका वह इतना ही कि उसका गांव तैगा में अम्गा नदी के किनारे बसा हुआ है जिसकी दूरी लगभग ७२०० किलोमीटर है। वह अपने बचपन के बारे में ऐसा कुछ नहीं बता सका जो सुखद रहा हो। येगोर जब पाच साल का था तभी उसके मा-बाप चल बसे। उसका पालन-पोषण एक अनाथ शिशु-गृह में हुआ जहा उसने ७ वर्षीय स्कूली शिक्षा प्राप्त की। तब उसे अम्गा

के एक वोर्डिंग स्कूल में भेज दिया गया जहा उसने माध्यमिक शिक्षा पूरी की। महत्वाकाक्षी होने के नाते येगोर ने माध्यमिक स्कूल की पढ़ाई खत्म करने के बाद याकूत्स्क जाकर मास्को विश्वविद्यालय की प्रवेशिका परीक्षा में किस्मत आजमाने का विचार किया। दूर के सघीय और स्वायत्त जनतत्रो के उम्मीदवार जो विश्वविद्यालय में भर्त्ती होना चाहते है, उन्हे यात्रा की परेशानी से बचाने के लिए उनकी परीक्षा स्थानीय वोर्ड की ओर से ले ली जाती है। इस प्रकार येगोर वसील्येव ने प्रवेशिका परीक्षा दी और वह मास्को पहुच गया जहा की हर चीज उसके लिए अजीबोगरीब थी—शहर का कोलाहल, यातायात, गगनचुवी इमारते और लोगो की अपार भीड़। मास्को में आने के पहले इस तरुण याकूतवासी ने कभी रेल-मार्ग नही देखा था।

"घंटी वज गयी!" कोई चिल्लाया और सारी की सारी भीड गतिशील हो गयी। हर कोई केन्द्रीय इमारत की ओर जाता दिखाई पड़ने लगा।

विद्यार्थियो की भीड तीन लिफ्ट-हॉलो की ओर वट गयी। एक हॉल के लिफ्ट १० वी मंज़िल पर ले जाते हैं। भूगर्भशास्त्र के विद्यार्थी उसमें घुस गये क्योकि उनका विभाग तीसरी से लेकर ७ वी मंज़िल पर है। दूसरे हॉल में लिफ्ट १६ वी मंज़िल तक ले जाते हैं। उसमें गणित एवं यंत्रशास्त्र के छात्र घुस गये क्योकि उनका विभाग १२ वी से लेकर १६ वी मज़िल पर है। भूगोल के विद्यार्थी एक्सप्रेस लिफ्टो में चले गये क्योकि उनके लेक्चर-हॉल और प्रयोगशालाए १७ वी से लेकर २२ वी मज़िल पर है। हम उनके साथ साथ चले। लिफ्ट जैसे जैसे ऊपर चढता जाता है वैसे वैसे वायें से दाहिने २,३,४,५,६ १२, १३, १६ .. अक प्रकाशित होते जाते है। २० सेकड वाद लिफ्ट हल्के-से रुक जाता है। २१ अंक दरवाज़े पर चमकने लगता है।

"२१ वी मजिल," लिफ्ट चलानेवाली महिला अनमने-से स्वर में कहती है।

"पहला व्याख्यान भूगोल के इसी बड़े हॉल में होगा," एक छात्र नये छात्रो को सूचित करता है।

वे लिफ्ट से बाहर गलियारे में निकल आते है और व्याख्यान-हॉल मे दाखिल होते है। लबे और सावले रग के एक चश्माधारी व्यक्ति के अन्दर दाखिल होते ही शोर-गुल और भनभनाहट बद हो जाती है। ये प्रोफेसर ग० तुगिन्स्की है। वे मच पर चढ कर श्रोताओ की ओर देखते हुए अपनी स्थिर आवाज में कहते है-"नमस्ते, मेरे दोस्तो। मुझे इस बात की बडी खुशी है कि सबसे पहले मुझे ही आप सबो का इस विश्वविद्यालय में स्वागत करने का अवसर मिला है। आप अपने नये छात्र-जीवन की पहली दहलीज पर खडे है और मै आप सबो की सफलता की शुभकामना करता हू।"

लगभग कोई तीन सौ जोडी आखें-नीली, काली, कजी, भूरी-प्रोफेसर की ओर घूरने लगती है। कॉपियो के पन्नो की खडखडाहट और फाउन्टेन-पेनो की धीमी सरसराहट शुरू हो जाती है। विद्यार्थी अपना पहला व्याख्यान अकित कर रहे है।

अगली पक्ति में अपनी हथेली पर ठुड्डी रखकर बैठा हुआ एक छात्र बडे ध्यान से व्याख्यान सुन रहा है। वह उक्रइन का रहनेवाला है। व्लादीस्लाव नाजारेन्को, क्रिवोरोज्ये के एक छोटे-से खानवाले शहर इगुलेत्स से आया है। वहा से उसने स्वर्ण-तमगा के साथ माध्यमिक शिक्षा पूरी की। उसके पिता खान-इजीनियर है और माता एक शिक्षिका। लेकिन व्लादीस्लाव ने भूगोलशास्त्री बनने का, एक अन्वेषक बनने का इरादा किया। उसने अपने बचपन में अन्वेषकों के बारे में और नये देशो की खोज के बारे मे रोमाचकारी पुस्तके पढी थी।

इन लड़के-लड़कियो को भूगोल-विभाग में लाने का श्रेय केवल पुस्तको को ही नही है। उनमें से वहुतेरे अपने स्कूली जीवन में अच्छे भूगोलशास्त्री, उत्साहपूर्ण प्रकृतिविज्ञ रह चुके है जिन्होने अपने इलाके के आर-पार घूम-घूमकर उसके प्राकृतिक इतिहास का अध्ययन किया है। उनमें से कइयो ने अपने स्कूलो में भूगोल-मडली और पायोनीयर-मडली का नेतृत्व भी किया है।

व्लादीस्लाव की वगल में वैठे हुए छात्र को ही लीजिये। वेलोरूस के इस व० स्नीत्को का वचपन वहुत सुख से नही वीता है। युवावस्था भी दुखद रही। १६४२ में लेनिनग्राद की रक्षा करते हुए उसके पिता मारे गये। उसकी माता को अपने तीन वच्चो के लालन-पालन में वडी कठिनाइयो का सामना करना पड़ा। उसे ४००-५०० रूवल टेलीफोन-आपरेटर के रूप में काम करने के लिए और ३०० रूवल अपने स्वर्गीय पति की पेंशन के रूप में मिलते थ। चार व्यक्तियो के निर्वाह के लिए उक्त रकम वहुत कम थी। अत. स्वाभाविक था कि उसके तीनो वच्चे सिनेमा या थियेटर देखने के अवसर से वचित रह गये। उनका, खासकर उनमें सवसे छोटे व० स्नीत्को का प्रिय मनोरंजन पुस्तकें पढ़ना था जिन्हें वे पुस्तकालय से लाते थे।

वह भूगोलशास्त्री क्यो वनना चाहता है? पुस्तकें ही उसका एकमात्र कारण नही हैं। जव वह ६ वे और १० वे वर्ग का विद्यार्थी था तो तीसरे और चौथे वर्ग के विद्यार्थियो का तरुण पायोनीयर-नेता था। भूगोल से उनकी वहुत दिलचस्पी थी और वे आर्कटिक और अन्तार्कटिक के अभियानो के वारे में अधिक से अविक जानना चाहते थे। उनके वहुत-से प्रश्नो का उत्तर देने के लिए व० स्नीत्को को तत्संववी विपयों का अध्ययन करना पड़ता था। वह उन शोवकार्यो में भी दिलचस्पी दिखाने लगा जिनका उस समय आर्कटिक में विकास हो रहा था। अनजाने ही,

वह भूगोल की ओर आकर्पित हो गया और उमे अपना पेशा वनाने का निश्चय किया। वचपन की मुसीवते और कठिनाइया अव अतीत की चीजें वन गयी है। उसका वडा भाई मोटर-चालक है, दूसरा भाई रीगा में एक रेडियो-टेकनिकल स्कूल में पढता है। व० स्नीत्को स्वय मास्को विश्वविद्यालय का छात्र वन चुका है।

"तुम लेक्चर क्यो नही नोट कर रहे हो?" व० स्नीत्को का पडोसी छात्र फुसफुसाकर पूछता है। "प्रोफेसर तो वहुत दिलचस्प वात मुना रहे है, क्या यह सव तुम्हे मालूम है?" वह युवक छात्र ज़रा शब्दो पर ज़ोर दे देकर वोलता है। उसकी नाक वडी और ज़रा मुडी हुई तथा आखें काली और चमकीली है। व० स्नीत्को की ओर अपनी कॉपी सरकाते हुए वह कहता है कि मेरे नोट को उतार लो। व० स्नीत्को जल्दी जल्दी नोट की नकल कर लेता है और महसूम करता है कि वह सचमुच वडा महत्वपूर्ण व्याख्यान था—'भूगोल मे परिचय' नामक व्याख्यान-माला की सामान्य रूप-रेखा सवधी व्याख्यान।

"धन्यवाद," व० स्नीत्को वोल उठता है। उत्तर में उमका पडोसी मुसकुरा देता है और लिखता रहता है। व० स्नीत्को की तरह वह छात्र दिवास्वप्न में नही खोता। इस छात्र का नाम म० नज़ीरोव है। वह काकेशस में एक प्रचड पहाडी नदी के किनारे वमे अर्गवानी गाव का रहनेवाला है। आवार लोग अल्पसख्यक पहाडिया जाति के लोग है जो दागिस्तान के सोवियत समाजवादी स्वायत्त जनतत्र के अन्तर्गत् है। १९२३ तक वे निरक्षर थे और वाहरी दुनिया से उनका तनिक भी सरोकार नही था। क्रान्ति के ५ वर्ष वाद सोवियत मत्ता इन पहाडी हिस्सो तक पहुची। उसके वाद तुरत ही स्कूल, अस्पताल, भेड़-पालन कोलखोज़ पनप उठे। १९३८ से आवार लोगो ने रूमी वर्णमाला के आधार पर अपनी निजी लिखित भापा की रचना की। आज उनका

सारा युवा-समुदाय शिक्षा प्राप्त कर रहा है। नज़ीरोव अब विश्वविद्यालय का छात्र है।

"आपको मालूम है," प्रोफ़ेसर कह उठते हैं—"हमारे कुछ नौजवान ऐसे विचार प्रगट करते हैं जिन्हें सुनकर मुझे आश्चर्य होता है और साथ साथ क्लेश भी। उनका कहना है कि वे बहुत विलंब से पैदा हुए है, ऐसे समय में जबकि बड़े बड़े साहसों और पराक्रमों के दिन बीत चुके और अब भू-मंडल पर कोई भी 'श्वेत-स्थल' नही बचा है। लेकिन यह पूर्णत सत्य नही। अभी भी हमारे विज्ञान-ससार मे बहुत-से 'श्वेत-स्थल' है और वे आपकी प्रतीक्षा कर रहे है। किसी भी विज्ञान की स्वतन्त्रता की मुख्य कसौटी, अनुसंधान सबधी उसके अपने विशिष्ट क्षेत्र का विद्यमान रहना है। भूगोल का वह विशिष्ट अनुसधान-क्षेत्र क्या है? अनगिनत काल से भूगोलशास्त्री हमारी पृथ्वी की सतह का अध्ययन करते आ रहे है जो विस्तृत भू-भागो में बटी हुई है। लेकिन बड़ी प्रादेशिक इकाइयों के अध्ययन के साथ साथ और भी अधिक अध्ययन की ज़रूरत है। किसी प्रदेश का आर्थिक विकास यह अपेक्षा करता है कि हम उसका इंच इंच खोज डाले। हमारा कार्य उन प्रक्रियाओ के मूल तक पहुचना है जो भू-भागो के वर्तमान अस्तित्व की निर्णायक है। वाञ्छित फल प्राप्त करने के लिए भूगोलशास्त्री को यह जानना आवश्यक है कि प्रकृति के किस विशिष्ट पहलू को उसे प्रभावित करना है। हमारे भूगोलशास्त्रियों के सामने बड़ा कर्त्तव्य है पृथ्वी का सविवरण नक़्शा तैयार करना जिसकी कमी हम अब तक महसूस करते आ रहे हैं। (इस दृष्टिकोण से हम कह सकते हैं कि अभी भी बहुत-से 'श्वेत-स्थल' है।)

"उसके बाद ऐसी बहुत-सी विकट समस्याए हैं जिन्होंने ससार के भूगोलशास्त्रियों को परेशान कर रखा है। कौन जानता है आप सबों में से ही कोई महाद्वीपो के उद्गम सम्बन्धी दिलचस्प समस्या के

संयुक्त राज्य अमेरिका के आई० कोलथोफ्फ के भाषण में उपस्थित रसायनशास्त्र के विद्यार्थी
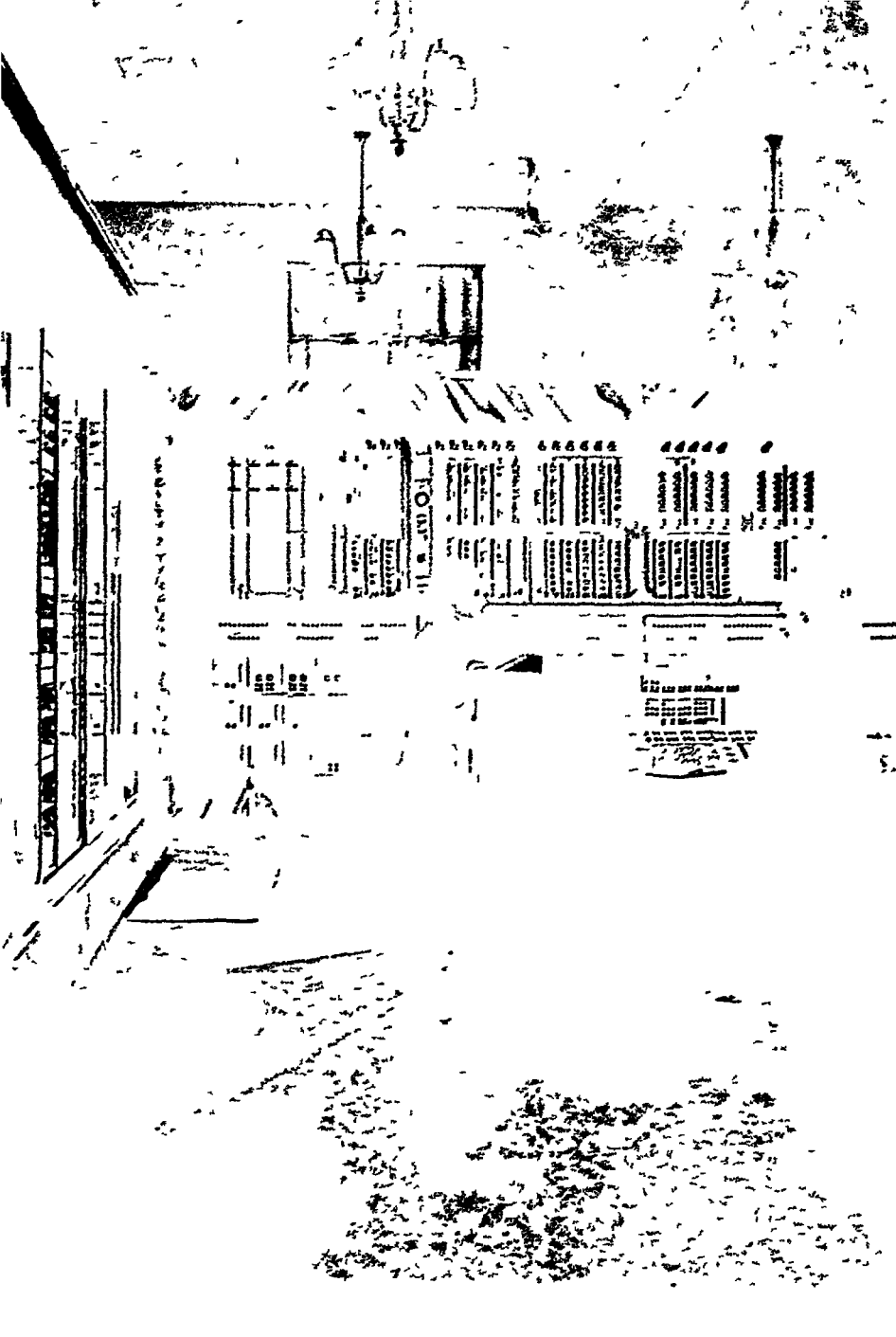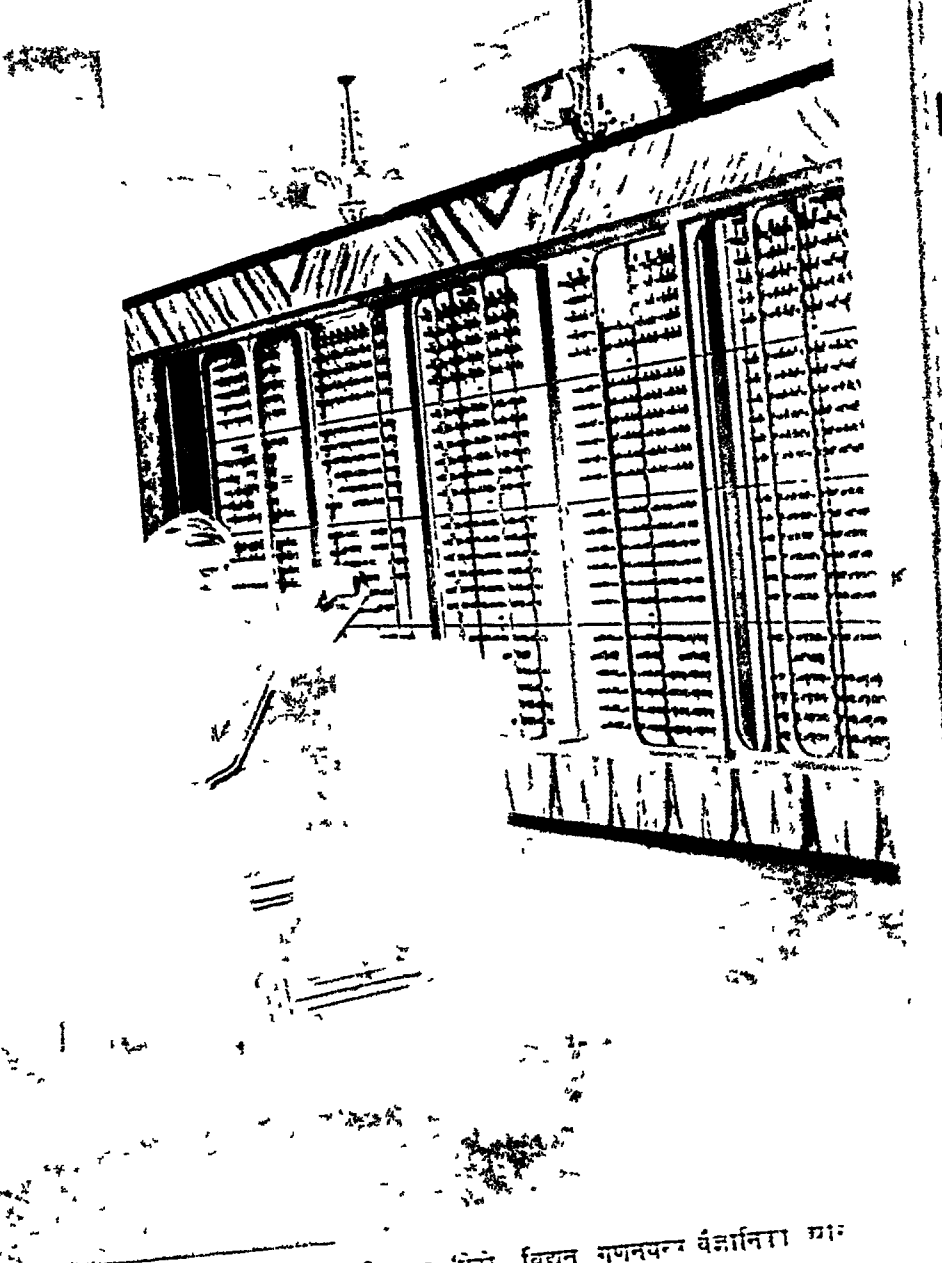
उच्च गति का 'ऐसा विद्युत् गणनयन्त्र वैज्ञानिकों और
विद्यार्थियों को हमेशा सुलभ रहता है

वाचनालय

समाधान में मदद कर बैठे। आज तक हम महाद्वीपो के चलन और पहाड़ो
के उद्गम सम्बन्धी एक ही अनुमान लगा सके हैं। इस अनुमान को
लगानेवाला जर्मन भूभौतिकीविज्ञ अलफ्रेड वेगेनेर था। उसका कथन क्या
है?" प्रोफेसर ने अपने चश्मे के रिम के ऊपर से हॉल में चारो तरफ
देखा। छात्र ध्यानमग्न सुन रहे थे।

"हां, तो इस प्रख्यात विद्वान का कहना है कि पृथ्वी पर के ये
महाद्वीप, ग्रानाइट की हलकी परत हैं जो हिमखडो की तरह हमारे ग्रह
के भारी बासाल्ट आवरण के ऊपर तैरते रहते हैं। वस्तुत यह बड़ा ही
साहसपूर्ण और दिलचस्प अनुमान है, लेकिन आपको सुनकर निराशा
होगी कि आधारभूत भूगर्भीय तथ्य इस अनुमान का खडन करते हैं। इस
अनुमान से यह नही साबित होता कि गतिशील महाद्वीपो के बाहरी
किनारों में परतदार सिकुड़ने क्यो पड जाती हैं। यदि बासाल्ट आवरण,
ग्रानाइट महाद्वीपो की अपेक्षा अधिक कोमल और लचीला होता तो इस
आवरण में परतदार सिकुड़ने पड़नी चाहिये थी, और इसके ठीक विपरीत
यदि यह महाद्वीपो की अपेक्षा अधिक ठोस रहता तो महाद्वीपो को गतिहीन
होना चाहिए था... अत, मेरे नौजवान दोस्तो, इस प्रश्न का
उत्तर अब तक नही मिल सका है। यह एक और 'श्वेत-स्थल' है
जो आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

"आपका दावा है कि नक्शे पर कहीं 'श्वेत-स्थल' हैं ही नहीं।
मान लीजिये यह ठीक है तो 'नील-स्थलो' के बारे में आप क्या
सोचते हैं . आप सबो ने शायद उस विचित्र देश अतलान्तिडा के बारे
में पढा या सुना होगा जो अपने वैभवकाल में ही महासमुद्र के
अतल गर्भ में समा गया। यह भी शायद आपको मालूम हो कि
बहुत-से समकालीन विद्वान अतलान्तिडा को प्राचीन इतिहासकारो का
शुद्ध आविष्कार नही मानते। मेरे दोस्तो, संभव है कि उस देश के
अवशेष आप अभी भी अतलान्तिक के तल में पा सकें. "

विद्यार्थियो में से १२ ऐसे थे जो मुश्किल से एक शब्द भी समझ पाये हो कि प्रोफेसर क्या कह रहे थे; वे केवल मुस्कराते रहे। वे चीनी छात्र थे।

घटी बजी। "हम लोग क्षणिक विराम के बाद फिर मिलेगे," इन शब्दो के साथ प्रोफेसर मंच से उतरकर गलियारे की ओर बढ़े। कतिपय छात्र कुछ प्रश्नो का समाधान करने के लिए उनके पीछे पीछे दौड़े। व्याख्यान-हॉल की नीरवता फिर शोर-गुल और भनभनाहट में डूब गई। व्याख्यान के समय गंभीर बने रहनवाले छात्र फिर शोर-गुल मचानेवाले स्कूली छात्र बन गये। चीनी छात्रो को उनके नये दोस्तो ने घेर लिया। चारों तरफ से सवालो की बौछार होने लगी—

"आपका नाम क्या है?"

"आपकी उम्र कितनी है?"

"आपने सोवियत सघ तक की यात्रा कैसे की?"

"आप कब आये?"

"आप क्या होना चाहते हैं।"

इन सभी प्रश्नो का उत्तर, यदि उसे उत्तर कहा जाय, तो एक जैसा ही था—

"मै .. हम लोग ... अभी रूसी ठीक से नही जानता," चीनी लड़के और लड़कियां हकलाते हुए बोली। "हम लोग पेकिंग के यहां से पहुचे हैं या पेकिग से, क्या कहें?"

"चिन्ता न करे, हम लोग भाषा सीखने में आपकी मदद करेंगे," हर किसी ने आश्वासन दिया।

"हां, हां, हम समझते है ... हमें सिखायें ... बहुत अच्छा .." चीनियों ने खुश होकर कहा।

भिन्न भिन्न विभागो में दाखिल हुए सोवियत और विदेशी छात्र आपस में घनिष्ट मित्र शुरू से ही वन वैठे। रसायन विभाग में दाखिल होनेवाले नये छात्रो में जर्मन जनवादी जनतन्त्र के माटर और रेईनहार्ड्ट तथा इटली के जोवान्नी चर्वेट्टी है। उनके अन्य इटालियन साथी—ब्रुनो वर्टोलाज्जो, जान-कार्लो वनेल्ली, एलीज़ा फ्राचेस्कीनि तथा वुलगारिया की मारिआ रुजेवा, वियेतनामी त्रान कुआग न्गाय और चीनी लडकी लि-त्सीन-हो जीवशास्त्र एव मृदा विज्ञान विभाग के विद्यार्थी है। इटालियन वर्नार्डिनी और चेलात्ती, अलवानियन जन्नेत कोतमिलो, वुलगारियन कल्चेव, पोल जानुश कचमारेक, रुमानियन कसटान्टिन कोस्टोनू तथा वहुत-से अन्य, भूगर्भशास्त्र विभाग के नये छात्र है। भौतिकशास्त्र के प्रथम वर्प मे स्लोवाक विक्टर गोस्सा, कोरियन सो सान गुक, चेक लिवुशे रेयेन्तोवा का नाम लिया जा सकता है।

खासकर विदेशी छात्रो के लिए रूसी भापा के दो उपविभाग सृजित किये गये है—एक प्राकृतिक विज्ञान विभाग में और दूसरा मानव-विज्ञान विभाग में, जहा छात्र अपने सामान्य पाठ्य-चर्या के अलावा सप्ताह में ८ घटे रूसी भापा का अध्ययन करते है। उनके सोवियत सहपाठी भी उनकी मदद करते है। गणित एव यन्त्रशास्त्र विभाग के वोल्फगैंग श्मिड्ट के शब्दो मे—"जव मै जर्मनी से मास्को पहुचा तो मैंने अपने को ससार भर के विद्यार्थियो के वीच पाया। लेकिन भापा की समस्या के कारण एक दूसरे को समझने में कठिनाई नही हुई। किसी न किसी तरह से मुझे हर कोई मदद करने को उत्सुक था . अपने जीवन में मैंने पहले-पहल महसूस किया कि सच्ची दोस्ती का क्या अर्थ होता है. आज इस दोस्ती ने मुझे सोवियत सघ, पोलैंड, हगरी,

रूमानिया, चीन, कोरिया, फ्रास, इटली और अन्य कई देशों के लड़के-लडकियो के साथ बांध रखा है ..”

विश्वविद्यालय का जीवन स्कूली जीवन से भिन्न होता है। आपको गृह-पाठ तैयार नही करना पड़ता, आपको ब्लैकबोर्ड के पास नही बुलाया जाता। यहां विश्वविद्यालय में कल के स्कूली छात्र को उसकी मर्जी पर छोड़ दिया जाता है। यहां वह व्याख्यान सुनता है और जो कुछ महत्त्वपूर्ण और आवश्यक समझता है उसे लिख लेता है। यह भी सत्य है कि शुरू शुरू में यह जानना उतना आसान नही कि आवश्यक और महत्त्वपूर्ण क्या है। नये छात्रों के लिए विश्वविद्यालय-जीवन की हर चीज़—वातावरण, अध्ययन के अपरिचित स्वरूप, जैसे, व्याख्यान, व्यावहारिक कार्य, विमर्श-गोष्ठियां—असाधारण और नयी होती है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि प्रथम वर्ष से ही सभी विभागों में विशिष्ट विषय रखे जाते है जो नये छात्रो के लिए बिलकुल नये होते हैं जिसके फलस्वरूप उन्हे कुछ कम परेशानियां नही होती। यह कोई असाधारण बात नही कि उनके अध्ययन के कुछ आरभिक सप्ताह आत्मविश्वास की कमी, चिन्ता और विस्मय से परिपूर्ण रहते है।

लेकिन उन्हे मदद करने के लिए उनके पुराने साथी—शिक्षक और छात्र—हमेशा तैयार रहते हैं। विभागीय सम्मेलनो में पुराने छात्र, स्नातकोत्तर छात्र और अनुभवी प्राध्यापक नये छात्रो को बताते है कि उन्हे अपना दिन कैसे बिताना चाहिए, व्याख्यान कैसे अकित करना चाहिए तथा अपना अध्ययन कैसे करना चाहिए।

“नये छात्रो! आपसे मिलकर हम लोगो को बहुत खुशी होगी। क्या लेनिन पहाड़ी पर हमसे मिलने की कृपा करेंगे? अवर-स्नातक।”

पत्रकारिता विभाग में यह नोटिस पचम वर्ष के छात्रों ने विद्या-वर्ष शुरू होने के शीघ्र ही बाद लगा रखी थी। उक्त विभाग के छात्रो

ने निमत्रण तुरत स्वीकार कर लिया। नियत दिन को लडको और लडकियो की एक ज़िन्दादिल टोली शाखा "ए" की ८वी मज़िल पर पहुचने के लिए लिफ्ट में सवार होती नजर आयी। इन ८वी मज़िल पर पचम वर्ष के छात्रो के कमरे है।

"हम लोगो ने शीघ्र ही अपने को एक सौहार्द और मैत्रीपूर्ण वातावरण में पाया," दिमीत्री रवीन्स्की ने कहना शुरू किया। "कुछ भी औपचारिक या नीरस नही जान पडा। सगीत चल रहा था। दीवाल-पत्र का एक विशेष अक दीवाल पर लगा था जिसपर निम्न वाक्य अकित था—'नये छात्रो का उद्देश्य स्नातक वनना है, यह उनके लिए शोभनीय है।"

हमारी टोली की लड़कियो में तो एक आह्लादपूर्ण विस्मय का भाव था। पुराने साथियो ने हर लडकी को उपहार में फूल दिये। उन्होने उनके वालो में सफेद फूल खोंस दिये और वे तसवीर की तरह खूवसूरत दिखाई पड़ने लगी।

वाद में सारा का सारा दल वैठके में पहुचा। वहा सीनियर छात्रो ने स्वतन्त्र अध्ययन के सबसे अच्छे तरीके वतलाये, विभाग की परम्पराओ से नये छात्रो को अवगत कराया और अखवारो एव पत्र-पत्रिकाओ सम्वन्धी अपने व्यावहारिक कार्य के वारे में उन्हे जानकारी दी।

उसके वाद मेहमानो तथा मेजवानो ने कमरो का फेरा लगाया। हसी, मज़ाक, गाना और सरस वातचीत से भरपूर वह वडा मजेदार दिन था ...

नये छात्रो के आगमन के शीघ्र वाद ही उन्हे विभाग के सामाजिक कार्य-कलापो से परिचित कराया जाता है। हर दल के छात्र (छात्रो का दल १० से ३० की सख्या में वाट दिया जाता है) अपना

कोम्सोमोल संगठक, ट्रेड-यूनियन संगठक और मानिटर निर्वाचित करते हैं। प्रत्येक कोम्सोमोल सदस्य (९० प्रतिशत से अधिक विश्वविद्यालय के छात्र कोम्सोमोल सदस्य होते हैं) को कोई न कोई उत्तरदायित्व सौंपा जाता है। जिस दल में तीन से अधिक कम्यूनिस्ट होते है वहा एक पार्टी-दल बनाया जाता है और एक दल-सगठक निर्वाचित किया जाता है।

नये छात्र बहुत-से दिलचस्प कार्य-कलापो के सुझाव पेश करते है। भाषा विज्ञान विभाग में एक दल की कोम्सोमोल बैठक को ही ले लीजिये जहां महीने के कार्य की योजना पर बहस हो रही थी।

"क्यो न हम लोग एक मनोरंजन कार्यक्रम करे?"

"शौकिया कला-कंसर्ट के लिए अच्छी तरह तैयार हो जाना चाहिए।"

"विभिन्न कला-प्रदर्शनियो को देखने का विचार भी तो बुरा नही रहेगा।"

"क्यो न इडुआर्डो-डे-फिलीप्पो का 'मेरा परिवार' देखा जाय। सभी कहते है कि यह बडा सुन्दर खेल है।"

"मेरा ख्याल है कि रविवार को शहर में घूमने चला जाय।"

"नयी इमारतो को देखने का विचार कैसा रहेगा? लेनिन पहाडी पर बनी नयी इमारतो को अब तक हमने नही देखा है। यही उपयुक्त समय है, हमें कुछ निश्चय करना चाहिए।"

प्रस्ताव बहुत है और काफी दिलचस्प भी। स्वाभाविक है कि सभी प्रस्ताव एक साथ ही कार्यान्वित नही किये जा सकते।

धीरे धीरे नये छात्र अपने नये वातावरण के आदी हो जाते हैं।

व्याख्यान समझना और उन्हे लिख डालना, विचार-गोष्ठियो में वाद-विवाद में भाग लेना, प्रयोगशालाओ में व्यावहारिक-कार्य करना, किसी विचार-गोष्ठी के लिए प्रथम स्वतन्त्र रिपोर्ट तैयार करने के निमित्त पुस्तकालय मे घटो बैठना उतना कठिन नही जान पडता।

प्रथम परीक्षा का समय नज़दीक आता जा रहा है। दिसम्बर। बाहर ठढक है और भीतर गरमी। पुस्तको का ढेर लिये विद्यार्थी गलियारे से गुज़रते नज़र आ रहे है। पुस्तकालय के वाचनालयो में एक भी खाली मेज़ नही है।

प्रोफेसर, अनुदेशक, शिक्षक—मतलब कि सारा का सारा विभाग ही—विद्यार्थियो को इस बात में सहायता देने को तैयार है कि परीक्षा की अच्छी से अच्छी तैयारी कैसे की जाय। भूगोल विभाग में परीक्षा के समय दिसम्बर-जनवरी में वे कमरे ६ बजे सुबह से ११ बजे रात तक खुले रहते है जिनमें विद्यार्थियो के लिए नक्शे, निर्देश-पुस्तके आदि उपलब्ध रहती है। भूमिति और मानचित्रण के उपविभागो की प्रयोगशालाओ में विद्यार्थी आवश्यक यत्रो—थियोडोलाइट, लेवेल और गणना-यत्र—का उपयोग कर सकते है। जैसा कि अन्य उपविभागो की प्रयोगशालाओ में होता है, यहा भी एक विभागीय सदस्य आवश्यक परामर्श देने के लिए ड्यूटी पर तैनात रहता है। पूरी अवधि की पढ़ाई का साराश व्याख्यान के रूप में पढा जाता है, और प्रयोगशालाओ में व्यावहारिक प्रयोग अन्तिम रूप से किये जाते है।

नये छात्रो को उनके प्रथम अर्द्धवार्षिकी सेशन में ६-८ विषयो की परीक्षा देनी पड़ती है। उनकी पहली विश्वविद्यालय परीक्षा! आप उनकी घबड़ाहट का अन्दाज़ अच्छी तरह लगा सकते है। इस घबड़ाहट के कारण

वे विभिन्न प्रोफेसरो के बारे में सब तरह की बाते करते है। अमुक प्रोफसर किस तरह से प्रश्न करेगा और कौन से प्रश्न उसे बहुत प्रिय है; किस आवाज़ में हमें बोलना चाहिए—ज़ोर से या धीरे से, जल्दी जल्दी या रुक-रुककर। इस प्रकार कुछ प्रोफेसरो की इन्सानियत और सौजन्य के बारे में, कुछ की 'रक्तलोलुपता', 'निर्दयता' और 'दोपान्वेषण' के बारे में तरह तरह की कथाए सुनने को मिलेगी। परीक्षा के समय बहुत-से नये छात्र प्रोफेसर को एक ऐसा भयानक जीव समझते है जो हतभाग्य शिकार को निगल जाना चाहता हो।

परीक्षा का दिन। भय से सिहरते हुए छात्र अन्तत कमरे में दाखिल होता है जहा 'भयानक जीव' उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। उसके दिमाग में विचारो की उलझन है और उसे विश्वास है कि वह उन्हें सुलझा नही पायेगा। उसकी जीभ तालू से सट जाती है और जो कुछ उसे कहना है वह कह नही पाता। प्रोफेसर विद्यार्थी की ओर देखते है और अपना दढियल मुख खोलते है ... नही, नही, विद्यार्थी को निगलने के लिए नही, बल्कि ठठाकर हंसने के लिए।

"मेरे प्यारे दोस्त ... हा-हा-हा .. किस बात से इतना भयभीत हो? हा-हा-हा ... जिन प्रश्नो का तुम्हे उत्तर देना है उन्हे ज़रा मुझे देखने दो... क्यो यह तो क-ख-ग की तरह आसान है... अब तुम जाओ और वहां उस मेज़ के पास बैठो और जब तुम संयत हो जाओ तो वापस आओ और प्रश्नो का उत्तर दो। ठीक है न? जल्दबाज़ी करने की ज़रूरत नही .. "

"अच्छी बात है," छात्र मिमियाता है और उसे हास्यास्पद स्थिति का आभास होता है और निर्दिष्ट मेज़ के पास जा बैठा है। धीरे धीरे

यह छात्रा एक गभीर प्रयोग मे व्यस्त है

कौन जाने ? संभव है यह स्नातकोत्तर छात्र चन्द्रलोक की यात्रा करने के सपने देख रहा हो!
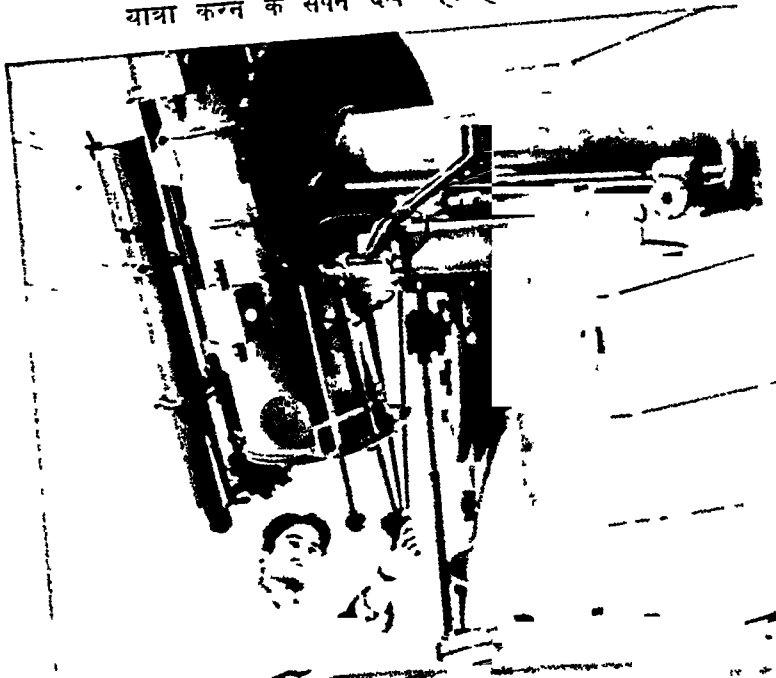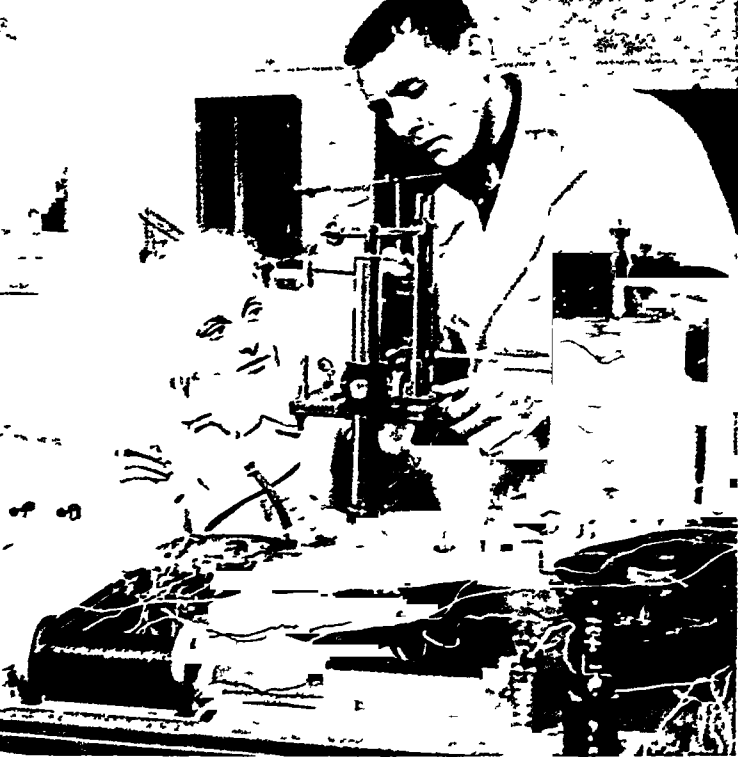
प्राणिशास्त्रियों को भी अक्सर जटिल यन्त्रो का उपयोग करना पड़ता है

अकादमीशियन ल० सेदोव भौतिकशास्त्र विभाग के स्नातकोत्तर छात्रों को परामर्श देते हुए

उसकी घबडाहट दूर हो जाती है, उसका मस्तिष्क स्पष्ट हो उठता है। वह हैरान रह जाता है कि इतने आसान सवाल का जवाब वह क्यो नही दे सकता।

इस प्रकार प्रथम अर्द्धवार्पिकी परीक्षा के दिन—औत्सुक्य, चिन्ता और रतजगा के दिन—खत्म होते है। लेकिन एक बार सफलता मिलने पर—और साधारणत: ९० प्रतिशत विद्यार्थियो को सफलता मिलती ही है—छात्र को विश्वास हो जाता है कि वह किसी भी कठिन परीक्षा से निकल सकता है, अर्थात् वह अब मास्को विश्वविद्यालय का पक्का विद्यार्थी बन चुका है।

व्याख्यान कक्षो, कक्षाओ और प्रयोगशालाओ में

जैसा कि हमारे अन्य उच्च शैक्षणिक सस्थाओ में होता है, मास्को विश्वविद्यालय में भी विद्या-वर्ष को दो अवधियो में बाट दिया जाता है। पहली अवधि सितम्बर से शुरू होती है और दिसम्बर-जनवरी में जाड़े की परीक्षा के साथ खत्म होती है। तब आती है फरवरी में १० दिवसीय विश्राम की अवधि। दूसरी अवधि भी परीक्षाओ के साथ समाप्त होती है। ये परीक्षाए मई के आखिर में और जून में होती है। इनका समय अलग अलग विभागो पर निर्भर करता है। यदि छात्र को व्यावहारिक कार्य के लिए या अभियान के लिए प्रस्थान करना है तो वह पहले ही परीक्षा दे सकता है।

पाठ्य-क्रमो के अनुसार विश्वविद्यालय के व्याख्यान कक्षों, कक्षाओ और प्रयोगशालाओ में अध्ययन के विभिन्न स्वरूपो—व्याख्यानो, विचार-गोष्ठियो और व्यावहारिक कार्यों—का प्रबन्ध है।

विश्वविद्यालय में दिये जानेवाले व्याख्यानो के स्वरूप में अत्यधिक विभिन्नता है। फिर भी उन्हे दो प्रमुख प्रकारो में बाटा जा सकता है। कुछ प्रोफेसरों का कथन है कि अध्ययन की सामान्य शृंखला में व्याख्यान मुख्य कड़ी है, और इसके मुख्य भाव और विषय को, शिक्षा के अन्य स्वरूपो का, जिन्हे वे इससे गौण समझते है, आधार बनाया जाना चाहिए। उनका विचार है कि व्याख्यान से सक्रिय और स्वतन्त्र अध्ययन की प्रेरणा मिलती है।

कुछ और प्रोफेसरो का दावा है कि व्याख्यान, व्यावहारिक कार्य के परिणामो का सार है और प्रयोगशालाओ मे की गयी जाचो से प्राप्त आकड़ो का साधारणीकरण है। उनका कहना है कि छात्रो को पहले से ही तैयार होकर व्याख्यान-कक्ष में आना चाहिए क्योकि उनकी राय में शिक्षा का यह केवल सहायक स्वरूप है।

शताब्दियो पुराने इस विवाद को सुलझाने का भार हम अपने ऊपर नही लेगे। हमें यही जान लेना जरूरी है कि इन दो विभिन्न मतो के पोषक, अपनी जगह से तिल भर भी हिले-डुले बिना, विश्वविद्यालय में मैत्रीपूर्ण ढग से साथ साथ कार्य कर रहे हैं।

जैसा कि हमारे अन्य उच्च शैक्षणिक संस्थाओ में होता है, विश्वविद्यालय के पाठ्य-क्रम में उपबन्धित सभी व्याख्यान अनिवार्य हैं। यदि कोई छात्र किसी व्याख्यान में उपस्थित नहीं हो पाता तो उसे अपने दल के मानिटर को उसका कारण सूचित करना पड़ता है। यदि कारण सन्तोषजनक नही साबित हुआ तो उसे कैफियत देने के लिए हाज़िर होना पड़ता है। जो छात्र लगातार व्याख्यान से गैरहाज़िर रहते है उन्हे परीक्षा में बैठने से वचित कर दिया जाता है या यहां तक कि निकाल भी दिया जाता है। अनिवार्य व्याख्यानो के अतिरिक्त तथाकथित वैकल्पिक व्याख्यान भी होते है। इनका सम्बन्ध कुछ विशेष

विषयों से होता है जिन्हें छात्र अपने रुझान के अनुसार स्वेच्छा से चुन सकते हैं। छात्रों के लिए वैकल्पिक व्याख्यानों और विचार-गोष्ठियों में उपस्थिति अनिवार्य नहीं।

व्याख्यानों में अनिवार्य उपस्थिति हमारे विश्वविद्यालय की खास विशेषता है। विदेश के बहुत-से विश्वविद्यालय इस नियम का अनुसरण नहीं करते। मैं यह बता दूं कि इस विषय को लेकर हाल में हमारे विश्वविद्यालय में, संयोग से अन्य कई विश्वविद्यालयों में भी, काफी गरमागरम वाद-विवाद हुए हैं। यह कहना बेकार है कि दोनों मतों के कट्टर समर्थक भी हैं और घोर विरोधी भी। विद्यार्थियों की लगभग हरेक बैठक या विभागीय सदस्यों के हरेक सम्मेलन में आगे या पीछे इस विषय को छेड़ा गया है। विश्वविद्यालय के विभिन्न दीवाल-पत्रों में भी इस प्रश्न की चर्चा की गयी है। (प्रत्येक विभाग का अपना निजी दीवाल-पत्र है। उदाहरणार्थ, भाषा विज्ञान विभाग को 'कोस्मोमोलिया', भूगोल विभाग को 'हमारा क्षितिज' भूगर्भशास्त्र विभाग को 'मोनोलिथ' नामक अपने निजी दीवाल-पत्र हैं। लगभग हर कक्षा का अपना अपना दीवाल-पत्र है। विश्वविद्यालय का छात्र-समुदाय कुल मिलाकर ६० दीवाल-पत्र निकालता है)।

दोनों दृष्टिकोणों का संक्षिप्त विवरण निम्न है।

व्याख्यान में वैकल्पिक उपस्थिति का प्रश्न भूगर्भशास्त्र विभाग के याकोव युदोविच और इरीना ओवोलेन्स्केवा नामक विद्यार्थियों ने उठाया था। उन्होंने अपने दीवाल-पत्र में लिखा था कि "वैकल्पिक व्याख्यानों का आरंभ किया जाना अत्यन्त आवश्यक है"। उनका विश्वास था कि ऐसा हो जाने पर व्याख्यानों का स्तर ऊंचा उठ जायेगा क्योंकि प्रत्यक्ष है कि छात्र निकृष्ट व्याख्यानों में उपस्थित नहीं होंगे। दूसरी बात यह कि पिछड़े छात्र नहीं होंगे क्योंकि [illegible]

3*

अवधि में जिन छात्रो ने स्वतन्त्र रूप से काम करना कठिन पाया होगा, वे शीघ्र ही इसे महसूस करेंगे और स्वेच्छा से उसे छोड़ देंगे। जो छात्र पीछे पड़े रहेंगे वे निकाल दिये जायेंगे। तीसरी बात यह कि जिनका झुकाव सचमुच विज्ञान की ओर है, उन्हे स्वतन्त्र काम करने के लिए अधिक समय मिलेगा। कतिपय प्रोफ़ेसरो ने भी वैकल्पिक व्याख्यान का समर्थन किया।

इस दृष्टिकोण के विरोधियो के तर्क भी कुछ कम महत्त्वपूर्ण नही। उनका कथन है कि यदि व्याख्यान में उपस्थिति, छात्रो की मर्ज़ी पर छोड़ दी जायेगी तो इस शिक्षा का कोर्स, निश्चय ही ५ वर्ष की नियत अवधि से बढ़कर १० वर्ष या उससे भी अधिक हो जायेगा। जिन देशो में यह प्रणाली लागू है उन्हे देखने से यह स्पष्ट है कि नियत अवधि में केवल ५० प्रतिशत छात्र ही स्नातक हो पाते है। सोवियत संघ में इसके कारण विशेषज्ञो का सुयोजित प्रशिक्षण कठिन हो जायेगा और हर साल स्नातक बननेवाले ऐसे विशेषज्ञो की सख्या काफी घटती जायेगी। हमारा देश पांच वर्ष के बदले १० साल तक किसी छात्र के प्रशिक्षण का अनावश्यक खर्च नही सभाल सकता। खासकर जबकि द्रुतगति से फैलती हुई राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था को, सभी शाखाओ में निरन्तर बढ़ती हुई संख्या में विशेषज्ञो की अत्यन्त आवश्यकता है।

वैकल्पिक व्याख्यान के हिमायतियो के मत का खंडन करते हुए उच्चशिक्षा के उपमत्री म० अ० प्रोकोफ़्येव ने विश्वविद्यालय के प्राध्यापको की एक आम सभा में कहा था—

"इस सम्बन्ध में केवल विद्यार्थियो को ही क्यों कहने दिया जाय? निस्सन्देह, हम कुछ कम योग्य और अनुभवी नही। हमें अवश्य ही विद्यार्थियो की उन बातो की ओर ध्यान देना है जिनका सम्बन्ध

पाठ्य-क्रम की त्रुटियो ने है। वैकल्पिक व्याख्यान का सहारा लिये बिना ही शिक्षा का स्तर ऊचा उठाने में इससे मदद मिलेगी।"

उच्चशिक्षा के मत्रालय में दोनो दृष्टिकोणो पर विचार किया गया। जो भी हो, मास्को विश्वविद्यालय में इस प्रश्न का समाधान यू किया गया है वैकल्पिक व्याख्यानो की गुजाइश है पर सामान्य नियम के रूप में नही। दूसरे शब्दो में, तृतीय वर्ष मे ऐसे सभी छात्र, इन व्याख्यानो को छोड सकते है जिन्होंने पूर्ववर्ती अवधियो मे उच्च अक प्राप्त किये हो और जिन्हे 'वैयक्तिक योजना' के अनुसार अध्ययन करने की अनुमति प्राप्त हो। जो छात्र 'वैयक्तिक योजना' के अनुसार अध्ययन करने की अनुमति प्राप्त करना चाहता हो, उसे अतिरिक्त साहित्य का अध्ययन करने के लिए तथा दूसरो की अपेक्षा पहले ही यह निर्णय करने के लिए बाध्य होना पड़ता है कि उसके निबंध या स्नातक-थीसिस का विषय क्या होगा। उसे कुछ बुनियादी विषयो पर आधारित एक समानान्तर पाठ्य-क्रम चुनने की भी अनुमति दी जाती है।

अब हम इस विश्वविद्यालय में अध्ययन के विभिन्न स्वरूपो पर फिर से गौर करे। मै व्यावहारिक कार्य और प्रयोगशाला-कार्य से आरभ करूगा। वस्तुत वे एक ही चीज़ है, व्यावहारिक कार्य साधारणत मानव-विज्ञान विभागो में और प्रयोगशाला-कार्य प्राकृतिक विज्ञान विभागो मे सपन्न होते है। एक निश्चित सैद्धान्तिक कोर्स के साथ साथ सामान्यत व्यावहारिक कार्य होते हैं जिनका मुख्य उद्देश्य होता है व्याख्यान मे प्रतिपादित थीसिस का सोदाहरण व्याख्या करना, जाच और व्यवहार द्वारा उन्हे साबित करना। प्रयोगशाला-कार्यों और व्यावहारिक कार्यों का दूसरा एव महत्वपूर्ण प्रयोजन है विद्यार्थियो में पहले दिन से ही स्वतन्त्र-कार्य की आदत डालना

और उनके भावी कार्य के मूलतत्वो से परिचित कराना। पूरी अवधि भर व्याख्यानो के साथ साथ व्यावहारिक कार्य भी चलते रहते है।

व्यावहारिक कार्यों तथा प्रयोगशाला-कार्यों के अलावा विश्वविद्यालय के विभिन्न प्रयोगशाला-केन्द्रो में तथा उत्पादन एव शोध-सस्थानो में व्यावहारिक कार्य किये जाते है। ये कार्य अध्ययन की अवधि में नही बल्कि प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्षो के आखिर में सपादित किये जाते है। जब विद्यार्थी एक वर्ष से उत्तीर्ण होकर दूसरे वर्ष में जाता है तो वह अपने खास पेशे का आवश्यक व्यावहारिक ज्ञान हासिल कर लेता है। इस प्रकार भूगोलशास्त्री, भूगर्भशास्त्री और प्राणिशास्त्री अपना व्यावहारिक कार्य क्षेत्रो में करते है, अर्थशास्त्री–कारखानो और सामूहिक फार्मो में, विधिशास्त्र विभाग के विद्यार्थी–वकीलो के साथ या इजलास में, और पत्रकार–किसी अखबार के सम्पादकीय कार्यालय में या किसी प्रकाशन गृह में व्यावहारिक कार्य करते हैं।

व्यावहारिक शिक्षा के बारे में कुछ विशेष बाते। उदाहरण के लिए, भूगर्भशास्त्र विभाग में प्रथम वर्ष में बुनियादी विषय होता है–भूगर्भशास्त्र के मूलतत्व। इस महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक कोर्स के साथ साथ व्यावहारिक शिक्षा भी दी जाती है। विद्यार्थी, विभाग के संग्रहालय में विभिन्न खनिज पदार्थो का, पत्थरो की अवस्थाओ का अध्ययन करते है, भूगर्भशास्त्र सम्बन्धी क्षेत्रीय कार्य के मुख्य तरीको से अपने को परिचित करते है और भूगर्भीय नक्शो को बनाना सीखते है। विभाग की इमारत में ही व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है जहां खनिज-पदार्थो का समृद्ध सकलन भरा पड़ा है। उक्त शिक्षा, विश्वविद्यालय के भूगर्भीय अजायबघर में भी दी जाती है जो सोवियत सघ के

प्राकृतिक स्रोतो के नमूनो के उत्कृष्ट सग्रह के कारण देश भर में अपनी सानी नही रखता।

विभाग की बहुत पुरानी परपरा के अनुसार नये छात्र, तृतीय वर्ष के छात्रो के साथ शरद् ऋतु में रविवारो को मास्को के आस-पास ऐसे विभिन्न देहाती इलाको में जाते है जो भूगर्भीय अध्ययन के दृष्टिकोण से दिलचस्प और उपयुक्त होते है। ऐसे भ्रमणो के बाद सग्रह की गयी सामग्रियो का अध्ययन विभागीय अनुदेशको की सहायता से किया जाता है। दो साल बाद जब ये नये छात्र खुद तृतीय वर्ष के छात्र हो जाते है तो वे अपने नये सहपाठियो के प्रदर्शक बन जाते है। कितनी अच्छी परपरा है यह!

हमारे सबसे नये विभाग–पत्रकारिता विभाग–का भी अध्ययन-क्रम बहुत ही दिलचस्प है। यहा की कक्षाए, जो छापखानो या वायरलेस स्टेशनो की तरह लगती है, नवीनतम यत्रो और सामानो, लिनोटाइप, टाइपराइटर, रेडियोसेट, टेप रेकर्डर, कैमेरा आदि से सुसज्जित है। इस विभाग के छात्रो ने अपने व्यावहारिक कार्यों के एक अग के रूप में हाल मे अपना 'जर्नलीस्ट' नामक छपा हुआ पत्र निकालना शुरू किया है।

जब मैं पत्र के सम्पादकीय कार्यालय में पहुचा तो वहा सब को अपने अपने काम पर मैंने चुस्त पाया। काली आखोवाला एक नौजवान सेक्रेटरी की मेज के पीछे बैठा हुआ था। वह ओलेग स्मानोव था। पत्रकारिता विभाग से स्नातक होने के बाद सखालिन द्वीप के एक प्रादेशिक समाचारपत्र में उसने तीन वर्ष तक काम किया था। उस समय एक विद्यार्थी कागज खोले हुए उसके सामने खडा था।

"यही मैंने लिखा है" वह कह रहा था–"वर्षा की पहली बूदो ने धरती पर गिरकर उनके सफेद मोजो पर धब्बे लगा दिये।' इस वाक्य मे तो मुझे कोई त्रुटि नही दिखाई पडती।'

"मेरे प्रिय दोस्त," ओलेग ने वीरता के साथ समझाना शुरू किया—"शैली के दृष्टिकोण मे यह त्रुटिपूर्ण है... 'गिरकर उनके सफेद मोज़ों पर धब्बे लगा दिये।' तुम्हे यह स्पष्ट करना है कि किसके मोज़ो पर।"

"आप सोचते है कि पाठक मूर्ख है? वे तुरत ही समझ जायेंगे कि मैं किसके मोज़ो के बारे में कहना चाहता हूं।"

"संभव है," दूसरे छात्र ने कहा। "लेकिन पत्र अस्पष्टता को प्रोत्साहित नही कर सकता। आखिर हम तो यही सीख रहे है कि लिखना कैसे चाहिए और तुमने जो लिखा है वह कोई बहुत भावपूर्ण तो नही।"

"और सामान्यत.," कमरे में बैठे एक अन्य लड़के ने कहा, "कहानी में कोई खास जान नही। प्रेम, प्रकृति.. शुद्ध भावुकता।"

"प्रेम एक ऐसा विषय है जिसपर हमेशा कलम चलाई जा सकती है," उदीयमान लेखक ने आवेग में जवाब दिया। "हम इसका फैसला पाठको पर छोड़ दें।"

"फिलहाल तो इसे छोड़ना ही है," मेज़ के पीछे से उठते हुए ओलेग ने कहा—"अभी मुझे बाहर जाना है। अपनी कहानी रख दें। इसका निर्णय करने की ज़िम्मेवारी संपादक-मंडल पर है।"

"यह सब क्या है?" विद्यार्थियो के चले जाने पर मैंने ओलेग से पूछा।

"जब आप यहा पहुचे तब हम एक कहानी को लेकर बहस कर रहे थे जिसे एक नये छात्र ने लिखा था। कहानी बहुत अच्छी नही है। फिर भी वह छपनी ही चाहिए। वह पहला साहित्यिक प्रयास है। खैर, आप आये किस लिए?"

"ओह, मै ज़रा देखने-सुनने चला आया। वहुत दिनो से इधर नही आया था।"

"क्या आप हम लोगो के वारे में कोई कहानी लिखने की योजना वना रहे है?"

"नही, मै केवल यह देखने के लिए उत्सुक हू कि ये नौजवान पत्रकारिता का क-ख-ग कैसे सीख रहे है।"

"हूह! मुझे तनिक भी आपकी वातो का विश्वास नही हुआ। लेकिन यदि आप हम लोगो के सवंध में कुछ लिखने जा रहे हो तो हमारी मजवूरियो और अभावो के वारे में भी लिखना मत भूलियेगा। हमारे पास हाथ से वैठानेवाले टाइपो की कमी है। हम वहुत तरह के शीर्षक नही दे सकते। फोटो-प्रयोगशाला में अभी हमारे पास प्रयोगशाला-सहायक नही जो छात्रो को फोटोग्राफी-कला की शिक्षा दे सके। फलस्वरूप, हमारे चित्र वहुत ख़राव होते है। ज़िन्कोग्राफी हमेशा पिछडी रहती है। उसके वाद है हमारी फ़्लैट-टाइप मशीन— वह विशाल मशीन ठीक से काम नही करती है। उसमें कही नुख्स निकल आया है। यही सव है हमारी परेशानिया।"

"यह सव कुछ ठीक हो जायेगा," मैंने ओलेग को आश्वासन दिया, "शुरू शुरू में तो दिक्कते होती ही है।"

"हा, लेकिन जितनी जल्द यह सव कुछ ठीक हो जाये, उतना अच्छा। ऐसा हुए दो महीने से अधिक हो गये।"

"हम एक लम्वे हॉल में दाख़िल हुए जो लैम्पो की नीली रोशनी में जगमगा रहा था। दाहिनी ओर, हर खिडकी के सामने वडी वडी ढालवी मेज़ें लगी हुई थी। यहा-वहा हाथ से वैठानेवाले टाइपो की वडी वडी दराज़ें निकली पडी थी। वायी ओर लिनोटाइप की कतारे लगी हुई थी जिनकी धातुए रोशनी में चमक रही थी।

स्थान काम और शोर-गुल से गूंज रहा था। छात्र अपने कामो में व्यस्त, विचारो का विनिमय कर रहे थे।

"यह हमारे छापाखाने का कम्पोजिग विभाग है या हमारे शब्दो में शैक्षणिक पोलिग्राफिक प्रयोगशाला। हम अपने पत्र का आगामी अंक निकाल रहे है; वह लडकी उस मेज़ पर प्रेस-प्रूफ देखने में व्यस्त है।"

हम लोगो को देखकर लडकी अपने हाथ में प्रेस-प्रूफ़ लिये हम दोनो के पास चली आयी।

"ओलेग, यहा कौन-सा टाइप रहेगा, यह बताया हुआ नही है। अत. इस 'पिकास्सो प्रदर्शनी में' नामक शीर्षक में कौन-से टाइप का व्यवहार किया जाये?"

"मैं १६ प्वायटवाले पुरानी लेटिन स्टाइल के इटालिक्स का सुझाव दूगा।"

" और 'फिटर अनातोली कुज़मीन की नवीनतम सिद्धियां' नामक शीर्षक के लिए कौन-सा टाइप रखा जाये?"

"ग्रोटेस्क का इस्तेमाल करो. . लेकिन तुम टाइपो की सूची देखकर खुद क्यो नही पसद करती। अब तुम्हे खुद फैसला करना चाहिए।"

"किस फिटर के बारे में तुम बातें कर रहे हो, ओलेग, और यहां उसकी गुजाइश कैसे है?"

"आपको शुरू से ही सब कुछ बताना होगा। देश की अर्थ-व्यवस्था के बारे में बाहरी ज्ञान रखनेवाला पत्रकार बिल्कुल गुब्बारे की तरह होता है। आप मानते हैं?"

"हां, बिल्कुल," मैंने मुस्कराते हुए कहा।

"हम लोगो ने सोचा कि सामयिक अक निकालनेवाले छात्रो को किसी कारखाने, प्लाट या मास्को के पास किसी नगर में भेजकर उन्हें वही पर विपयो को चुनने और तत्सबघी सामग्रियो को इकट्ठा करने के लिए कहा जाये। अत., चतुर्थ वर्ष के छात्रो का एक दल कूत्सेवो नामक नगर में गया और वहा के नगरवासियो के जीवन और कार्य सवधी सामग्रियो का सकलन किया। उक्त अक में सामग्रियो की विभिन्नता थी। समाचार और वृत्तान्त थे तथा सामूहिक फार्म के अध्यक्ष के बारे में एक रूपक था। एक छोटा-सा स्केच भी था और बहुत-से चित्र। कुल मिलाकर अक बहुत ही दिलचस्प था। आगामी अक तृतीय वर्ष के कुछ छात्र निकाल रहे हैं। उन्होने एक मोटर कारखाने का निरीक्षण किया जहा उन्होने कर्मियो और शॉपो के प्रधानो से मुलाकात की। उन्होने उन त्रुटियो की ओर भी ध्यान आकर्षित किया जो उन्हे दिखाई पडी। यह अक भी काफी दिलचस्प होगा।

"और वह कौन है?" मैंने एक औसत कद के व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए पूछा जो विद्यार्थियो की एक भीड से घिरा चला आ रहा था।

"वे अनुदेशक अवेनीर निकोलायेविच जहारोव है। उन्ही की देख-रेख में पत्रो का हर अक निकाला जाता है।"

"अवेनीर निकोलायेविच," मैने भीड में शामिल होते हुए पूछा, "हमारे पत्र के बारे में आपका क्या ख्याल है?"

"मेरा ख्याल है कि इससे तरुण पत्रकारो को आवश्यक ट्रेनिग मिलेगी। वे पत्र निकालने की टकनीक जान जायेंगे। दीन-दुनिया से वाकिफ हो जायेंगे। वे जान जायेंगे कि विभिन्न पेशो के लोगो से कैसे साक्षात्कार किया जाता है, जरूरी तथ्यो का सग्रह कैसे किया जाता

है और अन्तत. उपयुक्त साहित्यिक शैली में उन सामग्रियों को लिपिवद्ध कैसे किया जाता है।"

"क्या 'जुरनलीस्ट' नामक पत्रिका के प्रकाशन से पाठ्य-क्रम मे कोई खास परिवर्तन आया है?"

"अवश्य ही। हमारे विभाग में वुनियादी विपयो—रूसी और विदेशी साहित्य, कम्यूनिस्ट पार्टी का इतिहास, राजनीतिक अर्थ-व्यवस्था, द्वंद्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद, रूसी और विदेशी पत्रकारिता, रूसी और विदेशी भापाएं, रचना-शैली, इतिहास और आर्थिक भूगोल—के अतिरिक्त उद्योग और कृपि की सरचना के सवंव में विशिप्ट व्याख्यान होते है जिनसे छात्रो को अविक जटिल प्रकार की आर्थिक समस्याओं को समझने में मदद मिलती है।"

'जुरनलीस्ट' के सम्पादकीय कार्यालय से विदा होते समय मैंने यही सोचा कि पिछले साल की अपेक्षा तरुण पत्रकारो के लिए अव पढ़ाई वहुत ही दिलचस्प वन गयी है और उनके लिए कुशल पत्रकार वनना काफी आसान हो गया है। सैद्धान्तिक शिक्षा को व्यावहारिक कार्य से सम्वद्ध कर दिया गया है ताकि उन्हे पेशे की सारी वातों को यदा-कदा नही वल्कि रोज़मर्रे के कामो में सीखने का मौका मिले।

अव प्राकृतिक विज्ञान विभागो के अन्तर्गत, मिसाल के लिए, भौतिकशास्त्र विभाग में व्यावहारिक शिक्षा कैसे दी जाती है, इसकी चर्चा करेंगे।

इस प्रश्न का पूर्ण विवरण के साथ उत्तर देने के लिए मैंने 'रेडियो अभ्यास' की कक्षा में उपस्थित होने का निर्णय किया। उक्त कक्षा इस विभाग की एक खास विशेपता है।

वड़ी वड़ी खिड़कियोवाले जिस विशाल कमरे में मैं दाखिल हुआ उसमें लम्वी मेज़ें लगी हुई थी और वे पूरी तरह भिन्न भिन्न

यंत्रो और सामानो से भरी हुई थी। उनपर काली धातु के छोटे-वडे वक्स रखे थे जिनकी दीवालो में छेद और दरारे थी, (प्रत्यक्षत. उन्हे ठढा रखने के लिए) और जो डायलो, पर्दो, मूठो, स्वीचो और वटनो आदि से भरे पडे थे. . हर यत्र से लम्वे तार लटक रहे थे।

हर मेज के पास दो छात्र वैठे थे। दरवाजे की वायी ओर एक वडा-सा धातु का तख्ता छत से लटक रहा था जिसपर अकित था 'कनडेनसर्स'। इससे सटे हुए हर प्रकार के कनडेनसर—कागजी, इलेक्ट्रोलाइटिक, सरामिक और अवरखी—दिखाई पड रहे थे। उनके नीचे १०—३४० वोल्ट तनाववाले दो स्वीच-वोर्ड फर्श तक लटक रहे थे। कमरे के कोने में, वायी ओर, ढालवी दराज़ोवाली एक अलमारी थी। हर दराज़ मे यह लिखा था कि उसमें कौन-सा पुर्जा रखा है। अलमारी के सामने एक मेज़ के पास एक नवयुवती वैठी थी, जो प्रयोगशाला-सहायिका थी। उस वक्त वह कुछ नही कर रही थी। उसने छात्रो को ज़रूरी पुर्जे दे दिये थे और अव कोई किताव पढ रही थी। दाहिनी तरफ कोने में, खिडकी के पास, अध्यापक की मेज थी।

"विल्कुल ठीक," वह उस विद्यार्थी को समझा रहा था जो उसे अपना काम दिखा रहा था। "इसी तरह जारी रखो। तुम्हारा विस्तार-उत्पाद कितना है?"

"८० वोल्ट।"

"ज़रा देखें।"

हवा में कोलोफोनी के जलने की गध फैल रही है। मुझे धातु के जलने और रेशो के झुलसने की गध भी मिल रही है।

पहली मेज़ के पास नीला चोगा और उजला कॉलर पहने हुए एक लड़की अपनी पेंसिल से वडे वडे हिसावो को जोडने, गुणा करने

और भाग देने के काम में व्यस्त है। उसके सामने खाका रखा है जिसकी मदद से विभिन्न पुर्जों को जोड़कर उपकरण तैयार करना है।

एक साधारण-सा स्किइंग जाकेट पहने हुए घनी भौंहों और भूरे बालोंवाला उसका पड़ोसी बिजली से जोड़ाई करनेवाला एक उपकरण लिये हुए है जिसे वह कोलोफोनी से भरे बर्तन में डाल देता है। नीले रंग का दमघोटनेवाला धुआं ऊपर फैल जाता है। नवयुवक सतर्कता से रांगे की एक चमकीली बूंद के साथ उस उपकरण के छोर को एक छोटे-से अलुमिनम के बक्से की ओर बढा देता है। वह बक्सा उलटकर रखा हुआ है और बहुरंगी कनडक्टर रेसिस्टर, और कनडेनसर दिखाई पड़ रहे हैं। अभी अभी आखिरी जोड़ाई की गयी है। विद्यार्थी चैन की सांस लेते हुए पीछे उठंग जाता है—

"अब हम देखें कि इसका परिणाम क्या निकला?"

मेज़ पर एक के ऊपर एक रखे यंत्रों में बक्से के पीले, लाल और नीले कनडक्टर घुमा दिये गये। यंत्रों में छोटे-से लाल लैंप जल उठे और मद्धिम रूप से चमकते हुए गोल पर्दे पर तेज़ हरी रोशनी की धारी चमकने लगी। नौजवान स्वीच को कुछ देर तक इधर-उधर करता रहा और तब उदासी से बोल उठा—

"धत्तेरे की!"

"क्या बात है?" पास आकर अनुदेशक ने पूछा। कुछ मिनटों तक वह भी मूठों और स्वीचों को इधर-उधर ऐंठता रहा।

"क्या तुमने रेजिम की जांच कर ली थी?"

"हां।"

"तुम्हारा आरम्भिक विस्तार कितना था?"

"१३० के लगभग।"

"मुझे खाका दिखाओ।"

दस-पन्द्रह मिनट के वाद गड़वड़ी का पता चल गया। छात्र ने गलत रेसिस्टर का उपयोग किया था।

"तुम क्या कर रहे हो? मैंने विद्यार्थी से सवाल किया।

"एक चौंड़े एम्पलिफायर को सहेजने का काम मुझे सौपा गया था।"

"और यह क्या है?"

वह मुस्कराया। "कोई भी यह तुरत जान जायेगा कि आप भौतिकशास्त्री नही है क्योकि आपको यह मामूली चीज़ भी मालूम नही।"

"इस उपकरण का व्यवहार टेलीविजन सेट में किया जाता है। मैंने खाके को तैयार किया और उसकी मदद से यत्र को सहेजा लेकिन जाच से पता चला कि कही पर कोई गलती हो गयी थी। अव इसे ठीक करना है।"

और इनके वाद त्वीलिसी का स्तेपान सोलूयान अपने जटिल काम में फिर से जुट गया। मैं अनुदेशक के पास चला आया। उसने मुझे निम्न वाते कही—

"यह रेडियो-शिक्षा, रेडियो-फिज़िक्स विभाग के तृतीय वर्ष के छात्रो के लिए है। पाठ्य-क्रम के अनुसार ४८ घटे की शिक्षा में विद्यार्थियो से आशा की जाती है कि वे रेडियो के एक या दो उपकरणो—एम्पलिफायर, जेनेरेटर आदि—को सहेजना सीख जायें। इसका अर्थ है कि उन्हे आवश्यक गणना करने, विभिन्न पुर्जो को खोजने और फिट करने, उपकरणो को सहेजने, जाच करने और नियमित करने का ढग ज़रूर आना चाहिए।

"विद्यार्थियो को यह जानना ज़रूरी है कि सम्बद्ध उपकरण कैसे काम करते हैं। आपने देखा होगा कि हरेक छात्र के काम करने की

मेज़ रेक्टिफायर, कैथोड ग्रौस्सिलोग्राफ, इलेक्ट्रोनिक वोल्टमीटर ग्रौर उच्च ग्रावेपनाक के जेनेरेटर से सुसज्जित है, जिनकी सहायता से रेडियो के विभिन्न पुर्जों, वाल्वों ग्रादि की ठीक ठीक माप की जा सकती है। जब से हम लोग नयी इमारत में ग्रा गये है, तब से हमारी टेकनिकल सुविधाएं बहुत ग्रच्छी हो गयी हैं। सक्षेप में यह कि छात्र खाका सहेजते है ग्रौर तब ग्रनुदेशक को दिखाते है। उसके बाद वे उन्हे फिर ग्रलग ग्रलग कर देते है ग्रौर पुर्जो को (जो काम के बाद बच जाते हैं) प्रयोगशाला-सहायिका के पास लौटा ग्राते है।"

"क्या छात्रो के ये प्रथम व्यावहारिक कार्य हैं?"

"नही, बिलकुल नही। प्रथम वर्प में विद्यार्थियो को ग्रौद्योगिक कक्षा में उपस्थित होना पडता है जबकि उन्हे विभिन्न कारबार के मूलतत्वो से परिचित कराया जाता है। प्रथम वर्प के छात्र ग्रपने व्यावहारिक कार्यो के सिलसिले में, तैयार खाके के ग्रनुसार सबसे सरल रेडियो-सेट सहेजते हैं। हमारे विभाग में नये छात्रो को जोड़ाई के काम से, रेडियो-सेट के विभिन्न ग्रंगो से ग्रौर वाल्वो की विशेपताग्रों से परिचित कराया जाता है तथा उन्हे तन्तुग्रों को लपेटने ग्रादि का काम सिखाया जाता है।

"इन ग्रनिवार्य कक्षाग्रो के ग्रतिरिक्त नवसिखिया टेकनिकल मडली—टेलीविजन मंडली ग्रौर रेडियो-टेकनिकल मंडली—भी है। शाम में ग्राप विभिन्न प्रयोगशालाग्रो में (जिनकी संख्या काफी है) विद्यार्थियो को ग्रपनी मौलिक डिज़ाइन के ग्रनुसार टेलीविजन-सेट, रेडियो-सेट या एम्पलिफायर, रेकार्डर ग्रादि सहेजते पायेंगे। इनमें से बहुत-से नवसिखिये रेडियो के बारे में बहुत ग्रच्छी जानकारी रखते है। मैं तो कहूगा कि वे बहुत ही होनहार हैं। ग्रपनी योग्यता का पूर्ण विकास करने में उनके लिए कोई चीज़ बाधक नही। उन्हें ग्रावश्यक पुर्जो ग्रौर

परीक्षा का समय नजदीक है···

यह छात्र भी परीक्षा की तैयारियां कर रहा है

ये विद्यार्थी अपना समय नहीं खो सकते

हूह, यह प्रश्न सरल नहीं

कुछ विद्यार्थी साथ साथ पढ़ना फायदेमंद समझते हैं

और साथ ही मज़ेदार भी

परीक्षा देती हुई

औजारो को खरीदने की जरूरत नही। ये उन्हे हमेशा सुलभ है। और सबसे बड़ी बात यह कि उन्हे मदद देने के लिए अनुदेशक और अनुभवी रेडियो-टेकनिशियन वहा हमेशा मौजूद रहते है।

* * *

अब विचार-गोष्ठियो के बारे में। मै सोचता हू कि इस प्रकार के सामूहिक कार्य के बारे में बहुत अधिक विस्तार से कहने की जरूरत नही। व्याख्यानो की तरह शिक्षा के इस स्वरूप का अस्तित्व सभी उच्च शैक्षणिक सस्थानो में है। हमारी विचार-गोष्ठिया दो प्रकार की है। एक है किसी खास विषय को लेकर वाद-विवाद के रूप में। वाद-विवाद के बाद अनुदेशक परिणामो का सार बताता है और जहा आवश्यक होता है वहा वाद-विवाद में भ्रान्तियो की ओर भी इशारा करता है।

दूसरा है जब कोई विद्यार्थी किसी खास विषय पर रिपोर्ट तैयार करता है और बाकी छात्र एव अनुदेशक वाद-विवाद में भाग लेते है।

विशेष विचार-गोष्ठियो की भी व्यवस्था है। नाम से ही स्पष्ट है कि ये किसी खास और सकीर्ण विषय या विज्ञान के खास और सकीर्ण क्षेत्र से सम्बन्धित होती है। उदाहरण के लिए इतिहास विभाग में आयोजित जागृतिकाल की कला सम्बन्धी विचार-गोष्ठी को ले लीजिये। विषय-वस्तु के अति व्यापक क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए और भी कई विशेष विचार-गोष्ठियो की व्यवस्था है। मिसाल के लिए, मिकायेलान्जेलो की कला पर विचार-गोष्ठी का उल्लेख किया जा सकता है। विद्यार्थी अपनी अपनी अभिरुचि के अनुसार विशेष विचार-गोष्ठियो को चुन लेते है।

हमारे विश्वविद्यालय में अनिवार्य शिक्षा के सक्षेप में यही विभिन्न स्वरूप है। मैंने मुख्य स्वरूपो से पाठको का परिचय कराया है। ये

मुख्य स्वरूप भी विभागो और उपविभागों के अनुसार बदलते रहते है। कभी कभी व्यावहारिक शिक्षा को सैद्धान्तिक शिक्षा से संयुक्त कर दिया जाता है। रसायनशास्त्र, भौतिकशास्त्र, जीवशास्त्र, मृदा विज्ञान और भूगर्भशास्त्र के विभागो में व्याख्यानो को प्रयोगशाला-जाचो के द्वारा स्पष्ट किया जाता है।

पाठ्य-क्रम का आयोजन ऐसा किया गया है कि छात्र धीरे धीरे और अनजाने ही शुद्ध सैद्धान्तिक शिक्षा को पार कर स्वतन्त्र रुप मे शोध-कार्य करने के योग्य हो जायें। इस सम्बन्ध में दूसरे अध्याय में हम चर्चा करेंगे।

विज्ञान की ओर

"सुप्रभात। तुमने रिपोर्ट पढ़ी है?" टाइप किये हुए पन्नो को छात्र के हाथ से लेते हुए विश्वविद्यालय के एक सबसे पुराने प्रोफेसर निकोलाई निकोलायेविच बरान्स्की ने प्रश्न किया।

"हां।"

"अच्छा। कोई टीका-टिप्पणी?"

"मेरा ख्याल है वह बहुत अच्छी है।"

७५ वर्षीय भूगोलशास्त्री ने त्योरी चढायी—"तुमने मेरा मतलब नहीं समझा। मैं तुम्हारी ओर से आलोचना चाहता हू।"

"आलोचना! लेकिन सब कुछ सही है।"

प्रोफेसर बरान्स्की का पारा चढ गया—

"तब क्यो . हूट . हा ... तुमने क्या समझ रखा है? मैंने तुम्हे रिपोर्ट पढ़ने के लिए क्यों दी? अनुमोदन के लिए? हर्गिज़ नही! मैंने रिपोर्ट में कई विवादास्पद समस्याएं उठायी है और उनके सम्बन्ध

में तुम्हारा मत चाहता था। और उसके वदले तुम . " और आदरणीय वैज्ञानिक न उत्तेजित होकर अपने हाथ हिलाये।

भूगोल विभाग में तृतीय वर्ष के एक छात्र वोलोद्या वीकोव ने यह कहानी मुझे सुनायी। प्रोफेसर वरान्स्की ने उस नये छात्र को अपनी दो रिपोर्टें पढने के लिए दी थी जिन्हे उन्होने भूगोल-काग्रेस के लिए तैयार किया था। इन रिपोर्टों में प्रोफेसर ने कई विवादास्पद समस्याएं उठायी थी। लेकिन वीकोव उनका पता नही लगा सका। वह रिपोर्टों को पढ तो गया लेकिन उसके दिमाग़ में यह वात ही नही उठी कि कई पुस्तको के प्रणेता और सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी के सम्वद्ध सदस्य तथा सम्मानित वैज्ञानिक द्वारा तैयार की गयी रिपोर्टों में कोई त्रुटि हो सकती है। वीकोव ने कहा कि उसे कितना आश्चर्य हुआ जव प्रोफेसर वरान्स्की न उन रिपोर्टों को लौटाते हुए उससे ज़ोर देकर कहा कि उनमें त्रुटिया और भ्रान्तिया है और वह उन्हे ढूढ निकाले।

"अव मै अपने निकोलाई निकोलायेविच को अच्छी तरह जान गया हू," व्लादीमिर ने कहना शुरू किया—"यदि वे अव कोई चीज़ मुझे पढन के लिए देते है तो मै विना अपनी टीका-टिप्पणी के योंही नही लौटा देता। वे विद्यार्थियों को ज़ोर देकर कहते रहते है—'सोचो, सोचो और सोचो। कोई भी चीज़ पढो, आलोचनात्मक दृष्टिकोण से पढो।' और हमें वे खुद इसका ढग वताते है। प्रोफेसर वरान्स्की की तरह हमारे लेखों को इतने ध्यान से वहुत कम ही प्रोफेसर देखते है। उनके 'गोल निशानो' से हम अच्छी तरह वाकिफ है। हासिये में पचासों गोल निशान वनाकर और उनमें सिलसिलेवार सख्या लिखकर वे क्रम से विस्तारपूर्वक तत्सवधी त्रुटियो और गलतियो को वताना शुरू करते है।

(छात्रो द्वारा तैयार किये जानेवाले निवन्धो के वारे में मै वाद में वताऊगा।)

T.59.64.17

4*

'276

पिछले अध्याय में मैं यह बता चुका हूं कि किस तरह नये छात्रो को हर चीज़ नयी और असाधारण लगती है। स्कूली छात्र के नाते उससे केवल यही आशा की जाती थी कि वह अपना पाठ ठीक से तैयार करे। लेकिन यहां विश्वविद्यालय में, सामग्रियो का मूल्याकन करने तथा उन्हें ठीक से समझने-बूझने की भी आशा की जाती है। धीरे धीरे विद्यार्थी में आत्मविश्वास की भावना दृढ़ होती जाती है। किसी विचार-गोष्ठी या वैज्ञानिक मंडली के लिए अपनी रिपोर्ट तैयार करने में वह सभवत. यही लिखेगा—"मुझे ऐसा लगता है कि ..." या "मेरा विचार है कि . ." और जब वह इन शब्दो को व्याख्यान-कक्ष में अपने साथियों के सामने दोहराने लगेगा तो वह लाल हो उठेगा और अनुदेशक की ओर देखता हुआ मंद आवाज़ मे कहेगा—"सभव है, मैं गलती करता होऊं ..." लेकिन अनुदेशक छात्र की घबड़ाहट को न देखने का बहाना करते हुए शान्त स्वर में कहेगा—"बिलकुल नही। तुम्हारा कथन सही है।"

और प्रोत्साहन के इन शब्दों को सुनकर नये छात्र के हृदय में खुशी की जो लहरे उठने लगेंगी उन्हें भला प्रोफेसर क्या जान पायेगा।

दूसरी अवधि के अन्त में, गर्मी में, अधिकाश विभागो के छात्र व्यावहारिक कार्य के लिए बाहर निकल जाते हैं। भूगोल के छात्र क्रीमिया के लिए रवाना हो जाते हैं जहां वे प्रकृति का अध्ययन करते हैं, पहले-पहल खोज संबंधी कार्य करते है, पहाड़ो पर चढ़ते हैं, घुड़सवारी करते हैं और तम्बुओं में सोते हैं। भूगर्भशास्त्र के छात्र धरती की परतों और चट्टान के नमूनो को पहचानने तथा भूगर्भशास्त्र सबंधी विभिन्न यन्त्रो का उपयोग करना सीखते हैं। प्राणिशास्त्र और मृदा विज्ञान विभाग के छात्र मास्को के पास विशिष्ट जीवशास्त्र-केन्द्रो में जाते है जहां वे वनस्पतियो का संग्रह करते हैं और पशु एवं पौध-जीवन का अध्ययन

करते हैं। रात हो या दिन, वे घोसलो के पास झाडियो में लुक-छिपकर पक्षियो का अध्ययन करते हैं।

ज्वेनीगोरोद। तडके सुबह। वालरवि, दूर तक फैले हुए सघन वन के पेडो की फुनगियो के ऊपर तैरता नज़र आ रहा है। मन्द समीर के झोको ने रात के धुधलके को वहा दिया है। वल खाती हुई नदी की स्वच्छ धारा में उसके चट्टानी तट, वर्च-वृक्षो के सफेद धड और निर्मेघ आकाश की नीलिमा प्रतिविम्वित हो रही है। हम लोग 'मास्को के स्वीट्ज़रलैंड' में हैं।

प्राणिशास्त्र और मृदा विज्ञान विभाग के द्वितीय वर्ष के छात्र अपने ग्रीष्मकालीन व्यावहारिक कार्य के लिए सामान्यत यहा मोस्कवा नदी के तट पर आते हैं।

इतना सवेरे, शिविर में पूर्ण निस्तव्धता है। इतने तडके उठनेवाली केवल वह पालतू सारिका चिडिया है जो 'प्राणिशास्त्री-सदन' के ओसारे में व्यग्रता से आगे-पीछे फुदक रही है। वह वेचैनी से उन लोगो का इन्तज़ार कर रही है जो आकर उसे ज़ायकेदार ताज़ी रोटी खिलायेंगे। वन के छोर पर, जहा विद्यार्थियो के तम्बुओ की दो पातें लगी हुई हैं, अभी भी नीरवता है। उनमें से कुछ तम्बुओ पर प्रतीकात्मक चित्रोवाले छोटे छोटे झडे लहरा रहे हैं। एक पर विच्छू का चित्र वना हुआ है जो विना रीढवाले प्राणियो का अध्ययन करनेवाले छात्रो का प्रतीक है। दूसरे पर एक विचित्र प्रकार की मछली के चित्रवाला झडा लहरा रहा है। इसका अर्थ है कि यह मछलियो का अध्ययन करनेवाला दल है।

ऐसा जान पडता है कि जीवशास्त्र-केन्द्र में जीवन की गति विलकुल स्थिर पड गयी है, लेकिन हर प्रकार के प्राणियो—पक्षियो, जानवरो, कीडे-मकोडो, मछलियो—का चौवीसो घटे

पर्यवेक्षण चलता रहता है। राया चुमाकोवा और लेव कुज़नेत्सोव को ही ले लीजिये। कुज़नत्सोव के हाथ में एक तराज़ू है जिसमें काली आंखोंवाला पंछी शान्ति के साथ बैठा हुआ है। उनका पर्यवेक्षण अल्पज्ञात 'नाइटजार' और उनके बच्चों की आदतों के सम्बन्ध में है। उनका दावा है कि रात के कुछ अन्य पक्षियों की तरह ये पंछी भी अपना घोसला नहीं बनाते। वे अपने बच्चों को, जो कभी दो से अधिक पैदा नहीं होते, ज़मीन पर ही पालते-पोसते हैं। यह पता लगाना आसान नहीं था कि मां-बाप अपने बच्चों को क्या चारा देते हैं। इसका पता लगाने के लिए इन दोनों छात्रों ने बच्चों का कंठ बांध दिया और मां द्वारा डाले गये चारे को तुरत उनके मुंह से निकाल लिया। उन्होंने यह पता लगाया कि ये पंछी अपने बच्चो को रात में ही चारा देते हैं और दिन में सोते हैं। यही कारण है कि सुबह में बच्चों का वज़न बढ़ जाता है और शाम होते होते उनका वज़न घट जाता है। राया ने सन्तोष के साथ अपनी नोटबुक में दर्ज किया कि उसका नन्हा 'नाइटजार' रात भर में १० ग्राम वज़न में बढ गया।

धीरे धीरे पूरा का पूरा शिविर जीवन की हलचल से भर उठता है जब छात्र व्यावहारिक कार्य सम्बन्धी दैनिक गश्ती पर निकल पड़ते हैं। नदी के बिलकुल तट पर तीन लड़किया आराम से बैठ जाती हैं। वे पौध-विज्ञान की छात्राएं हैं। उनके सामने पौधो की कई परते पड़ी हुई है जिनका संग्रह उन्होंने किया है। वे उनका वर्गीकरण कर रही है और क्रमिक रूप से अपनी नोटबुक में उनका नाम दर्ज कर रही हैं। अन्यत्र, विद्यार्थी अभी भी अपने प्रयोगात्मक पर्यवेक्षणों में व्यस्त हैं।

"कोन्स्तान्तीन निकोलायेविच, उसने खिलाना बन्द कर दिया है," किसी ने बड़े घबड़ाये हुए स्वर में कहा। दो लड़कियों ने जीव-विज्ञान

के कँडिडेट क० न० ब्लागोस्क्लोनोव का रास्ता रोक रखा है, जो शिविर के प्रभारी है।

"जैसे ही हम लोगो ने घोसले के चारो ओर जाली लगा दी, मादा ने बच्चो को खिलाना बद कर दिया। अब वे शायद नही बचेंगे।"

"अवश्य यह बहुत बुरा हुआ," कोन्स्तान्तीन निकोलायेविच ने कहा– "तुम लोगो को बहुत सतर्क रहना चाहिए था और पछियो को डराना नही चाहिए था। जाली हटा दो और उसे शान्त होने का मौका दो और तब फिर अपना पर्यवेक्षण आरंभ करो।"

ये छात्राएं 'रोबिन' की आदतो का अध्ययन कर रही है। यह पता लगाने के लिए कि एक निश्चित रकबे के कीडे-मकोडो को वह चिड़िया कितनी जल्दी चुगकर खत्म कर देती है, घोसले के चारो ओर उस रकबे को जाली से घेरना आवश्यक था। लेकिन अनुभव की कमी के कारण लडकियो को इस बार सफलता हाथ नही लगी।

प्राणिविज्ञ भी अपने काम में व्यस्त हैं। खिडकी के सामने शीशे के गुबद के नीचे एक छोटा पिजरा रखा है जो एक यन्त्र से लगे हुए कई ट्यूबो से जुडा हुआ है। पिजरे के भीतर एक नन्हा-सा भूरा जन्तु, जो सबसे छोटे छछूदर का नमूना है, आगे-पीछे दौड रहा हैं। उनके चारो ओर खड़े छात्र प्रयोग से यह पता लगा रहे है कि कुतरकर खानेवाला यह जन्तु कितनी मात्रा में आक्सिजन की खपत करता है। उनके प्रयोग का नतीजा बड़ा ही दिलचस्प निकला। पता चला कि स्तनी जन्तु जितना ही छोटा होगा, अपेक्षाकृत वह उतना ही अधिक भोजन और आक्सिजन की खपत करेगा। विद्यार्थियो ने यह महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक खोज की कि स्तनी जन्तु किसी निश्चित डील-डौल के अन्दर नही हो सकता।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि छात्र अपना प्रथम स्वतंत्र प्रयोग बहुत चाव और उत्साह से करते ह। उनमें से अधिकाश, गर्व के साथ यह कहते हैं कि उनका छोटा-सा छोटा अनुसंधान या खोज भी देश की अर्थ-व्यवस्था के लिए व्यावहारिक रूप से लाभप्रद है तथा विज्ञान-संसार के लिए एक नयी देन है।

जीवाणुशास्त्र के विद्यार्थियो का भी काम कुछ कम दिलचस्प और कम उपयोगी नही। उनके अनुसंधान का विषय है. 'ज्वेनीगोरोद क्षेत्र के एक वन-प्रदेश में पेड़ो को नुकसान पहुंचानेवाले कुकुरमुत्ते'। मछलियो का अध्ययन करनेवाले छात्र, व० स्पनोव्स्काया के अनुदेश में मछलियों के भोजन के बारे में खोज कर रहे है। उन्होने पता लगाया है कि मछलियो के भोजन की मात्रा आस-पास के प्रकाश की मात्रा पर निर्भर करती है। ये खोजें, बिजली की रोशनी से मछली पकड़ने के लिए बहुत महत्व की हैं।

लेकिन इन व्यावहारिक कार्यों का मतलब यह नही कि विद्यार्थियो का असल वैज्ञानिक जीवन आरंभ हो जाता है। ये केवल उन्हे उनके भावी पेशे से, वैज्ञानिकों द्वारा अभी भी हल न की गयी बहुत-सी समस्याओ से परिचित कराते हैं।

अपने प्रथम व्यावहारिक कार्य के सिलसिले में विद्यार्थी उस साल के अपने निबंध (लिखित कार्य) के लिए सामग्री तैयार करता है। ऐसे निबंध प्रथम वर्ष से लेकर चतुर्थ वर्ष तक के छात्र तैयार करते हैं। पचम वर्ष में वह थीसिस का रूप ले लेता है। जैसे जैसे छात्र पहले वर्ष से दूसरे और दूसरे वर्ष से तीसरे में आगे बढ़ता जाता है वैसे वैसे उसका निबंध अधिक गंभीर, परिपक्व और स्वतन्त्र शोध-कार्य जैसा होता जाता है। अपने व्यावहारिक शिक्षा के पहले साल में ही प्रयोगात्मक रूप से छात्र अपने भावी पेशे का चुनाव कर लेता है। लेकिन किसी

विषय की विशेष शिक्षा तृतीय वर्ष से शुरू होती है, मिसाल के लिए, जब कि भूगोल विभाग का छात्र प्राकृतिक भूगोल या आर्थिक भूगोल या समुद्र-विद्या मे विशिष्ट शिक्षा प्राप्त करने लगता है अथवा जब जीव-विज्ञान या मृदा-विज्ञान विभाग का छात्र मत्स्यविज्ञ या प्राणिविज्ञ, वनस्पतिविज्ञ या पक्षिविज्ञ, जानवरो का जीव-रसायनज्ञ या वनस्पतियो का जीव-रसायनज्ञ आदि बन जाता है।'

उपर्युक्त उदाहरणो से स्पष्ट है कि बहुत से छात्र अपने आरभिक कार्यो से ही व्यावहारिक सन्तोष दिलाना चाहते है। लेकिन सब को आरभ से ही सफलता नही मिलती।

इस सबध में मैं पिछले कुछ वर्षो से विश्वविद्यालय के छात्रो और अध्यापको के दृष्टिकोण में हुए महत्त्वपूर्ण परिवर्तनो के बारे में ज़िक्र करूगा। बहुत लम्बे अरसे तक दोनो यही सोचते थे कि विश्वविद्यालय का प्रथम कर्त्तव्य शोध-स्नातको को, अर्थात्, विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रो के लिए विशेषज्ञो को तैयार करना है। विश्वविद्यालय के स्नातक 'वैज्ञानिक कर्मी' की पदवी पाकर अपने को बहुत गौरवान्वित समझते थे और उसे खोना नही चाहते थे। ऐसे भी अवसर आते थे जब शोध से सीधा सबध न रखनेवाले कार्यो को करने से वे इन्कार कर देते थे। विश्वविद्यालय में कई सालो तक वे ऐसी समस्याओ का अध्ययन करते थे जिनका न कोई व्यावहारिक मूल्य था और न विज्ञान के क्रमिक विकास में उनका कोई सहयोग ही था। पाठ्य-क्रम कुछ इस तरह बनाया गया था कि उच्च शिक्षाप्राप्त तरुण विशेषज्ञ व्यावहारिक कार्य के लिए पूर्ण योग्य साबित नही होते थे।

उसके बाद सार्वत्रिक माध्यमिक शिक्षा लागू की गयी। उसके साथ साथ अधिक संख्या में शिक्षको की माग बढी।

अछूती और परती पडी ज़मीन मे खेतीबारी और कृषि-उत्पादन में वृद्धि की आवश्यकता के कारण वैज्ञानिक ढग से प्रशिक्षित कृषि-कर्मियो

की जरूरत पड़ी। सबसे पहला काम था उद्योग को नई टेकनीक से संपन्न करना।

इन सब बातो को ध्यान में रखते हुए प्राकृतिक विज्ञान विभाग के पाठ्य-क्रम में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किये गये हैं—व्यावहारिक महत्त्व के विषयो पर अधिक जोर दिया गया है। भर्ती के प्रतिबन्धो में भी अंशतः परिवर्तन हुए हैं। मिसाल के लिए प्रवेशिका परीक्षा में समान अंक प्राप्त करनेवाले उम्मीदवारो में से वरीयता उन्हे दी जाती है जिनको व्यावहारिक कार्य का अनुभव पहले से रहता है। जीव-शास्त्र और मृदा विज्ञान विभाग सामूहिक फार्म के कर्मियो, राज्य-फार्मो के कर्मियो, ग्रामीणो और स्कूल के उन छात्रो को खुशी से भर्ती करता है जो प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र मे एक तरह से आरंभिक और सक्रिय कार्य किये होते हैं।

इस परिवर्तन से विश्वविद्यालय की शिक्षा के प्रयोजन के बारे में वाद-विवाद उठ खड़ा हुआ। अध्यापको और शिक्षको, दोनो ने, गर्म वाद-विवाद में सक्रिय भाग लिया। लेकिन समय की प्रगति की ही जीत हुई। अधिक से अधिक युवक-समुदाय ने इस नयी धारा का साथ दिया। लेकिन इसका मतलब यह नही कि विज्ञान पिछड गया है बल्कि अभ्यास और व्यावहारिक कार्यो के घनिष्ट सम्पर्क से उसे लाभ पहुंचा है।

व्यावहारिक कार्य अब विश्वविद्यालय की शिक्षा का एक अनिवार्य अंग है। प्राकृतिक विज्ञान विभाग के छात्र साइबेरिया के बिजलीघरो के निर्माण-स्थलो पर, नहरो के निर्माण-स्थलो पर व्यावहारिक कार्य करने, और खेतो की रक्षा के लिये वन लगाने, तथा भूगर्भीय अभियानों आदि में व्यस्त देखे जा सकते हैं। मानव-विज्ञान विभाग के छात्र भी अपनी व्यावहारिक शिक्षा कुछ कम दिलचस्प नही पाते। भाषाशास्त्री भी देश के सुदूर हिस्सों में चक्कर लगाते है और वहा की स्थानीय

वोलियो का अध्ययन करते है, पुरातत्व से दिलचस्पी रखनेवाले इतिहासकार गर्मियो में खुदाई के काम में हिस्सा लेते है। अर्थशास्त्री कारखानो और निर्माणियो, सामूहिक फार्मो और राज्य-फार्मो में कई हफ्ते गुजार कर उद्योग और कृषि के वारे में नयी जानकारी प्राप्त करते है। भावी पत्रकार प्रादेशिक और क्षेत्रीय समाचारपत्रो में काम करके अपने पेशे का प्रारभिक ज्ञान प्राप्त करते हैं।

विधिशास्त्र विभाग के सीनियर छात्रो की व्यावहारिक ट्रेनिग भी वहुत दिलचस्प है।

अपराधशास्त्र विभाग के मेरे हाल के दौरे में विभाग के उपाध्यक्ष म० शालामोव ने मुझे वताया

"इस साल हमारे व्यावहारिक कार्य में कई नये परिवर्तन किये गये है। पहले विद्यार्थियो को केवल मास्को की सस्थाओ में ही भेजा जाता था। कई छात्रो से 'आक्रान्त' अनुसधाता हर छात्र को ठीक मे शिक्षा नही दे पाता था। इसके अलावा, छात्र उसके कार्यों में वाधा भी पहुचाते थे। अव नियम यह हो गया है कि हमारे छात्र देश के विभिन्न हिस्सो का दौरा करते है। एक अनुसधाता के जिम्मे केवल एक छात्र रहता है और वह अपने अनुभवो के जरिये उसे काम का ढग आदि सिखाता रहता है। हमारे छात्र अपनी व्यावहारिक शिक्षा खत्म कर प्रसन्नचित्त अभी अभी लौटे है। उन्होंने इस साल के निवध और थीसिस के लिये प्रचुर सामग्रियो का सकलन कर लिया है।"

"उनकी व्यावहारिक शिक्षा का क्या स्वरूप होता है, वे इजलास में या अभियोक्ता के कार्यालय में क्या काम करते है?"

"अभियोक्ता के कार्यालय में छात्र अनुसधाता के साथ काम करता है। छात्र, अनुसधाता के साथ घटना-स्थल पर जाता है, चित्र खीचता है और अपराध का पता लगाने के लिए आवश्यक ठोस साक्ष्यो का सग्रह

करता है। तव अनुमवाता के साथ साथ वह मामले को आगे वढाने में मदद पहुचाता है। वह प्रश्न-चिन्ह के रूप में मौजूद रहता है। अपना नोट अलग तैयार करके वाद में अनुसंवाता के नोट से मिलाता है और अनुसवाता वताता है कि छात्र ने कहां गलती की है।

"विद्यार्थी की व्यावहारिक शिक्षा का दूसरा हिस्सा इजलास में ही संपन्न होता है, जहा वह मुकदमे की सुनवाई में हाजिर रहता है और इजलास के आशुलिपिक के साथ साथ कार्यवाहियो के विवरण लिखता जाता है। कभी कभी जज उस छात्र पर जिम्मेवारी का काम भी सौंप देता है, जैसे—उसे सामान्य कोटि के मामलो की सामग्रियो के सक्षेपकरण का काम सौंपा जाता है। नियत अवधि के भीतर उसे मुकदमे के सारे विवरण तैयार करने पड़ते है, जैसे—अपराधियों के नाम, पते, उम्र और पेशा आदि। ऐसे मामलो की खोज-वीन के दौरान, जिनके सम्वन्ध में कानूनी छात्र को अपना स्वतन्त्र निष्कर्ष निकालना पडता है, वह किसी इलाक़े में आतंक फैलाये हुए वदमाशों के दल का या किसी कारखाने या शैक्षणिक सस्था में युवकों के वीच अस्वास्थ्यकर तत्वों का पता चला सकता है। तत्सवंधी वातें प्रकाश में आते ही सम्वद्ध सस्थाओं को सूचित किया जाता है। हमारी कानूनी संस्थाओ का यह एक शैक्षणिक पहलू है।

"विश्वविद्यालय में लौटने पर विद्यार्थी सगृहीत सामग्रियों के आधार पर निवंध तैयार करता है और विभाग में उसे पढ कर सुनाता है। चौथे वर्ष के छात्रो की कृतियों के कुछ नमूने देखिये।"

उन्होंने साफ-सुथरी जिल्द वंधी कुछ कृतियां दिखायी। मैंने पढा — 'घटना-स्थल की अदालती तसवीर'—ए० त्रोफीमोव, 'नावालिग अपराधियो से सवाल करने की तरकीव'—अ० अन्तीपोवा, 'छोड गये कारतूसो के ज़रिये पिस्तौल की पहचान'—ज० शखनाज़ारोव, 'वटना-

स्थल की जाच करते समय यह पता लगाना कि गोली किस दिशा में छोड़ी गयी है'—वक दर्द।

वहा से विदा होने के पहले मैंने विभाग के कुछ प्रदर्शनी-कक्षो का निरीक्षण करने का विचार किया। शीशे के वक्सो में विभिन्न प्रकार की पिस्तौले, छुरे, फिन्निश छुरिया, सडसी, चिमट, धातु की वनी छेनिया और अपराधी-ससार के अन्य औज़ार प्रदर्शन के हेतु रखे थे। दूसरे कमरे मे पूरी दीवाल पर एक वोर्ड टगा था, जिस पर अगुलियो की छापो और भिन्न भिन्न प्रकार के जूतो और खाली पैरो के निशानो के वडे वडे चित्र चिपकाये हुए थे।

उसी दिन मैंने अर्थशास्त्र विभाग का मुआइना किया। मैं वहा उस मौके पर पहुचा जव कि आकडा उपविभाग का प्रयोगशाला-सहायक टेलीफोन पर वोल रहा था

"किस समय? वहुत अच्छा। क्या उन्हे 'फ्रेज़र' तक पहुचने का रास्ता मालूम है? ओह, निस्सन्देह। चिन्ता न करे, मैं उन्हे सूचित कर दूगा। विदा।"

मेरी ओर घूमते हुए उसने कहना शुरू किया कि औज़ार वनानेवाले "फ्रेज़र" कारखाने के टेकनिकल विभाग के प्रधान दो दिन वाद एक सम्मेलन का आयोजन करना चाहते है जिसमें चतुर्थ वर्ष का छात्र व्लादीमिर मीस्कोव, कारखाने में किये गये अपने शोध-कार्य के नतीजे के वारे में रिपोर्ट पेश करेगा।

नियत तिथि को मैं आकडा उपविभाग के कई छात्रो तथा शोध-मडली के प्रभारी प्रो० अरोन याकोव्लेविच वोयार्स्की के साथ कारखाने में पहुचा। टेकनिकल विभाग के प्रधान के विस्तृत कार्यालय में कई टेकनोलाजिस्ट, दल-नेता और टेकनिकल नियन्त्रण विभाग के निरीक्षक मौजूद थे।

हम लोगो के पहुचने पर तुरत ही सम्मेलन का उद्घाटन हुआ। अपने हाथ मे एक छोटी-सी कॉपी लिये हुए व्लादीमिर सीस्कोव मेज़ के पास गया और अपनी रिपोर्ट इन शब्दो के साथ शुरू की कि मास्को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिको और छात्रो द्वारा किये जानेवाले शोध-कार्यों का प्रयोजन आकडे के आधार पर कारखानें के उत्पादनों की क्वालिटी निश्चित करना है।

"मेरे शोध-कार्य का सारतत्व निम्न है—आपके कारखाने में उत्पादित १०० थ्रेडकटरो को मैंने लिया और प्रत्येक पर सख्या अकित कर दी। थ्रेडकटर की क्वालिटी निश्चित करने के लिए कई स्टैंडर्ड पैरामिटरो की नाप ली गयी और उन्हे अकित कर लिया गया। तब मै उन्हे 'गाज़ोअप्पारात' कारखाने में ले गया, जो उन्हे ख़रीद कर उपयोग में लाता है। मैंने निरीक्षण किया और उनकी उपयोगिता का नतीजा अकित किया, अर्थात् यह अकित किया कि प्रत्येक कितना वोल्ट काटता है। मै आंकडे के जरिये, अर्थात् गणित के हिसाब के आधार पर निश्चय कर पाया और मेरा मुख्य निष्कर्ष यह है कि उक्त स्टैंडर्ड पैरामिटर, (धातु की कठोरता को छोडकर) औज़ार की क्वालिटी निश्चित करने के लिए मानदड का काम नही कर सकता।"

मैंने किसी को यह फुसफुसाते हुए सुना—"निस्सन्देह वह बहुत अधिक ज़िम्मेवारी अपने ऊपर ले रहा है।" टेकनिकल विभाग के प्रधान ने, जो टिप्पणिया लिखता जा रहा था, मेज़ को अपनी पेन्सिल से खटखटाया।

"यह इस तथ्य से स्पष्ट है," उक्त छात्र ने कहना जारी रखा, "कि उन १०० थ्रेडकटरो को जिन्हें आपका नियन्त्रण विभाग पास कर चुका था उनमें से अधिकाश निम्न क्वालिटी के साबित हुए। और आकडा सम्बन्धी खोज-बीन से पता चलता है कि इसके लिये स्टैंडर्ड

पैरामिटरो को दोप नही दिया जा सकता। मुझे ऐसा लगता है कि आप अंधेरे में काम कर रहे हैं। आप उन पैरामिटरो को नापने में समय वर्वाद कर रहे हैं जो थ्रेडकटर की क्वालिटी के लिए गौण महत्त्व रखते हैं। आप खुद जानते हैं कि थ्रेडकटरो की क्वालिटी के वारे मे आपके पास शिकायते पहुचती रही हैं। लेकिन आप विकट परिस्थिति में हैं क्योकि आप तो उन्हे स्टैंडर्ड पैरामिटरो के अनुसार वनाते ही हैं। मैं यह साफ साफ वता दू कि अपनी थियोरी को और ठोस वनाने के लिए मुझे ५०० थ्रेडकटरो के आकडो की जरूरत पडेगी।

"और ५०० क्यो?" किसी ने पूछा।

"इसे समझाने में वहुत समय लगेगा क्योकि यह विलकुल गणित को वात है। मेरी गणना ज्ञात थियोरमो पर, मभावित-सिद्धान्त पर आवारित है। लेकिन आवश्यक आकडो के मकलन के लिए मुझे आपके कारखाने के सहयोग की जरूरत है।"

"आपको सारी आवश्यक सहायता उपलब्ध होगी," टेकनिकल विभाग के प्रवान ने कहा।

"और तव," व्लादीमिर ने कहना शुरू किया, "हम अपना प्रवान कार्य सुलझाने में तथा यह निश्चित करने में समर्थ हो मकेगे कि थ्रेडकटर की क्वालिटी किन तथ्यो पर निर्भर करती है। मैं यह भी वता देना चाहूगा कि कुछ छात्रो का दल वरमो (ड्रीलो) के सम्वन्ध में शोव-कार्य कर रहा है और उन्हे भी आपकी मदद की जरूरत है। हमारे दल का नेता इस सम्वन्ध में विस्तारपूर्वक वतायेगा।"

मम्मेलन के वाद भी टेकनिकल विभाग के कर्मचारी और अर्थ-विभाग की शोध-मडली के सदस्य वहस-मशविरा करते रहे। जीने पर वाहर एक फोरमैन को मैने यह कहते हुए सुना·

"यह आकड़ा। मैंने कभी सोचा भी नही था कि यह इतना उपयोगी विज्ञान हो सकता है।"

लौटते वक्त मैं व्लादीमिर सीस्कोव से बातचीत करने लगा। उसका हुलिया बताना ज़रा मुश्किल है—देखने में साधारण, सुनहरे बाल और भूरी आखें। लेकिन वे आंखें ही है जो बरबस आपका ध्यान खीच लेती है; उसके अन्य सहपाठियो की अपेक्षा उनमें कुछ अधिक गभीरता है।

"आपको मालूम है," उसने मुझे कहा, "इसी कार्य के आधार पर हमारे उपविभाग मे एक तथाकथित नयी समस्यावाले दल का निर्माण किया गया है। इस दल में ऐसे छात्र है जो कारखानो में इस प्रकार के शोध-कार्यो में अभिरुचि रखते है।"

"क्या इस दल में बहुत-से छात्र है?"

"हां, है। मेरे अलावा—मै प्रोफेसर बोयार्स्की और सहायक प्रोफेसर द्लिनी और ग्रोमीको के अधीन काम कर रहा हूं—चतुर्थ वर्ष की एक छात्रा और तृतीय वर्ष के तीन छात्र है और वे चार छात्र भी है, जो बरमो (ड्रीलो) के सम्बन्ध में शोध-कार्य कर रहे है।"

"तुम्हारी पढाई में इस काम का क्या स्थान होगा?"

"चतुर्थ वर्ष के लिए यह मेरे निबन्ध का काम करेगा। यह वैज्ञानिक अध्ययनो के सग्रह के एक अग के रूप में भी प्रकाशित होगा। लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि हमारे शोध-कार्य के निष्कर्ष कारखाने के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे और बिगडे हुए मालो के उत्पादन में कमी हो जायगी। मैंने अपने भावी पेशे के बारे में निर्णय कर लिया है—मैं किसी कारखाने में सांख्यिक के रूप में काम करना चाहता हू। पहले किसी शोध-सस्थान में काम करने की मेरी बहुत इच्छा थी।"

परीक्षा देते हुए अपने साथियों को देखने-सुनने की उत्सुकता

हुर्रा, परीक्षा ख़तम हुई
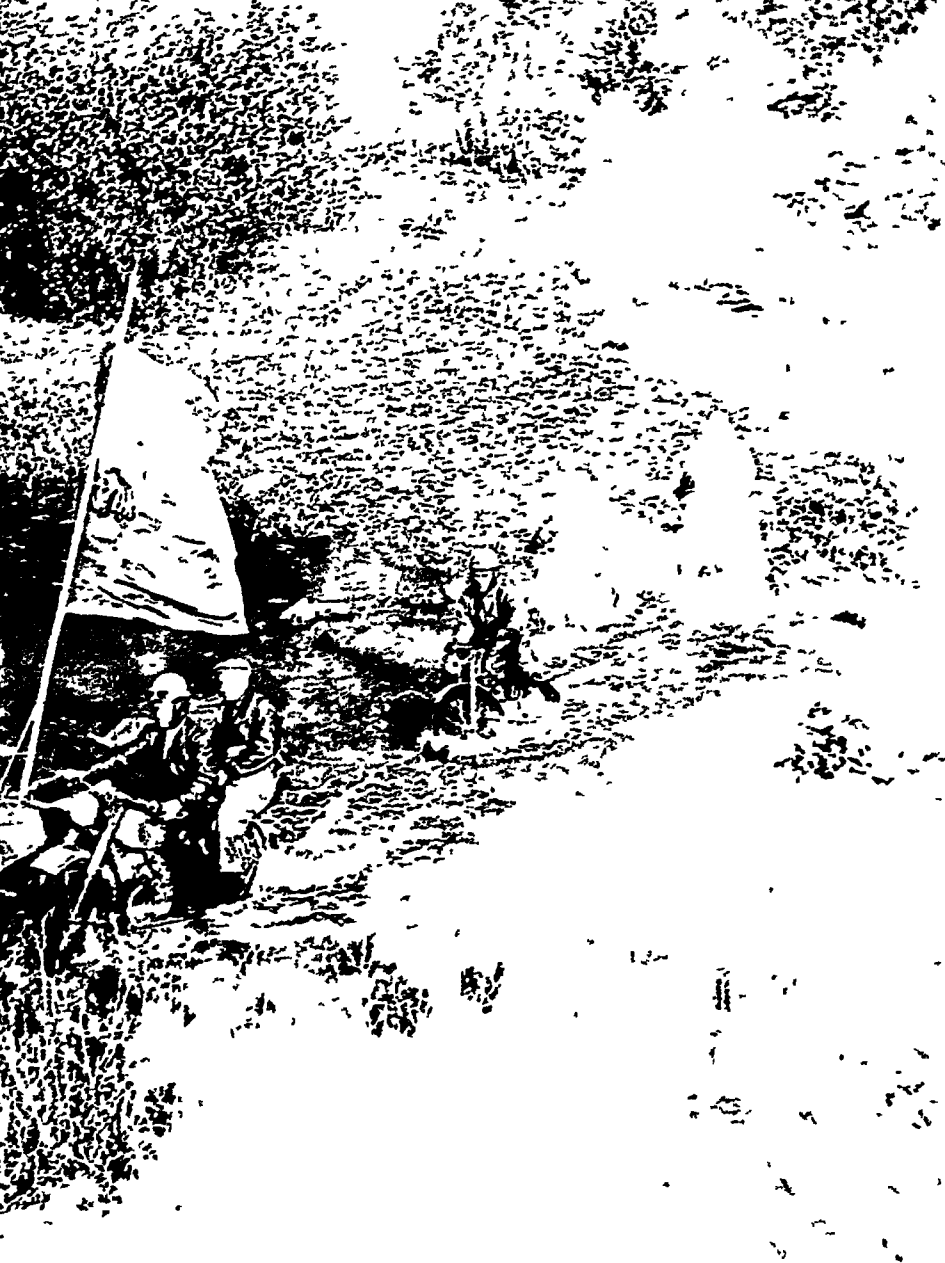
क्रास-कंट्री दौड़ में विश्वविद्यालय के खेलकूद-क्लब के
मोटरसाइकलिस्ट

इस तरह से .

हा, यह भी ठीक है

पर्यटन का आनद

"क्या तुम्हारे विभाग के बहुत-से छात्र इसी प्रकार के दिलचस्प और उपयोगी कार्य कर रहे है ?"

"सब के बारे में मै ठीक ठीक तो नही बता सकता लेकिन मुझे मालूम है कि अर्थशास्त्र उपविभाग और राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था योजना-उपविभाग के छात्र कई दिलचस्प समस्याओ—जैसे उदाहरण के लिए, उद्योग में उत्पादिता के विकास की सचिति—के समाधान में जुटे हुए है। सक्षेप में यह कि हम सभी दिलचस्प कार्य कर रहे हैं और विभिन्न कारखानो में तथा उद्योग की विभिन्न शाखाओ के लोगो के साथ अपना काफी समय लगा रहे है।"

यह इन्कार नही किया जा सकता कि यह सब कुछ बहुत आकर्षक लगा। लेकिन एक कहावत है कि हर आदमी की अपनी अपनी पसद होती है। जैसे एक रासायनिक से यह पूछना बडा हास्यास्पद होगा कि वह अर्थशास्त्री क्यो नही बना? यही वजह है कि जब दूसरे दिन मै रसायन विभाग में गया और चतुर्थ वर्ष के एक चेक छात्र, कारेल मार्तिनेक से उसके वैज्ञानिक कार्यों के बारे में पूछ-ताछ की तो स्वभावत उससे मैने उक्त प्रश्न नही किया।

मैंने विभाग के काच फूकनेवाले वर्कशॉप में कारेल को पाया जहा वह एक रेखा-चित्र पर झुका हुआ अपने एक सहपाठी को तन्मयता के साथ कुछ समझा रहा था। कारेल चौडे कधोंवाला २२ साल का एक युवक है जिसके भोले चेहरे और चमकीली आखो से मैत्रीपूर्ण भाव झलकता है। गहरे भूरे रग के मखमली सूट में उसका व्यक्तित्व और निखर रहा था।

"अभी तुम क्या कर रहे हो ?"

"चूकि मेरे उपकरण अभी तैयार नही है, इसलिये मै काम शुरू नही कर सकता," कारेल ने कुछ विचित्र उच्चारण के साथ कहना शुरू

विश्वविद्यालय की एक बहुत पुरानी संस्था है—छात्रों का वैज्ञानिक समाज। यह सभी छात्रों के लिए खुला हुआ है। संगठनात्मक नेतृत्व का भार निर्वाचित छात्र-मंडली के ऊपर रहता है। समाज के संबद्ध विभागीय सम्मेलनों में एक परिषद निर्वाचित की जाती है जो अपना अध्यक्ष चुनती है। समाज के सदस्य अपनी अभिरुचि के अनुसार विज्ञान के ख़ास क्षेत्र का अध्ययन करते हैं, नवीनतम वैज्ञानिक तथ्यों से अपने को परिचित करते हैं और अपने शोध-कार्यों के परिणाम सम्बन्धी रिपोर्ट पेश करते हैं। अक्सर वे गण्यमान्य वैज्ञानिकों के अधीन काम करते हैं। इस समाज में विद्यार्थियों की संख्या बहुत अधिक है। कई विभागों में छात्रों की वैज्ञानिक परिषदें भी बनी हैं। इन परिषदों के ज़िम्मे संगठनात्मक कार्य रहते हैं, जैसे—सम्मेलनों का आयोजन करना, अन्य शैक्षणिक संस्थाओं और शोध-संस्थाओं से सम्पर्क स्थापित करना आदि।

हर मंगलवार को समुद्रविज्ञान उपविभाग (भूगोल विभाग) की समुद्रविज्ञान-मंडली के सदस्य सवा चार बजे दिन में १८ वीं मंज़िल पर व्याख्यान-कक्ष संख्या ६ में एकत्रित होते हैं। पूरा का पूरा हॉल ठसाठस भर जाता है। हर उम्र के लोग इकट्ठा होते हैं—छात्र, प्रोफेसर, शोध-कर्मी, स्नातकोत्तर छात्र, अन्य विभागों और उपविभागों के सदस्य और समुद्रविज्ञान विभाग के स्नातक, जो किसी सागरीय या महासागरीय अभियान पर बाहर न गये होते हैं और संयोग से उस समय मास्को में ही होते हैं। यह परंपरा सात वर्षों से चली आ रही है। इसके सभी सदस्य विज्ञान में अपनी गहरी अभिरुचि द्वारा एक दूसरे से आबद्ध हैं।

उस मंगलवार को मैं मंडली की साप्ताहिक बैठक में शामिल हुआ। द्वितीय वर्ष की एक छात्रा एवं समुद्रविज्ञान-मंडली की एक

सदस्या ल्युदमिला मर्त्सीन्केविच ने मुझे सूचित किया कि उस दिन की बैठक में पचम वर्ष का एक छात्र विताली वोल्कोव, कास्पियन सागर में किये गये अपने व्यावहारिक कार्य के सम्बन्ध में रिपोर्ट पेश करेगा। उसने कास्पियन सागर के अलग अलग हिस्सो में खारापन, उसके तापमान और भिन्न भिन्न गहराइयो में आक्सिजन तत्त्व सम्बन्धी ग्राफ दिखाये। ये सब कुछ उसके निजी पर्यवेक्षणो के नतीजे थे। अपनी वैज्ञानिक रिपोर्ट के सिलसिले में उसने यह भी बताया कि कैसे उसके दल की नौका तूफान के चक्कर में पड गयी थी, कैसे वह एक तरह से डेक पर से बहते बहते बच गया था, कैसे उन्होंने गहरे जल में रहनेवाली एक विचित्र मछली पकडी थी जो डेक पर झटके से खींच कर लाते ही फट गयी और इसी तरह की ढेर-सी दिलचस्प बाते।

इस मडली की अपनी परिषद् है जिसका निर्वाचन, मडली के सदस्य करते है। इसका वर्तमान अध्यक्ष चतुर्थ वर्ष का एक छात्र, लेव जोतोव है। मडली के कार्य-कलापो का पथ-निर्देशन एक प्रख्यात समुद्रविज्ञानी, प्रोफेसर न० जुबोव करते है।

मडली की अपनी खास पत्रिका है जिसमें दिलचस्प आकडे और लेख रहते है। उनसे पता चलता है कि ११८ बैठके हुई जिनमें १३९ रिपोर्टे पेश की गयी और उन पर बहस की गयी। ९६ रिपोर्टे छात्रो ने पेश की और बाकी रिपोर्टे वैज्ञानिक कर्मियो, समुद्रविज्ञान-उपविभाग एव अन्य शोध-सस्थाओ के प्रोफेसरो, नाविको, उत्तरी सागर-मार्ग के कर्मचारियो और ध्रुवीय उडाकुओ ने पेश की। बहुत-सी दिलचस्प रिपोर्टो मे, 'ओब' जहाज़ के डेक पर किया गया जलविज्ञान सम्बन्धी शोध-कार्य तथा अन्तार्कटिक की यात्रा के बारे में भी एक रिपोर्ट थी। इस रिपोर्ट को, अभियान के एक सदस्य तथा सोवियत

संघ की विज्ञान अकादमी के समुद्रविज्ञान संस्थान के एक कर्मचारी न० मिरोञ्कीन ने पेश किया था।

मडली की वैठकों में सभी—प्रोफेसरो और छात्रो—को अपने विचार प्रगट करने तथा मंडली के सदस्यों के कार्यो की टीका-टिप्पणी करने का समान अविकार प्राप्त है।

वैज्ञानिक विचार-गोष्ठियो का भी आयोजन लगभग इसी ढग से होता है। उनके कार्य-कलाप भी पाठ्य-क्रम में शामिल नही है। फर्क केवल इतना ही है कि विचार-गोष्ठी के ऊपर परिषद् की व्यवस्था नहीं है। इसके कार्य-कलापो का मार्ग-प्रदर्शन कोई वैज्ञानिक करता है और वहा पढी जानेवाली रिपोर्टों में नये और स्वतन्त्र वैज्ञानिक विचार अवश्य होने चाहिए। गणित एव यन्त्रशास्त्र विभाग में अकादमिशियन अ० कोल्मोगोरोव द्वारा प्रतिपादित संभाविता-सिद्धान्त के वारे में आयोजित वैज्ञानिक विचार-गोष्ठी की चर्चा सुनी जा सकती है। इस विचार-गोष्ठी को काम करते अव कई दशाब्दिया वीत गयी।

छात्रो के उत्तम निवध वैज्ञानिक पत्रिकाओ में प्रकाशित होते है और विभागीय एवं विश्वविद्यालय की वार्षिक प्रतियोगिताओ में सर्वोत्कृष्ट वैज्ञानिक निवधो के लिए पुरस्कार भी दिये जाते है और नगर भर में उनका सामान्य प्रदर्शन किया जाता है।

स्वतन्त्र प्रयास के राजपथ पर

अव मैं स्नातको के वारे में, पचम वर्प के छात्रो के वारे में वताऊगा। मैं सोचता हू कि उनके स्नातकीय थीमिस के वारे में कुछ कहने की जरूरत नहीं। स्वरूप में, वे उनके वार्पिक निवन्धों मे थोडा

भिन्न होते है पर उनमें अधिक स्वतन्त्रता और परिपक्वता रहती है। छात्र अपने स्नातकीय थीसिस की पुष्टि कैसे करते है, यह जानकारी काफी दिलचस्प होगी।

लेकिन कहा से आरभ किया जाय? यह न भूले कि हमारे विश्वविद्यालय में १२ विभाग है और हर विभाग में १० से ३० तक उपविभाग है तथा हर उपविभाग में पचम वर्ष के १० से ५० विद्यार्थी है। मिसाल के लिए, भौतिकशास्त्र विभाग में पचम वर्ष के ४२४ छात्र ऐसे है जो इसके निम्न उपविभागो—साख्यिकि भौतिकशास्त्र, इलेक्ट्रोडाइनामिक्स और क्वान्टम थियोरी, अणुन्यष्टि, कास्मिक किरणो, अर्द्ध-सवाहको, आप्टिक्स, आस्सिलेशन थियोरी, ध्वनि-विज्ञान, रेडियो टेकनोलोजी, इलेक्ट्रोनिक्स के उपविभागो में शिक्षा प्राप्त कर रहे है। इसके अलावा अन्य १६ उपविभागो का उल्लेख यहा नही किया जा रहा है। अथवा मानव-विज्ञान विभाग के अन्तर्गत भाषाशास्त्र विभाग को ही ले लीजिये। यहा १८ उपविभाग है और उनके अन्तिम वर्ष में लगभग ३०० छात्र। अन्य विभागो की रूप-रेखा भी इसी तरह है।

स्नातको के लिए बेचैनी और चिन्ता से भरी अवधि वसत के आगमन के साथ शुरु होती है। उनके छात्र-जीवन की इस अवधि में उथल-पुथल मच जाती है—अपने स्नातकीय थीसिस की पुष्टि करनी पड़ती है, राजकीय स्नातक-परीक्षाओ में शामिल होना पडता है और अन्तत कार्य-भार ग्रहण करना पड़ता है। अलग अलग विभागो में इन घटनाओ के क्रम भी अलग अलग हो सकते है।

अब हम भौतिकशास्त्र विभाग में चले जहा यूरी जुकोव अपने स्नातक-थीसिस की आज पुष्टि करनेवाला है। आस्सिलेशन थियोरी विभाग के अध्यक्ष प्रो० कज़िमीर फ़ाल्तेविच तेओदोर्चिक का अध्ययन-

कक्ष ठसाठस भरा था। थीसिस की पुष्टि खुलेआम की जाती है। वहा खास कर पचम वर्ष के छात्रो की संख्या अधिक थी। उनके बैठने से सभी जगहे भर गयी थी और बाकी छात्र खुले दरवाजे पर भीड़ लगाये खडे थे। वे सब थोड़ा-बहुत घवडाये हुए-से दीखते थे— शीघ्र ही उन्हे भी इस चश्मावारी छात्र की तरह, कमीशन के सामने खडा होकर अपने थीसिसो की पुष्टि करनी पडेगी। और यह काफी डरनेवाली बात है क्योंकि कमीशन में लगभग सभी उपविभागो के अनुभवी वैज्ञानिक, आस्सिलेशन थियोरी एवं भौतिकशास्त्र की अन्य शाखाओ के गण्यमान्य विशेषज्ञ उपस्थित रहते हैं।

यूरी जुकोव मेज़ के पास खडा है। वह थोडा-बहुत घवड़ाया हुआ है और रह रह कर अपनी टाई सीधी कर रहा है। वह जल्दी जल्दी बोल रहा है मानो सब कुछ तुरत कह डालना चाहता है। ब्लैकबोर्ड तुरत विभिन्न प्रकार के रेखाचित्रों, सूत्रों और ग्राफो से भर जाता है। उसका विषय बहुत ही जटिल, दिलचस्प और रेडियो उद्योग के लिए व्यावहारिक मूल्य का है।

यूरी जुकोव खड़िया का टुकडा रख देता है, आखिरी सूत्र को संक्षेप में समझाता है, कुछ उसमें जोडना चाहता है लेकिन बोर्ड की ओर देखते हुए कहता है:

"बस इतना ही मुझे कहना था।" कज़िमीर फ़ात्सेविच मेज़ के पीछे से उठ कर बोलते हैं:

"कोई सवाल?"

लगभग दो मिनट तक खामोशी बनी रहती है। यूरी डेस्क के पास खड़ा रहता है और उपस्थित लोगों की ओर देखता हुआ इन्तज़ार करता रहता है। उसके दो दो प्रतिवादी – उपविभाग का एक स्नातकोत्तर छात्र और एक प्रोफेसर – मैदान में आने की तैयारी में

कागज पर कुछ लिख रहे थे। तब कमीशन के एक सदस्य ने सवाल किया .

"साथी जुकोव, क्या आप कृपया यह बतायेंगे कि इस सूत्र में प्रतिस्थापन के लिए आपने आकडे कैसे प्राप्त किये ?"

"मैंने अनेको जाचो के फलस्वरूप इन्हे प्रयोगात्मक रूप से प्राप्त किया।"

"परीक्षण-उपकरणो के बारे में हम जानना चाहेगे। जहा तक मुझे याद है ऐसे परीक्षण यहा कभी नही किये गये थे।"

जुकोव के कार्य का मार्ग-प्रदर्शन करनेवाले प्रो० तेग्रोदोर्चिक ने बताया: "बहुत-से उपकरणो का रूपाकन खुद यूरी ने किया था। उनमें से कई तो बहुत ही दिलचस्प डिज़ाइन के है।"

"आपने अपने थीसिस पर कितना समय लगाया ?" किसी ने पूछा।

यूरी ने कुछ देर तक सोचा और तब जवाब दिया –

"एक साल से अधिक या ठीक ठीक कहा जाय तो लगभग डेढ साल। मैंने इस पर काम करना तभी से शुरू कर दिया था जब मै चतुर्थ वर्ष का छात्र था।"

"अपने शोध-कार्य में सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ आप क्या समझते है ?" कमीशन के एक सदस्य ने पूछा।

"सबसे महत्त्वपूर्ण ?" यूरी ने दोहराया और थोडी देर सोचने के बाद जवाब दिया "मेरे ख्याल से इसका व्यावहारिक महत्त्व। अति आवेपनाक सालो साल रडर, टेलीविजन, स्पेक्ट्रोस्कोपी आदि में उत्तरोत्तर महत्त्व प्राप्त कर रहे है।"

प्रश्नो की बौछार आगे नही बढी। प्रो० तेग्रोदोर्चिक बोलने के लिए उठे। प्रोफेसर तेग्रोदोर्चिक ने अपने छात्र द्वारा किये गये कार्यों

का सक्षिप्त विवरण पेश किया और उस छात्र के लिए 'अति परिश्रमी और होनहार भौतिकशास्त्री' जैसे विशेषण का प्रयोग किया।

तव नियमित प्रक्रिया के अनुसार प्रतिवादी सामने आये। उन्होंने सूत्रो में कुछ त्रुटियों की ओर इशारा किया और वताया कि गणनाओ को और भी सरल वनाया जा सकता था, लेकिन प्रवानत उन्होंने उस छात्र के कार्य की सराहना ही की।

अपने अन्तिम वक्तव्य में यूरी जुकोव ने प्रतिवादियो द्वारा सुझाये गये कुछ सशोवनो को मान लिया लेकिन शेप संशोवनो का डटकर विरोव किया।

तव कमीशन अपने निर्णय को ठोस रुप देने के लिए दूसरे कमरे में चला गया। कुछ छात्र कान लगा कर यह सुनने के लोभ का सवरण नहीं कर सके कि दरवाजे के भीतर इस संवंव में क्या वातचीत हो रही है। लेकिन गर्मागर्म वहस में सुनी जानेवाली ऊची आवाजें नही सुनाई पडी। अत. प्रत्यक्ष था कि कमीशन ने थीसिस का अनुमोदन कर दिया था। लेकिन ऐसा हमेशा नही होता। पांच मिनट वाद कमीशन अपने स्थान पर लौटा। कागज का एक टुकड़ा थामे कज़िमीर फ्रात्सेविच ने निर्णय का ऐलान किया—

"कमीशन सर्वसम्मति से यह स्वीकार करता है कि यूरी जुकोव का थीसिस उत्कृष्ट कोटि का है।" वृद्ध प्रोफेसर ने मुस्कराते हुए कहा—"कमीशन की ओर से मै साथी जुकोव को ववाई देता हू।"

हर कोई हृदय से सराहना करने लगा और वाहर गलियारे में जुकोव अपने मित्रो और सहपाठियो से घिर गया और वे उसे ववाइया देने लगे। उपविभागाध्यक्ष की वोली फिर से सुनाई पडी—

"अव हम रुस्ताम कुर्तमुलायेव का भी वक्तव्य सुनेगें जो आज अपने थीसिस की पुष्टि करनेवाले है... क्या आप इवर आने की कृपा करेंगे, साथी कुर्तमुलायेव।"

हलके रग का जैकेट पहने काली आखोवाला एक नौजवान ब्लैकबोर्ड की ओर तेज़ी से बढ़ा। वह एक उपकरण सबधी अपने शोध-कार्य का विवरण पेश करता है जिसकी सहायता से वह आइओनिज़ेशन प्रासेस की अवधि निश्चित करने में सफल हुआ है।

कुछ देर बाद वह भी खुशी से लाल होकर गलियारे में पहुचा और यूरी जुकोव को पीठ पर मारते हुए आनदविह्वल हो विचित्र उच्चारण के साथ बोला—

"मेरे थीसिस पर भी मुझे उत्तम अक प्राप्त हुए!"

फिर से बधाइयो और हाथ मिलाने की बाढ

उस दिन भौतिकशास्त्र विभाग के बहुत-से स्नातको के सिर पर खुशी और सफलता के सेहरे बधे। लेकिन ऐसे भी थे, हालाकि बहुत कम, जिनकी किस्मत ने साथ नही दिया।

* * *

हमारे देश के उच्च शैक्षणिक सस्थाओ के स्नातको को यह भय नही कि वे बेकार रहेंगे। सरकार यह देखती है कि जिस विद्यार्थी ने पाच वर्ष तक शिक्षा पायी है और जिसकी पढाई पर कुछ कम खर्च नही बैठा है, वह अच्छे काम में और फायदे के लिए अपनी शक्ति और ज्ञान का उपयोग कर सके।

अन्तिम राजकीय परीक्षाओ में बैठने के पहले ही पचम वर्ष के छात्रो को उनके विशेष ज्ञान के अनुसार काम सौंप दिये जाते हैं।

लेनिन पहाडी पर बनी नयी इमारत की १८ वीं मजिल उस दिन हुलास से उमगती रहती है। एक विशेष कमीशन आज भू-आकारविदो को काम सौंप रहा है। भूगोल विभाग के छात्र छोटी टुकडियो में जमा होकर अपने भावी कार्यो की संभावनाओ के बारे

में तथा विभिन्न कार्य-स्थलो पर भेजे जानेवाले विद्यार्थियो के चुनाव के बारे में बहस कर रहे हैं।

रह-रहकर एक महिला व्याख्यान-हॉल से बाहर निकलती है और प्रोत्साहन भरी मुसकराहट के साथ बारी बारी से छात्रो को भीतर प्रवेश करने के लिए आमन्त्रित करती है।

"अल्तुखोवा", महिला पुकारती है और स्नेह भरे शब्दो में कहती है—"अन्दर जाए, डरे नही।"

"शुभकामना!" उसके मित्र प्रसन्नतापूर्वक कह उठते है। ऐसी स्थिति में प्रोत्साहन की ज़रूरत ही है। पता नही आप ऐसे इलाके में काम करने के लिए भेजे जा रहे हो जिसे आप पसंद करते हो या नापसद करते हो। यह भी महत्त्वपूर्ण बात है कि किस पद पर आप भेजे जा रहे है और कितनी तनख्वाह आपको मिलेगी। ये सारी बाते अगले चन्द मिनटो में ही तय पा जायेंगी। और आपकी बेचैनी और घबडाहट स्वाभाविक है।

गलियारे में शोरगुल फिर ताज़ा हो उठता है।

"देखिये, यह मेरा विषय भी नही रहा है," भीड़ में से कोई बोल उठा, "और मै प्रयोगशाला में बैठे बैठे ऊब और अस्वस्थ-सा महसूस करने लगा हू। मै कार्य-स्थल पर जाना चाहता हू जहा सचमुच काम करना होता है।"

"और फायदे की दूसरी बात यह है," एक दूसरा व्यक्ति सुना रहा है, "कि मै वहां के हर आदमी को जानता हूं। व्यावहारिक कार्य के सिलसिले में अभियान दल के साथ मैं वहां दो बार हो आया हूं।"

"तुम खुशकिस्मत हो।"

तमारा अल्तुखोवा खुशी से लाल होकर कमरे से बाहर निकलती है। उसके चेहरे से स्पष्ट है कि उसका अनुरोध मान लिया

गया। जिस दीवाल पर सोवियत संघ का विशाल नक्शा टगा हुआ है उसके पास जाकर और खिड़की के दासे पर से एक छोटी-सी लाल झडी उठा कर तथा अपने चौओं के वल खडी होकर उस स्थान मे खोस देती है जहा 'नुर्वा' लिखा हुआ है। पूरा का पूरा नक्शा उसी तरह की झडियो से भरा हुआ है।

"ओहो, तुम्हारे हाथ भी वहा तक नही पहुच सके," किसी ने उदासी से कहा। प्रत्यक्ष था कि वह वहुत दूर जाना नही चाहता था।

"अच्छा, तमारा?"

"तुम कहा काम करोगी?"

"क्या कमीशन में वहुत-से लोग है?" प्रश्नो की झडी लग जाती है।

"मै अमाकिन अभियान दल के साथ काम करने जा रही हू," तमारा ने जवाव दिया। "वह याकूतिया में है। उसका सदरमुकाम नुर्वा में है। मेरी यही इच्छा थी।"

दूसरा छात्र उस कमरे में दाखिल होता है जिसमें कमीशन वैठा है। एक लम्वी मेज के इर्द-गिर्द लगभग १५ व्यक्ति वैठे है जिनमे विभागाध्यक्ष, भू-आकारिकी उपविभाग के प्राध्यापकगण, विभाग की पार्टी एव कमसोमोल व्यूरो के सदस्य, प्राचार्य-मडल की ओर से एक प्रतिनिधि तथा भू-आकारविदो में दिलचस्पी रखनेवाले विभिन्न मत्रालयो एव कई विभागो के प्रतिनिधि शामिल है। कमीशन के अध्यक्ष—विभागाध्यक्ष—विभाग की सिफारिश पढते है कि उस छात्र ने शोध-कार्य में पूर्ण अभिरुचि दिखाई है तथा वह एक अच्छा विद्यार्थी रहा है। तव आता है सामान्य प्रस्ताव—

"कमीशन आपको मास्को में रख सकता है। सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी के भूगोल-सस्थान मे आपके लिए एक स्थान है, साथी श्चेरवाकोव। वह आपके लिए अच्छा रहेगा?

लेकिन कमीशन की आशा के विपरीत उस छात्र ने इस प्रस्ताव को सुनकर खुशी प्रगट नहीं की। अब तक किसी ने भी मास्को में रह कर काम करने के प्रस्ताव को नहीं ठुकराया था।

"आपको मालूम हो जाय," छात्र ने शान्तिपूर्वक कहा, "कि मैं मास्को के किसी संस्थान में काम करना पसंद नहीं करता। मुझे ऐसा लगता है नगर में ज़रूरत से ज्यादा वैज्ञानिक हैं और व्यावहारिक कार्य-स्थलों पर उनकी बहुत कमी है। यदि सम्भव हो तो मुझे दूर के किसी कार्य-स्थल पर भेज दीजिये जहां मेरे जाने से अधिक फायदा हो सकता है।"

"अच्छी बात है," विभागाध्यक्ष ने मुसकराते हुए कहा। "कमीशन आपका अनुरोध निश्चय ही मान लेगा।" भू-आकारविदों की मांग सबंधी आवेदनों की लम्बी सूची देखते हुए विभागाध्यक्ष ने फिर कहा—"आपको उक्रइन जनतंत्र के राजपथ निर्माण-विभाग में भेजा जा सकता है। क्या आपके लिए यह अच्छा रहेगा?"

"बिलकुल," च्वेरवाकोव ने खुश होकर जवाब दिया। "इसमें मेरी अभिरुचि भी रही है।"

"ठीक है। हम आपकी सफलता की कामना करते हैं। अगले साल कुछ आवेदन भेजना न भूलियेगा ताकि उक्रइन में आपके साथ काम करने के लिए कुछ और भू-आकारविद भेजे जायें," विभागाध्यक्ष ने थोड़ा मज़ाक में ही कहा।

जब इगोर च्वेरवाकोव को इधर गलियारे में उसके मित्र बधाइयां दे रहे थे तो उधर कमीशन की लम्बी मेज़ के सामने एक दूसरा छात्र बैठ चुका था—बेचैनी और आशंकाओं से भरा हुआ तथा मुश्किल से अपने को संयत रखे हुए।

इसी तरह हमारे तरुण विशेषज्ञ विभिन्न कार्य-स्थलो पर भेजे जाते है। कमीशन स्नातक की इच्छाओ और उसकी पारिवारिक स्थिति को भी ध्यान में रखता है लेकिन सबसे अधिक ध्यान इस बात पर रहता है कि देश को विशेषज्ञो की आवश्यकता है। वैयक्तिक झुकाव और स्नातको की क्षमता एव योग्यता, छात्र-दम्पति की उपयुक्त पारिवारिक व्यवस्था, प्राय. ऐसे विषय है जिन पर कमीशन में सरगर्मी से वाद-विवाद चलता है। स्नातको के लिए वे दिन बेचैनी और खुशी से भरे होते है। लगभग हर छात्र अपनी पसद के काम पर मनचाहे स्थान में भेजा जाता है। कठिन होते हुए भी वे काम कितने आकर्षक है जिन्हें विश्वविद्यालय के भू-भौतिकविज्ञ, जल-विज्ञ और ध्रुवीय अन्वेषक करने जा रहे है। उनका कार्य उन्हे ध्रुवीयशिविरो, द्वीपो और आर्क्टिक के तटो पर खीच ले जायगा। उनमें ल्युदमिला सखारोवा, अन्तोनिना तरेयेवा और एमीलिया जोलुदेवा नामक तीन लडकिया भी है। उत्तर में काम करने के उनके अनुरोधो को पहले इस आधार पर अस्वीकार कर दिया गया था कि वहा काम करना उनके लिए बहुत कठिन होगा और वे उसे सभाल नही सकेगी। लेकिन लडकिया इसे मानने को आसानी मे तैयार नही थी। उन्होने उत्तरी समुद्र-मार्ग प्रशासन के प्रधान से मुलाकात की और अपने अनुरोध स्वीकार करा कर ही रही।

निस्सन्देह, ऐसे भी छात्र है जो अपने खराब स्वास्थ्य के आधार पर, हालाकि वे बिलकुल स्वस्थ होते है, मास्को में ही अपने मा-बाप की छत्र-छाया में रहने देने के लिए कमीशन से प्रार्थना करते है।

कभी कभी ऐसी कोशिशें सफल हो जाती है और प्रसन्न एव सन्तुष्ट 'तरुण विशेषज्ञ' मास्को में ही रह जाता है हालाकि उनको

मिलनेवाला काम हमेशा उपयुक्त और सर्वोत्तम नहीं होता। वैसी हालत में उसको ऐसा काम करना पड़ता है जिससे उसकी विशेष शिक्षा से कोई संबंध नहीं रहा है या वह बिलकुल काम ही करना छोड़ देता है। लेकिन उससे उसको परेशानी नहीं होती। उसके लिए तो सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वह मास्को छोड़ना नहीं चाहता। यह कहना अनावश्यक है कि ऐसे दकियानूसों को उनके सहपाठी शाबाशी नहीं देते। सौभाग्य से ऐसे छात्र बहुत कम हैं और सालोंसाल उनकी संख्या में कमी होती जा रही है। विश्वविद्यालय के अधिकांश स्नातक अपने देश के कल्याण और हित के निमित्त अपने ज्ञान का उपयोग करने के लिए उत्सुक हैं, उस देश के फायदे के लिए जिसने उनका पालन-पोषण करके उन्हें शिक्षित किया है और सभी क्षेत्रों में प्रथम श्रेणी के विशेषज्ञ बनने का उन्हें अवसर प्रदान किया है।

पर्यटन का मजा

व्यायामशाला में

थियेटर जाने की बात कैसी रहेगी ?

खबरदार! और नही तो छात्रों के व्यंग्य-पृष्ठो पर आप भी नजर आयेंगे

द्वितीय अध्याय

शरीर और मानस से स्वस्थ

जल उफन रहा था और उसमें भंवर उठ रहे थे। वर्षा के बाद पहाडी नदी उन्मादिनी की तरह गरज रही थी और पतले पथरीले बाघ पर सर पटक रही थी मानो उसे इस बात का क्रोध था कि मानव ने उसकी प्रचड धाराओ को रौंदने का दुस्साहस किया था।

भूतत्व-मडली के अन्य सदस्य अभी भी नदी के तट पर थे और घोड़ो पर सामान कस रहे थे। इस बीच दो छात्रो ने नदी का आधा कलेवर सतर्कता के साथ लाघ डाला। जिस घोडे पर ल्याद्या सवार थी उस घोड़े ने अपने कान फड़फडाये और कापने लगा क्योंकि तेज धारायें उसके पाव उखाड़ने लगी।

"डरो नहीं, ओजा, सब कुछ ठीक हो जायगा," ल्याद्या ने जानवर की गर्दन थपथपाते हुए पुचकारा। "देखो, हम आधी नदी तो पार कर चुके। बस थोडा और जोर लगा लो।"

घोडे ने कुछ और डगमग कदम बढाये और उसके पिछले पैर का खुर भीगे पत्थर पर से फिसल गया। बेचारा घोडा बुरी तरह हिनहिनाता हुआ अपनी सवार के साथ जल के भवरो के बीच जा गिरा। और उसके बाद सब कुछ जैसे बिजली के कौंधने की गति से गुजर गया। आगे का सवार अपने पीछे छपाक की आवाज सुनकर

मुड़ा और देखता क्या है कि ब्लाद्या बोगातोवा अपने घोड़े के साथ उफनते हुए जल से लड रही है और निकटतम पत्थर को पकड़ने की कोशिश कर रही है।

"बचाओ, बचाओ!" वह लड़की चिल्लायी।

वह केवल तीन मीटर की दूरी पर थी। सवार ने भय से विकृत उस लडकी के चेहरे और बड़ी बड़ी भूरी आंखों को साफ़ साफ देखा। लेकिन फासला तीन मीटर का होते हुए भी वह लाचार था–वह तैर नहीं सकता था। ब्लाद्या को बचाने का अर्थ था अपनी जान से हाथ धोना, खुदकुशी करना।

"ब्लाद्या, ब्लाद्या, तैरते रहने की कोशिश करो," वह घबड़ाहट से पीला होकर चिल्लाया। "साथियो, बचाओ, दौडो!"

लेकिन क्रूर नदी उस लडकी को डुबोने पर उतारू थी। ब्लाद्या का सर धाराओं के ऊपर चमका और उसके बाद सुनाई पड़ा एक आर्त्तनाद–" बचाओ!" और अगले क्षण वह भवरो के नीचे विलीन हो गयी।

यह १९५५ की गरमी की बात है जब अल्ताई मे वे एक पहाड़ी नदी को पार करने की कोशिश कर रहे थे। ब्लाद्या बोगातोवा मास्को विश्वविद्यालय के भूगर्भशास्त्र विभाग की स्नातिका थी और उसका साथी, जो संकट के क्षणो में उसकी सहायता नहीं कर सका, मास्को के भूगर्भशास्त्र और सर्वेक्षण संस्थान का विद्यार्थी था।

उसी गरमी में कई और छात्र अभियान दलो के साथ व्यावहारिक कार्यों के सिलसिले में अपनी जान से हाथ धो बैठे। इस दुखद घटना ने हमारी जनता को, खासकर हमारे तरुण वैज्ञानिकों, भूगर्भशास्त्रियो और भूगोलशास्त्रियो को विचलित कर दिया। बहुत-से समाचारपत्रो ने उसके कारणो का विश्लेषण किया। विद्यार्थियो की कई सभाओं में

इस पर वाद-विवाद हुआ। अधिकाश लोगो का मत यही रहा कि प्राकृतिक विभागो के एव विभिन्न भूगर्भशास्त्र-सस्थानो के स्नातक वाह्य शिविर-जीवन के लिए उपयुक्त नही थे।

"कल कठिन मजिल के लिये कूच करना है" शीर्षक एक लेख में वैज्ञानिको और मास्को विश्वविद्यालय के स्नातको ने लिखा—

"इस साल हमने अभियानो में तीन साथियो, तीन तरुण भूगर्भशास्त्रियो को खोया। मिल्या इस्कानोव नामक एक पचम वर्ष का छात्र चुकोत्का में बर्फ से जम कर मर गया। व्लाद्या बोगातोवा नामक एक होनहार भूगर्भ-वैज्ञानिका अल्ताई की एक पहाडी नदी पार करते समय डूब कर मर गयी। एक सर्वोत्तम छात्रा तथा कमसोमोल की सदस्या लेल्या दुल्नेवा, सलेखार्द के निकट एक नदी के निचले हिस्से में जान गवा बैठी। हमे इन आकस्मिक मृत्युओ से बहुत सदमा पहुचा है। हम केवल उनके सस्मरण में ही नही, बल्कि इस विश्वास के साथ यह उद्गार प्रगट कर रहे है कि ऐसी दुर्घटना से बचा जा सकता था।

भूगर्भशास्त्रियो को हमेशा खतरो का सामना करना पडता है। हमें मालूम है कि मिल्या की तरह वे बर्फ से जमकर मर सकते हैं या पहाड़ी नदी पार करते वक्त प्राण गवा सकते हैं। लोग तो इसे दुर्घटना मात्र ही कहेगे। लेकिन इसपर गौर-विचार करने की जरूरत है। इसका कारण केवल दुर्घटना-स्थलो पर ही नही, बल्कि विश्वविद्यालय में भी ढूढने की जरूरत है। जब व्लाद्या बोगातोवा नदी में गिरकर डूब गयी तो उसका पडोसी, जो मास्को भूगर्भशास्त्र सस्थान का छात्र था, उसे बचा नही सका क्योकि वह तैर नही सकता था। यह कितने दुख की बात है कि अभियान पर जानेवाला एक भूगर्भशास्त्री तैर नही सकता और इसके कारण उसका क्या भयकर अजाम हो सकता है इसे सोचकर ही रोगटे खडे हो जाते है।"

6*

प्राकृतिक विज्ञान विभाग के छात्रो की व्यायाम-शिक्षा पर काफी गर्म वाद-विवाद के वाद विभिन्न विभागो और व्यायाम-शिक्षा विभाग के कार्यक्रमो में काफी हेर-फेर किये गये है।

हमारे विश्वविद्यालय के खेल-कूद और व्यायाम-शिक्षा में काफी सुधार हुए है। इसके वारे में मै अगले अध्याय में वताऊँगा।

स्वस्थ और सवल होना आवश्यक है

ग्रीष्मकालीन व्यावहारिक कार्य के लिए छात्र मास्को के पास क्रास्नोवीदोवो गाव में जाते है। सूर्य डूव रहा है। अपने व्यावहारिक कार्य के वाद एक एक कर छात्र जगल से वाहर निकल रहे है। शिविर, जीवन की हलचल से भर उठता है। ठीक छ. वजे घटी वज उठती है। लोहे के एक टुकडे को खभे में लटका कर घंटी वना ली गयी है।

"ग्रूप २१५! सड़क की ओर। आज मोटर-साइकिल चलाने का अभ्यास।"

"ग्रूप २०२! नदी किनारे। नदी पार करने की शिक्षा।"

"ग्रूप ११०! अस्तवलो के पास। आज घुडसवारी की ट्रेनिंग।"

कुछ मिनट वीत चले और शिविर में ट्रेनिंग ज़ोर-शोर से चालू हो गयी। फाटक के पास मोटर-साइकिल की फटफटाहट सुनाई पड़ती है। सुनहरे वालोवाली एक लडकी उसपर सर्र से गुज़रती दिखाई पड़ती है। वह उत्तेजना से लाल हो उठी है। कोई १५ छात्र खड़े खड़े अपनी वारी का इन्तज़ार कर रहे है। सामने की ओर से साइकिलों पर आता हुआ छात्रो का एक दल सर्र से गुज़र जाता है।

नदी का तट अट्टहासों से गूज उठता है। रह-रहकर ज़ोर से

छपाके का शब्द सुनाई पडता है—नदी के आर-पार गाडे हुए लकडी के कुन्दे पर छात्र अपना सतुलन खो बैठते है। कुछ दूर पर एक छात्र एक रस्सी के सहारे सावधानी से सरकता जा रहा है—वह रस्सी दोनो किनारो पर पेड़ो में बांध दी गयी है। कई मीटर नीचे नदी का नील जल वह रहा है और जल की सतह पर सध्याकालीन बादलो की परछाई पड़ रही है तथा एक नाव नि शब्द सरकती चली जा रही है।

"डाडो को इतना गहरा न डुबाओ," ट्रेनर नाव खेनेवाले छात्रो को इशारा करते हुए बोला।

अस्तबल मे भी काफी हलचल है। कई छात्र एक घोडे के पीछे पीछे दौड़ रहे है। लगता है जैसे आधे घटे के अन्दर उस गरीब जानवर पर बीसियो बार लगाम कसी गयी थी। आखिरकार घोडा थककर बेदम हो गया, एक छात्र का हाथ काट खाया और जगल की ओर भाग चला। जगल में उसे पकड पाना ज्यादा आसान था। यह सब तमाशा देखकर एक साईस क्रोध में चिल्ला उठा—

"मै यह नही बर्दाश्त कर सकता कि सब छात्र मिलकर गरीब जानवर को सतायें। केवल एक छात्र घोडे का लगाम कसे और बाकी छात्र चुपचाप खडे होकर देखते रहे कि यह कैसे होता है। घोडा भी आखिर एक जीव है, कोई मशीन नही।"

कुछ समय बाद एक लडका जगल से बाहर निकला और उसके पीछे पीछे उद्विग्नता जाहिर करते हुए वह घोडा। छात्र उसपर सवारी कसना और सामान लादना सीखेंगे तथा यह भी सीखेंगे कि बीहड़ रास्तो से लद्दू घोडो को कैसे हाकना चाहिए।

इस साल खेल-कूद की शिक्षा और भी अधिक दिलचस्प रही है। भूगर्भशास्त्री, भूगोलशास्त्री और जीवशास्त्री जिनका मुख्य समय अभियानो और अन्वेषणो मे व्यतीत होता है, पूरी तरह महसूस करते

है कि उनके लिए यह सब ट्रेनिंग कितनी महत्त्वपूर्ण है। इसी लिए और शायद दिलचस्पी के कारण भी हमारे छात्रो ने बडे उत्साह से अनिवार्य व्यायाम-शिक्षा लेनी शुरू की है।

विश्वविद्यालय की व्यायाम-शिक्षा के कार्य-क्रम में भारी परिवर्तन किये गये है। एक साल पहले सभी छात्रो के लिए व्यायाम-शिक्षा का कार्य-क्रम एक जैसा ही था, चाहे उसमें उनकी रुचि रहे या न रहे। अतः यह स्वाभाविक था कि उनमें से बहुतो को यह नीरस जान पडता था और वे यथासभव उससे कतराने की कोशिश करते थे। लेकिन अब बात ही दूसरी है। जैसे ही नये छात्र विश्वविद्यालय में दाखिल होते है उनसे उनकी पसद के खेल-कूद के बारे में पूछा जाता है।

वे हमेशा अपना निर्णय तुरत नही दे पाते। साल के शुरू मे लड़के और लड़कियो को विश्वविद्यालय की खेलकूद-परिषद् के अध्यक्ष के कमरे में आते-जाते देखा जा सकता है। उन सबो के साथ निम्न बातचीत होती है—

"देखिये, मैंने स्कूल में कभी किसी खेल-कूद में भाग नही लिया। आप क्या सुझाव देंगे?"

"तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है?"

"इससे अच्छा और क्या होगा?"

"अच्छा तो तुम्हारी ऊचाई और मजबूत काठी को देखते हुए तुम्हे बास्केट-बॉल एव वाली-बॉल खेलने और तैरने की सलाह दी जाती है। हां, तुम कहां के रहनेवाले हो?"

"मै मास्कोनिवासी हू।"

"बहुत अच्छा, तब इनके अलावा मै साइकिल-सवारी का भी सुझाव दे सकता हूं।"

"मै वास्केट-वॉल के खेल का शौकीन हू और विभागीय टीम का कोई भी खेल देखे विना मै नही रहता। मेरा ख्याल है कि मुझे वास्केट-वॉल का खेल आजमाना चाहिए, और यदि मुझे नही जचा तो मै कोई दूसरा खेल पसद करूगा। क्या यह सभव है?"

"निस्सन्देह! लेकिन मुझे विश्वास है कि तुम्हे वास्केट-वॉल का खेल पसद आयेगा। चलो, समय-सारणी देखकर पता लगायें कि तुम्हारे विभाग की वास्केट-वॉल टीम कब अभ्यास करती है। तुम रसायन-विभाग में हो न? यह अभ्यास हफ्ते में दो वार, हर मगल और वृहस्पतिवार को सात वजे सध्या से शुरु होता है।"

इस प्रकार एक अनुभवी खिलाडी या ट्रेनर की मदद से लडका और लडकी प्रथम दो वर्षो के लिए अनिवार्य रूप से खेल-कूद का चुनाव करते है और उसके वाद वह उनकी मर्जी पर निर्भर करता है। प्रथम दो वर्षो के अन्दर छात्र अपने खास खेल-कूद के अभ्यास के लिए हफ्ते में दो वार हाजिर होते है और दूसरे साल के अन्त में उसकी परीक्षा देकर उन्हे कम से कम तीसरी श्रेणी (निम्नतम श्रेणी) अवश्य प्राप्त करनी चाहिए। ऐसे भी वहुत-से छात्र है जो अपने स्कूल के दिनो से ही खेल-कूद में सक्रिय भाग लेते रहे है, अत वे पहले साल के वीतते न वीतते दूसरी श्रेणी और कभी कभी प्रथम श्रेणी भी प्राप्त कर लेते है।

प्रथम दो वर्षो के अन्दर छात्र से आशा की जाती है कि वह ग० त० ओ० वैज (श्रम और रक्षा के निमित्त तैयार) के लिए परीक्षाओ में उत्तीर्ण हो जाय। सोवियत सघ में व्यायाम और खेल-कूद के इतिहास, अपने को स्वस्थ रखने के तरीके, डूबने, लू लगने, हड्डी टूटने, मोच लगने आदि में प्रथमोपचार और व्यायाम-रचना एव प्रशिक्षण सम्वन्धी सैद्धान्तिक कोर्स के अलावा खेल-कूद की कई

परीक्षाए भी शामिल है, जैसे कम और विचली दूरी की दौड, ऊंची या लम्बी कुदान, स्किइग, फेंकना, चढना, तैरना, पुरुषो के लिए राइफल चलाना आदि।

अर्द्धवार्षिक अवधि के अन्दर छात्र को अपनी पसंद के खेल-कूद की परीक्षा में जरूर पास हो जाना चाहिए (हमारे यहां इसके चार उपविभाग है. व्यायाम और खेल-कूद के व्यावहारिक स्वरूप, जल के खेल-कूद और पर्यटन, मैदानो के और जाडो के खेल-कूद और आखेट)। ग० त० ओ० कार्यक्रम के अधीन दो या तीन परीक्षाओं में जरूर उत्तीर्ण होना चाहिए और अपनी मर्जी से चुने गये खेल-कूद का कुछ अभ्यास करते रहना चाहिए। मिसाल के लिए, व्यायाम की शिक्षा पानेवाले छात्र को अर्द्धवार्षिक परीक्षा पास करने के लिए ग० त० ओ० के निश्चित कार्यक्रम और हारीजान्टल-वार, लांग-हॉर्स फ्लाइंग रिग आदि पर कसरत करके दिखाना चाहिए।

अनिवार्य व्यायाम-शिक्षा का उद्देश्य है छात्रो को शरीर से स्वस्थ रखना। उसके साथ साथ उसका उद्देश्य है छात्र में उसकी पसद के खास खेल-कूद में शौक जगाना ताकि वह भविष्य में अपने साथ काम करनेवाले लोगों के वीच उस खेल-कूद को लोकप्रिय वना सके। और प्राकृतिक विज्ञान विभाग मे, जैसा कि पाठको को पता चल गया होगा, इस व्यायाम-शिक्षा का उद्देश्य है छात्रो को उनके अभियानो में व्यावहारिक-कार्यों के उपयुक्त और अनुकूल वनाना।

* * *

लेनिन पहाडी पर स्थित मास्को विश्वविद्यालय का प्रसारण-केन्द्र हर सुवह उन कसरतो को प्रसारित करता है जो गर्मियो में मैदानो मे और जाडो में गलियारो में करायी जाती है।

सबसे पहले चीनी छात्र बाहर कसरत करने लगे। अतिरिक्त भाषा का अध्ययन के कारण, हमारे छात्रो की अपेक्षा उनका दैनिक कार्यक्रम लम्बा होता है। अत अपने को स्वस्थ रखने के लिए वे नियमित रूप से व्यायाम करते है। गर्मियो और जाड़ो में लोमोनोसोव स्मारक के पास के मैदान में दर्जनो चीनी लडको और लडकियो को ताल-लय सहित भिन्न भिन्न प्रकार से व्यायाम करते देखा जा सकता है।

इस अध्याय में मैंने जो कुछ अब तक व्यायाम-शिक्षा के विभिन्न स्वरूपो के बारे में कहा है, वे सब अनिवार्य है (प्रात कालीन व्यायाम को छोडकर) और पाठ्य-क्रम के अन्तर्गत है। लेकिन इनके अलावा भी हमारे छात्र विभिन्न खेल-कूदो में भाग लेते है और यहा के छात्रो का खेलकूद-क्लब देश भर में सबसे बडा समझा जाता है। अब हम क्लब में चलकर देखें कि उसकी विभिन्न शाखाओ में कैसे ट्रेनिग दी जाती है और प्रतियोगिताए की जाती है।

मास्को विश्वविद्यालय के खेलकूद-क्लब में

जब मै सगमरमर की खडी सीढियो से उतर रहा था तो मुझे पानी की छपछप और आह्लादपूर्ण स्वर सुनाई पडे। तैरने का कुड तेज रोशनी में जगमगा रहा था।

जल के खेल के शौकीनो से दर्शक दीर्घा ठसाठस भरी हुई थी। उनकी बातचीत से पता चला कि उस दिन राजधानी की कई उच्च शैक्षणिक सस्थाओ के छात्र मास्को 'बुरेवेस्तनिक' खेलकूद-समाज की तैराकी चैम्पियनशिप के लिए एकत्रित हुए थे। जब मै पहुचा तो तुरत पुरुषो के लिए २०० मीटर की सीधी तैराकी प्रतियोगिता शुरू हुई। लगता था जैसे पानी को मथा जा रहा हो। दर्शको की उत्तेजना

पराकाष्ठा पर थी। विश्वविद्यालय के चिन्ह सहित नीली टोपी पहने एक तैराक सबसे आगे निकला। दर्शकगण चिल्ला उठे—

"शाबाश बोरीस!"

"अपनी करामात दिखाओ!"

"विश्व-वि-द्या-लय! विश्व-वि-द्या-लय!" तैराक जैसे जैसे हाथ मारता था, वैसे वैसे विद्यार्थी भी आवाज़ें लगाते थे।

लेकिन अब उसको और जोश दिलाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। वह पानी को चीरता बहुत आगे निकल गया। अब उसे कोई नहीं पकड़ सकता। अपनी आख़िर मंज़िल पर पहुचने के समय अपने प्रतिद्वन्द्वियों से वह तीन मीटर आगे था।

पत्रकारिता विभाग के पंचम वर्ष का छात्र चैम्पियन बोरीस चेरनिशोव हांफते हुए पानी से बाहर निकला। उसके चेहरे पर विजय की मुस्कान थी। उसकी विजय ने मास्को विश्वविद्यालय की अव्वल तैराक-टीम की ख्याति में चार चांद लगा दिये। बोरीस चेरनिशोव से बड़ी बड़ी आशाएं की गयी थीं और उसने अपने साथियो को निराश नहीं किया।

और भी कई तरह की तैराकी प्रतियोगिताए हुई और अंत में प्रतियोगिता ख़त्म हुई। शाबाशी और प्रशंसा के शब्दों से गौरवान्वित 'बुरेवेस्तनिक' चैम्पियनशिप का विजेता मास्को विश्वविद्यालय का अव्वल तैराक-दल एक पंक्ति में खडा हो गया।

कई पदको से सुशोभित सफ़ेद सूट पहने एक लम्बा-सा व्यक्ति हर तैराक को हार्दिक बधाई देता है। यह विश्वविद्यालय की तैराक और वाटरपोलो की चुनी हुई अव्वल टीमों का प्रशिक्षक, सम्मानित खेल-आचार्य लेओनीद मेशकोव है। वह बहुत बार सोवियत संघ का चैम्पियन रह चुका है तथा संसार में अपना रेकर्ड क़ायम कर

चुका है। वह बीस सालो तक सोवियत सघ के सर्वोत्तम तैराकों में से एक रह चुका है और अखिल सघीय चुनी हुई टीम का सदस्य भी। वह छाती के बल तैरने रेंगने और तितली की तरह तैरने में १३० से अधिक सोवियत सघ, यूरोप और ससार के रेकर्ड कायम कर चुका है। लेओनीद मेशकोव अब मास्को विश्वविद्यालय में जल के खेल-कूद और पर्यटन-उपविभाग में सीनियर शिक्षक है। बोरीस चेरनिशोव जैसे बहुत-से अव्वल दर्जे के खिलाडी उनसे दीक्षित हो चुके है।

प्रतियोगिताए तो खत्म हो गयी लेकिन तैरने के कुड पर अभी भी चहल-पहल है। जल को धारियो में बाटनेवाले नल जल्दी जल्दी हटाये जा रहे है। खेलकूद-प्रशिक्षक अलेक्सान्द्र मिखाइलोविच सेको की देख-रेख में छात्र कूदने का अभ्यास करेंगे। सेको नौसिखियो और अनुभवी खिलाडियो को ट्रेनिंग देते है।

"ठहरो।" उन्होंने एक लडकी को सावधान करते हुए कहा जो पाच मीटर ऊचे कूदने के पटरे पर से छलाग लगाने की तैयारी कर रही थी। "देखो, तुम कैसे खडी हो गाल्या! चौओ के बल खडी हो, पटरे के छोर के करीब, और करीब। हा, अब ठीक हो।" सीटी बजती है। अपने सर के ऊपर हाथ फैलाये हुए और बदन ताने हुए गाल्या ने छलाग मारी। जैसे ही वह पानी की सतह छूनेवाली थी कि उसने पैर पसार दिये और एक गहरे छपाके के साथ पानी का फौव्वारा उडाते हुए जल में गिर पडी।

"फिर वही बात!" प्रशिक्षक उससे कहता है—"तीन मीटर ऊचे कूदने के तख्ते से छलाग लगाओ। तुम्हें अभी भी जल से भय लगता है।"

"मैं नही जानती ऐसा क्यों हो जाता है," गाल्या ने अपराधी की तरह कहा—"पानी के पास पहुचते ही मुझे ऐसा लगता है

कि मैं ठीक से नहीं गिर रही हूं। और मुझ में डर समा जाता है।"

तैरने के कुंड मे मैं बॉक्सिंग हॉल में गया। ज़ोर-शोर से ट्रेनिंग चल रही थी। एक छात्र भारी बोरे पर निर्ममतापूर्वक मुक्के बरसाये जा रहा था, दूसरा न्यूमेटिक पर और तीसरा उछलने की रस्सी से अभ्यास कर रहा था। कई छात्र मुक्केबाज़ी का अभिनय कर रहे थे— प्रहार, बचाव और काल्पनिक प्रतिद्वन्द्वी के विभिन्न अंगो पर भिन्न भिन्न तरह से प्रहार करने की नकल कर रहे थे। चारो तरफ देखने से लगता था जैसे कोई नृत्य का अभ्यास किया जा रहा हो। हर आदमी अपना खास खास अभ्यास कर रहा था और कुल मिलाकर एक जटिल दृश्य की झांकी मिलती थी। अखाड़े में दो मुक्केबाज़—एक नीली पोशाक में और दूसरा विश्वविद्यालय के चिन्ह सहित लाल गंजी और काला जांघिया पहने—एक दूसरे पर वार कर रहे हैं। नीली पोशाकवाले उस खिलाड़ी के करतब को देखकर सचमुच बडा मज़ा आ रहा है। उसकी गति कितनी लचीली है। वह तेज़ी से कतराकर निकल जाता है और उसका 'विपक्षी' हवा में मुक्के चलाने लगता है। 'विपक्षी' पर लगातार मुक्को का प्रहार बिजली जैसी तेज़ी के साथ होने लगता है। अपने पेट से अपनी केहुनियो को सटाये वह लड़का शरीर को चोट से बचाये रखता है लेकिन मुंह पर ज़बर्दस्त घूसा लगता है। मुक्केबाज़ हताश होकर सुस्त पड़ जाता है। लेकिन नीली पोशाकवाला लड़का अपनी विजय को दृढ करने की कोशिश नही करता। इसके विपरीत वह पैंतरे बदलता है, पीछे हटता है और अपना बचाव करता है। मैं देख रहा हूं कि प्रशिक्षक मुसकरा रहा है और मार खाते हुए लड़के को प्रोत्साहित कर रहा है।

"वोरोन्तसोव, अपनी करामात दिखाओ। सर और शरीर पर वार करो। उसे रस्सी से सटा दो।"

"आप मुस्करा क्यो रहे है," मैंने प्रशिक्षक वीक्तोर ओगुरेन्कोव से पूछा।

"मै वालेरी सुर्गुचेव की प्रशसा किये विना नही रह सकता। वह वडा अच्छा खिलाड़ी है। वह वार करता है पर ख्याल रखता है कि जव उसका 'प्रतिद्वन्द्वी' सुध-वुध खोकर लडखडाने लगता है तो विजय के मुक्के वरसाने के वदले वह अपने प्रतिद्वन्द्वी को प्रोत्साहित करता है, अपने वारो से उसे सभलने देता है और उसे वार करने का मौका देता है। लेकिन वह ऐसा वहुत चालाकी से करता है ताकि उन लडके की भावना को चोट न पहुचे। वह वडा ही नेक आदमी है। इसी लिए वह वहुत लोकप्रिय है।"

"वक्त खत्म!" घडी की ओर देखते हुए प्रशिक्षक चिल्लाता है। मुक्केवाज़ी का दगल खत्म होता है। सुर्गुचेव, वोरोन्तसोव के कधो को अपनी वाहुओ में कसे हुए कहता है–

"जव तुम प्रहार करना चाहते हो तो तुरत पता चल जाता है। तुम पहले ही अपनी वाह थोडा नीचे कर लिया करते हो। मै इसे देखते ही कतरा जाता हू और तुम्हारे वार हवा में वरसने लगते है। समझे मेरी वात?"

"विल्कुल सच," वोरोन्तसोव ने स्वीकार किया।

"और अपना सर हमेशा नीचे रखने की कोशिश करो," सुर्गुचेव ने एक शिक्षक के लहजे में नही वल्कि मदद करनेवाले दोस्त के लहजे मे कहा। "ध्यान रखो, तुम्हे चकमा देकर वार करना चाहिए।"

जव मैंने सुर्गुचेव से कहा कि वह अपने वारे में कुछ कहे तो उसने मुस्कराते हुए कहा– "क्यो नही कज़्वेक तुनेपोव से इन्टरव्यू करते?"

खेल-आचार्य होते हुए भी मुर्गुचेव, उसे बेहतर मुक्केबाज़ समझता था।

"तुम दोनों में से किसी के बारे में भी ये लिखें, इससे कोई "फर्क नही पडता," शिक्षक ने टोका। "तुम दोनो साथी हो, अखाडे में तुम दोनो कमाल करते हो। सो, इससे भागने की कोशिश न करो।"

"मै तुलेपोव के बारे में भी लिखूगा," मैंने मुर्गुचेव को आश्वासन दिया।

वालेरी ने मुझे बताया कि वह २४ वर्ष का है। मास्को की ट्रेड-यूनियन प्रतियोगिता का तथा 'नऊका' खेल-समाज का वह चैम्पियन रह चुका है। हाल ही में, वर्ष के भीतर पन्द्रह अव्वल दर्जे के मुक्केबाज़ो को परास्त करने के बाद वह सोवियत सघ के खेल-आचार्य की पदवी से सम्मानित किया गया है। तीन विभिन्न खेल-आचार्यो को परास्त कर देने के बाद या देशव्यापी चैम्पियनशिप में पहला, दूसरा या तीसरा स्थान प्राप्त कर लेने के बाद खेल-आचार्य की पदवी मिलती है। वह विधिशास्त्र विभाग में पंचम वर्ष का छात्र है। आजकल वह मास्को में एक अभियोक्ता के कार्यालय में व्यावहारिक कार्य करते हुए अपने थीसिस के लिए सामग्रियो का सकलन कर रहा है।

"कुछ ही दिन हुए कि मेरी शादी हुई है," वालेरी ने आगे कहना शुरू किया—"मेरी पत्नी भी विधिशास्त्र की छात्रा है लेकिन वह चतुर्थ वर्ष में है।"

"और अब मुक्केबाज़ी का क्या होगा?" मैंने पूछा।

"ओह, इसे कभी नही छोडूगा।"

"वालेरी," प्रशिक्षक ने हम लोगों के पास आकर आवाज़ लगायी। "तुलेपोव से दो-दो हाथ और हो जाये तो क्या हर्ज?"

मुर्गुचेव ने उठते हुए मुझसे कहा—

"शादी के उपलक्ष्य में हमारे यहा रविवार को प्रीतिभोज है। कृपया पधारे। मेरी पत्नी आपसे मिलकर बहुत खुश होगी।"

मैं खुद मुक्केबाज़ी का अभ्यास कर चुका हू और कई मशहूर मुक्केबाज़ो को देख चुका हू। उनमें से बहुत तो अखाडे मे केवल जमाना चाहते थे। वालेरी में मैंने वैसा कुछ नही देखा। उसके मृदु और विनम्र स्वभाव से आपके ऊपर उसके एक मुक्केबाज़ होने से अधिक संगीतज्ञ होने का प्रभाव पडता है।

तुलेपोव अखाडे मे उतर चुका था। वह दुबला था लेकिन मजबूत और अपने विपक्षी से वजन में हल्का तथा टेकनिक के दृष्टिकोण से एक बेहतर मुक्केबाज़ था। कज़ाख, तुलेपोव अधिक संयमी, 'तीक्ष्णबुद्धि' और सतर्क था। वह ठीक से खडा था, अपना सिर नीचे किये हुए। वह अपने विपक्षी की हर गतिविधि को ठीक से आक रहा था। वालेरी अपना निशाना खो बैठता था क्योंकि तुलेपोव बहुत फुर्तीला था। अपना हाथ उठाते हुए वह वालेरी से बोला—

"आखिरी वार के पहले बहुत लम्बा विश्राम मिलता है। दम मारने की जरूरत नही। फिर से कोशिश करे।" और वालेरी फिर से वार करना शुरू कर देता है और आखिरकार निशाना ठीक बैठता है।

"हमारे ये मुक्केबाज साथी," प्रशिक्षक ने कहा— "शिशिरशास्त्री और भौतिकशास्त्री है। तुलेपोव स्नातकोत्तर छात्र है और शीघ्र ही अपने थीसिस की पुष्टि करेगा। यह कहना तो अभी मुश्किल है कि वह कैसा वैज्ञानिक निकलेगा लेकिन वह एक पक्का मुक्केबाज है—हाल मे मास्को के छात्रो की प्रतियोगिताओ में अपने वजन की श्रेणी में वह अव्वल रहा। सुर्गुचेव ने भी भाग लिया, लेकिन अपने वजन की श्रेणी मे नहीं, और उसे दूसरा स्थान मिला। सोवियत संघ के १९५४ के चैम्पियन एक बहुत मजबूत मुक्केबाज़ से वह हार गया। लेकिन वह

हतोत्साह नही हुआ और कसकर तैयारी कर रहा है। शायद, वदला ले ले।"

दूसरे हॉल में कुश्ती लडनेवाले अभ्यास कर रहे थे। एक वड़ी-सी मुलायम दरी पर एक दूसरे से गुथे हुए शरीर इधर से उधर लुढक रहे थे। वाकी पहलवान दिलचस्पी से यह तमाशा देख रहे थे।

"वस काफी हुआ, मैं हार मानता हू," नीचे दवे हुए पहलवान ने हाफते हुए कहा।

"तुम अपना हाथ इस तरह क्यो रखते हो," उसे पांवो पर खडा करते हुए उसके साथी ने पूछा– "यह ऐसे होना चाहिए। दर्द होता है?–यह एक सवसे अच्छा तरीका है।"

उक्त वाते वतानेवाला व्यक्ति कोई पेशेवर प्रशिक्षक नही है। जॉन देस्कट नामक फ्रासीसी, आर्टस्कूल का स्नातक है जो विश्वविद्यालय के भाषाशास्त्र विभाग में रूसी भाषा और साहित्य का अध्ययन करने के लिए मास्को आया हुआ है। फ्रांस में किसी एक प्रदेश का वह जुजित्सु चैम्पियन था और खेल-आचार्य की प्रतीक 'काली पेटी' का विजेता। वह अपना अभ्यास यहा भी जारी रखे हुए था और हमारे पहलवानो को जुजित्सु की कला सिखा रहा था।

उस हॉल से गुज़रने के वाद, जहा ग्रीक-रोमन कुश्ती हो रही थी, मैंने अपने को एक विस्तृत व्यायामशाला में पाया। वॉस्केट-वॉल की टीम अपना अभ्यास अभी अभी खत्म कर रही थी। वे थके हुए से लगते थे और इधर-उधर दौड़ते हुए वेपरवाही से वॉस्केट में गेन्द फेंक रहे थे। अचानक हॉल के एक कोने में किसी ने पियानो पर मार्च की धुन वजानी शुरू की और धुन के साथ साथ हॉल कसरतियो से भर गया। कुछ ही मिनटो में व्यायामशाला का रूप-रंग ही विलकुल वदल गया। एक हिस्से में हर प्रकार के सामान प्रगट हो गये–हारीजांटल और पैरेलल वार,
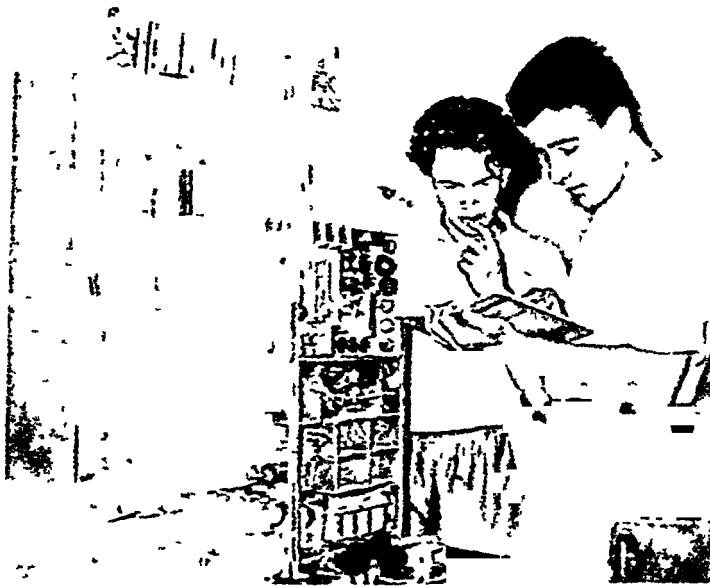
खरीदने से अधिक मज़ा है अपना टेलीविजन खुद तैयार करने में

भारत का यह स्नातकोत्तर छात्र और उनका सहपाठी सोवियत छात्र मोटरसाइकिल चलाने का आनंद लेते हुए

मंध्या के समय

छात्रावास के रसोईघर में

अपनी मातृभूमि बर्मा के बारे में बताते हुए इसे कितनी खुशी हो रही है

मिश्र देश के छात्र रूसी भाषा सीखते हुए

वूम और फ्लाइंग रिंग। दूसरे हिस्से में दरी बिछा दी गयी जिस पर काली पोशाक पहने हुए लडकियां कई कतारों में खडी हो गयी। वाल्ज़ की धुन पर वे बडे आकर्षक ढंग से कसरत करने लगी।

विश्वविद्यालय में विभिन्न क्रीडा-भवन है लेकिन फिर भी वे खेल-कूद के शौकीनों की जरूरतें पूरी करने के लिए काफी नही है। मौलिक योजना के अनुसार केवल छ प्राकृतिक विज्ञान विभागों के छात्रों के लिए ही ट्रेनिंग पाने की व्यवस्था थी। लेकिन पुरानी इमारत में जगह की कमी के कारण मानव-विज्ञान विभाग के छात्रों के लिए भी यहा जगह बनानी पडी। इसी लिए कभी कभी ऐसा होता है कि कलात्मक व्यायाम और खेल-कूद की शिक्षा साथ ही साथ एक ही हॉल में चलती रहती है।

बाहर निकलते समय मुझे रास्ते में एक बडा-सा बोर्ड मिला जिसपर खेलकूद-क्लब की सूचनाएं और इश्तहार चिपकाये हुए थे। उन्हे देखने मात्र से ही छात्रों के खिलाडी-जीवन की व्यस्तता का पता चल जाता है। एक इश्तहार में याट के शौकीनों को बताया गया था कि वे जाडे के महीनों का उपयोग थियोरी पढने में करें; एक इश्तहार मे यह बताया गया था कि अगले रविवार को एक अन्तर्विभागीय खेल-प्रतियोगिता होगी। उस दिन स्किइंग प्रतियोगिता होगी। पहाडों पर स्किइंग करनेवालों को क्लब के सामान-घर से नये विशेष जूते ले लेने के लिए सलाह दी गयी थी। बोर्ड के सबसे ऊपर लिखा था—'फाउलस' और उसके नीचे—'विश्वविद्यालय टेबुल-टेनिस चैम्पियनशिप की प्रतियोगिता शनिवार को तीन हॉलोंवाली इमारत के छोटे-से हॉल में होगी। उसमें आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।"

इसी बोर्ड पर यह भी सूचित किया गया था कि इसी दिन बास्केट बॉल-चैम्पियनशिप की प्रतियोगिता शुरू होगी। बास्के

7—1203

विश्वविद्यालय की टीम और 'ज़ेनीत' खेलकूद-समाज के बीच होड़ है। लेनिन पहाड़ी पर तीन हॉलोंवाली इमारत में यह प्रतियोगिता होगी। प्रतियोगिता का समय ... और मैंने अपनी घड़ी की ओर देखा। मैच शुरू हुए काफी समय बीत गया था। लेकिन उस दिन दस टीमें खेल रही थी, अतः कम से कम आखिरी मैच तो मैं देख ही सकता था।

जल्दी से अपना कोट डालकर मै चौड़ी सीढ़ियों से उतरता हुआ सडक पर पहुंचा। वहा से तीन हॉलोंवाली इमारत तक पहुंचने में मुझे १० मिनट लगे। द्रुत फॉक्स-ट्रॉट की सजीव धुन ठंढी हवा में तैर रही थी। दाहिने और बायें, बर्फ का विस्तार रोशनी में जगमगा रहा था। अकेले और जोड़े स्केटरो का दल हसते हुए खूब आनद ले रहा था।

जल्दी जल्दी मै तीन हॉलोंवाली इमारत मे पहुंचा। इसका नाम ऐसा इसलिए पड़ा कि इसमें खेल-कूद के तीन बड़े बड़े हॉल हैं—व्यायाम, वॉली-बॉल और बॉस्केट-बॉल के लिए अलग अलग हॉल है। गर्मियो में वॉली-बॉल और बॉस्केट-बॉल बाहर मैदान में, खेले जाते है जो जाड़ो में स्केटिग-मैंदान बन जाता है। दूसरा स्केटिंग-मैदान विश्वविद्यालय का फुटबॉल-मैदान है।

बहुत कठिनाई से दर्शकों की ठोस दीवाल पार कर मै जाली के पास पहुंचा जहां पंच बैठा हुआ था। चुनी हुई अव्वल टीमें खेल रही थीं। जब मैं पहुचा तो आखिरी टीमें खेल रही थीं। मेरे बगलगीर ने बताया कि ९ टीमें खेल चुकी है और विश्वविद्यालय को छ मैचो में विजय मिली और तीन में हार। मै उस समय पहुचा जब कि पुल्पो की टीमो की दूसरी बाज़ी ख़त्म हो रही थी। पहली बाज़ी में हमारी जीत हुई थी। दूसरी बाज़ी का नतीजा १३-३ था। तीन मिनट बीतते न बीतते वह बाज़ी भी हमारी ही होकर रही।

टीमों ने स्थान बदले। पंच ने सीटी बजायी और तीसरी बाज़ी शुरू हुई। हमारे वॉली-वॉल के खिलाडी गजब कर रहे हैं। दूसरी ओर 'ज़ेनीत' के प्रशंसक उदास मन से खामोश हैं क्योंकि 'ज़ेनीत' को हार पर हार मिलती जा रही है। विश्वविद्यालय की टीम के समर्थक उत्तेजना से चिल्ला रहे हैं। वलेन्तीन जख़ारोव, टीम का कप्तान वॉल फेंक रहा है। ओह, कितनी शक्ति और युक्ति के साथ वह वॉल को जाली के ऊपर से तैराते हुए फेंकता है!

विश्वविद्यालय की प्रथम चुनी हुई टीम को, छात्रों की टीम कहना अधिक उपयुक्त नहीं होगा। इसके चार खिलाडी स्नातकोत्तर छात्र और कैंडिडेट हैं। मिसाल के लिए, वलेन्तीन जख़ारोव, भौतिकशास्त्र विभाग का स्नातकोत्तर छात्र है।

उसके थीसिस का विषय 'ट्रेसर एटम्स' है। उसने एक साल की छुट्टी ले रखी है ताकि वह खेलकूद-क्लब के बोर्ड-अध्यक्ष के रूप में काम कर सके। विश्वविद्यालय के वार्षिक खेलकूद-सम्मेलन में वह अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। क्लब के बारे में विस्तारपूर्वक आगे बताया जायेगा।

"आओ, साथियो, इन्हें दिखा दें कि हम किस मिट्टी के बने हैं," निकोलाई कोर्स्ते नामक भौतिकशास्त्र विभाग का एक अन्य स्नातकोत्तर छात्र अपनी टीम के साथियों को उत्साहित करते हुए कहता है। वह सैद्धान्तिक भौतिकशास्त्र उपविभाग में अध्ययन कर रहा है और क्वान्टम इलेक्ट्रोडाइनामिक्स पर स्नातकोत्तर थीसिस तैयार कर रहा है। वह वार भी अच्छा करता है लेकिन बचाव में उसने भी अधिक माहिर है। अभी अभी उसने एक नीचा गेंद (लो वॉल) फेंककर दर्शकों को हैरत में डाल दिया है। उस गेंद को उसने नम्बर ४ के पास बढ़ा दिया और यह लो—एक और गोल! वॉल फिर फेंका जाता है और इस

७*

फिरकर कोर्स्त के पास आता है और वह तुरत नम्बर ४ के पास वढा देता है। और फिर तालियो की गड़गड़ाहट। इस वार टीम के सर्वश्रेष्ठ फॉरवर्ड रादीक खोमुतोव को श्रेय मिला। रादीक खोमुतोव एक तरुण वैज्ञानिक है। उसने हाल में अपने स्नातकोत्तर-थीसिस की पुष्टि की और रसायनशास्त्र-कैंडिडेट की डिगरी प्राप्त की।

'ज़ेनीत' टीम के खिलाड़ी जान लड़ाकर खेलते है और वदला चुकाना चाहते है। पहला गोल। नतीजा है—९.१। दूसरी तरफ से शावाशी की आवाज़ें आती है। फिर वॉल आता है लेकिन इधर पहुचने के पहले ही व्लादीमिर सोकोलोव लपककर उसे 'ज़ेनीत' टीम की ओर लौटा देता है। विश्वविद्यालय के प्रशसक खुशी से चिल्ला उठते है। व्लादीमिर सोकोलोव, जो जीव-विज्ञान का कैंडिडेट और एक कुशल फॉरवर्ड है, अपने स्थान पर फिर से चला जाता है।

भौतिकशास्त्र विभाग के चतुर्थ वर्ष का छात्र वीक्तोर सेर्वीन और रसायन विभाग के पचम वर्ष का छात्र फेलिक्स याकूशिन वहुत अच्छी तरह खेलते है।

दूसरी ओर शावाशी की आवाज़ें कमज़ोर होती जा रही है। इससे विलकुल स्पष्ट है कि 'ज़ेनीत' टीम तीसरी वाजी भी हार चुकी है। केवल रह-रहकर कुछ दर्शक कराह उठते हैं—"ओह, उधर क्यो नही वढा दिया!" गोल पर गोल चढता जा रहा है। पच की सीटी वजती है और तीसरी वाज़ी खत्म होती है। नतीजा है—१५ ५। दोनो टीमें कतार में खड़ी होती है।

"'जेनीत' टीम, सलाम!"

"विश्वविद्यालय टीम, सलाम!" उत्तर में सुनाई पड़ता है।

वॉली-वॉल विश्वविद्यालय का एक वहुत ही लोकप्रिय खेल है। ४०० से अधिक छात्र वॉली-वॉल के खिलाड़ी है। केवल केन्द्रीय

विश्वविद्यालय शाखा में लगभग १२० छात्र और विभिन्न विभागीय शाखाओ में २० से ३० छात्र तक यह खेल खेलने के लिए आते है। पर्यटन के वाद लोकप्रियता में इसका दूसरा स्थान है। पुरुषो की प्रथम टीम वहुत पुरानी है और उसे विजय का सेहरा वहुत वार मिल चुका है, हारे भी मिली है। परन्तु जीतो की याद से ज्यादा खुशी होती है। लगातार तीन वर्षों से (१९४९, १९५० और १९५१ में) विश्वविद्यालय की चुनी हुई टीम, उच्च शैक्षणिक सस्थाओ की मास्को चैम्पियनशिप हासिल करती रही है। उसके वाद कुछ वर्षों तक उसकी किस्मत ने साथ नही दिया। १९५९ में उसने फिर चैम्पियनशिप हासिल की। जिस लखे के वारे में मैंने अभी जिक्र किया है वह ग्रूप २ के लिए मास्को चैम्पियनशिप का आरम्भिक खेल था। इस चैम्पियनशिप के लिए इस ग्रूप में आनेवाली सभी वॉली-वॉल टीमो ने भाग लिया—केवल छात्रो की टीम ने ही नही। मिसाल के लिए, 'ज़ेनीत' एक फैक्टरी-टीम है।

मास्को विश्वविद्यालय का खेलकूद-क्लव देश में छात्रो का सवसे वडा क्लव है। इस क्लव को सभी खेल-प्रेमी जानते है। राजधानी के स्टेडियमो, मैदानो और व्यायामशालाओ में होनेवाली विभिन्न प्रतियोगिताओ में विश्वविद्यालय के चिन्हसहित क्लव के नीले झडो को देखा जाना एक आम वात है। केवल मास्को में ही नही। लेनिनग्राद, किएव, तूला, खार्कोव मतलव कि नगर की, जनतत्र की या सोवियत सघ की चैम्पियनशिप की किसी भी होड में विश्वविद्यालय के खिलाडियो को देखा जा सकता है।

क्लव में सदस्यो की सख्या ८००० से ज्यादा है। इसकी तीन से अधिक विभिन्न शाखाओ में खिलाडी, देश के लोकप्रिय विभिन्न खेल-कूदो—मैदानी खेल, पहाड़ो की चढाई, वॉस्केट-वॉल, फुटवॉल, पट्टेवाज़ी, स्किइग, पहाडी पर स्किइग, याटिंग इत्यादि—की

शिक्षा पाते हैं। खिलाड़ियों को सिखाने के लिए लगभग एक सौ अनुभवी प्रशिक्षक हैं जिनमें से अधिकांश अपना रेकर्ड पहले कायम कर चुके हैं और खेल-कूद के संसार में विदेशों के लोग भी उन्हें जानते हैं।

मुक्केबाजी की शाखा, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, सोवियत संघ के सम्मानित क्रीड़ा-प्रशिक्षक वीक्तोर ओगुरेन्कोव के अधीन है जो सोवियत संघ के अत्यंत लोकप्रिय प्रशिक्षकों में से एक हैं। उन्होंने हमारे कई सर्वोत्तम मुक्केबाजों को तैयार किया है। विश्वविद्यालय के निशानेबाज, वसीली गोर्दूक से शिक्षा पाते हैं। वे सोवियत संघ की उस चुनी हुई राइफल टीम के प्रशिक्षकों में से एक हैं जिसने ओलिम्पिक खेलों में भाग लिया था। उनके शिष्यों में रसायन विभाग की एक छात्रा और खेल-आचार्या जेलेको है जो देश का रेकर्ड कायम कर चुकी है और १९५६ में सेना, वायुसेना और नौसेना स्वयंसेवक समाज की चैम्पियन रह चुकी है। दूसरा शिष्य खेल-आचार्य वादीम पंफीलोव हैं जो भूगोल विभाग का छात्र है तथा १९५६ में युवक समुदाय के सोवियत संघ का चैम्पियन।

हर साल विश्वविद्यालय से अच्छे अच्छे खिलाड़ी निकल रहे हैं। निम्न आंकड़ों से इसका पता चलेगा—१९५६ में इसके २१ खिलाड़ियों को सोवियत संघ के 'खेल-आचार्य' की पदवी मिली, जबकि १९५५ में केवल १३ खिलाड़ियों को ही यह सौभाग्य प्राप्त हुआ था। अधिकांश खिलाड़ी विदेशों की प्रतियोगिताओं में भी भाग लेते हैं। मिसाल के लिए, विश्वविद्यालय की वाटरपोलो टीम, जर्मन जनवादी जनतंत्र गयी थी जहां उसने विजय का सेहरा बांधकर अपना चमत्कारपूर्ण खेल दिखाया। पत्रकारिता विभाग का छात्र एवं खेल-आचार्य एदुआर्द बोरीसोव, मेलबोर्न के ओलिम्पिक खेलों में शामिल किया गया था।

रसायन विभाग की छात्रा एव खेल-आचार्या नताशा येलिमेयेवा की गिनती विश्व के दस सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में की जाती है। उसने ८० मीटर की बाधा दौड (हर्डल रेस) १०.६ सेकड में पूरी की थी।

कुल मिलाकर ५० छात्र ऐसे है जिन्हे खेल-आचार्य की पदवी मिली हुई है और सेर्गेई सल्नीकोव नामक एक छात्र ऐसा है जिसे सम्मानित खेल-आचार्य की पदवी से विभूषित किया गया है। वह ओलिम्पिक चैम्पियन है तथा उसकी गिनती सोवियत सघ के चुनिन्दे ग्यारह फुटबॉल-खिलाड़ियो में मशहूर 'इनसाइड लेफ्ट' के रूप में की जाती है। वह पत्रकारिता विभाग का छात्र है।

विभागीय शाखाओ का सगठन अधिक लोकप्रिय खेल-कूदो—वॉली-वॉल, बॉस्केट-वॉल, हॉकी, स्किइग, व्यायाम, टेवल-टेनिस, स्केटिग, शतरज आदि—के अनुसार किया जाता है। सर्वश्रेष्ठ खिलाडी केन्द्रीय शाखाओ में शामिल किये जाते है जहा उन्हे विश्वविद्यालय की खेल-कूद सवधी प्रतिष्ठा को ऊचा वनाये रखने का अधिकार प्राप्त है।

खेल-कूद की सवसे वडी शाखा है—पर्यटन शाखा। इसमें छात्रो, स्नातकोत्तर छात्रो और शिक्षको की सख्या डेढ हज़ार से अधिक है।

हर साल खेल-कूद का वार्षिक समारोह होता है जिसमें सभी विभाग अपने सर्वश्रेष्ठ खिलाडियो को उतारते है तथा 'मास्को विश्वविद्यालय' नामक समाचारपत्र के पुरस्कार के लिए हर वसत में रिले रेस होता है। यह कहना अनावश्यक है कि इस प्रकार की दौड वहुत-से दौडाको और दर्शको को आकृष्ट करती है। यह होड़, लेनिन पहाड़ी की नयी इमारत के चारो तरफ की पक्की सड़कों पर वहुत तीव्र और उत्साहपूर्ण हो उठती है और उतनी देर के लिए यातायात विलकुल ठप्प पड जाता है। खेल-कूदो में भी और रिले रेस में भी सवसे अच्छे

नतीजे, दो मुख्य प्रतिद्वन्द्वी—भौतिकशास्त्र विभाग और रसायनशास्त्र विभाग—प्राप्त करते हैं।

हर साल की फरवरी में विश्वविद्यालय का खेलकूद-क्लब एक सम्मेलन आयोजित करता है जिसमें वोर्ड के सदस्य उस साल के अपने कार्य सम्बन्धी रिपोर्ट पेश करते हैं और छात्र मंडली में से सदस्यों का एक नया वोर्ड निर्वाचित किया जाता है। व्यायाम-शिक्षा उपविभागों के साथ उक्त वोर्ड विश्वविद्यालय के खेल-कूद सम्बन्धी समस्त कार्य-कलापों का मार्ग-प्रदर्शन करता है।

खेल-कूद सम्बन्धी सर्वोत्तम सुविधाए और साधन, आर्थिक संपन्नता, खेल-कूद के प्रति प्रेम और दिलचस्पी—ये सब मिलकर मास्को विश्वविद्यालय के खेल-कूद की उन्नति के लिए उत्कृष्ट अवसर प्रदान करते हैं और इन अवसरों से अधिक से अधिक फायदा उठाया जाता है।

मंज़िल की खोज

"तैगा को घने धुंध ने घेर रखा था और देवदार तथा चीड के विशाल वृक्ष नज़र नहीं आ रहे थे। उस दुविधा शून्य में राह टटोलते और कमर भर गहरी दलदल में लथपथ करते जब हमें तीन दिन हो गये तो हमने महसूस किया कि हम अपना रास्ता खो बैठे हैं," विश्वविद्यालय के एक पर्यटक विताली कोन्नोव ने उस गरमी में तैगा की अपनी यात्रा के बारे में सुनाते हुए कहना शुरू किया।

"मुश्किल तो यह था कि हमारा आगे बढना भी कठिन हो गया क्योंकि गीले और कीचड़ में सने हमारे कपडे शरीर में बुरी तरह सट जाते थे। स्थिति को समझते हुए हमने निश्चय किया कि हम सभी छ: जने क्यों मुसीबत भुगतें! बुद्धिमानी तो इसी में है कि मंज़िल का

पता लगाने के लिए तीन जनो का एक दल वनाया जाये और चट हमने उसे कार्य रूप में परिणत भी कर दिया। तदनुसार तीन जने आगे वढे और यह तय हुआ कि वे अपने पीछे निशान छोड़ते जायेंगे ताकि उनका अता-पता लग सके। हम वाकी लोगो ने पडाव डाला, कपड़े सुखाये और अपने साथियो के लौटने की वाट जोहने लगे।

"दूसरे दिन जव दल असफल होकर लौटा तो तोल्या पोल्याकोव ने अपने सफरी झोले से वोदका की एक वोतल निकालकर खीसे निपोरते हुए कहना शुरू किया—

"'साथियो, अव तक किस्मत हमें धोखा देती रही है। लेकिन कोई पर्वाह नही। आज हम मजिल ढूढ कर ही रहेगे। आज मेरा जन्मदिन है। मैं आज २१ साल का हो गया और जन्मदिन अपने साथ हमेशा खुशकिस्मती लाता है।'

"अपनी निराशा और गम भूलकर हमने उसे हार्दिक वधाइया दी। उसके स्वास्थ्य की कामना करते हुए जाम चढाया और यदि आप उसे तोहफा कहे तो तोहफा भी दिया—एक जगली मुर्गा, जिसका हमने शिकार कर पड़ाव की आग में खूवसूरती के साथ भून डाला था।

"'पहले-पहल मैं अपना जन्मदिन ऐसी जगह मना रहा हू जिसका अता-पता भी मुझे मालूम नही,' तोल्या ने वक्र मुस्कान के साथ कहा! 'खैर मै जानकर ही रहूगा!'

"पता नही यह सयोग था या इसलिए कि तोल्या यह जानने के लिए उतारू था कि वह अपना जन्मदिन कहा मना रहा था, किस्मत साथ देती हुई-सी जान पडी। खैर उसी दिन शाम होते होते दूसरा दल, जिसकी वह अगुवाई कर रहा था, खुशी खुशी पडाव पर लौटा और हमने अनुमान लगा लिया कि सव कुछ ठीक है। अलवर्ट मोलोदोव की पेटी से दो जगली वतखें लटक रही थी।

"'हम तीन-चार घंटों तक चलते रहे,' तोल्या ने कहना शुरू किया, उसकी आँखें चमक रही थी। 'वोल्गा हम लोगों के साथ थी, वह आगे आगे दौड़ रही थी और जंगली वत्तको और मुर्गो पर भूक रही थी। अचानक वह गुर्राने लगी और झाड़ियो को पार करती हुई झपटी। कुछ ही मिनट वाद उसकी चीत्कार सुनाई पड़ी। हम लोग यह देखने के लिए दौडे कि उसे क्या हो गया। एक खुले मैदान में पहुचने पर हमने देखा कि दो सुन्दर साइवेरियन कुत्ते, उसे दवोचे हुए थे। ऐसे कुत्ते तो विना मालिक के तैगा में नही भटकते फिरते। अभी हम लोग उन्हे खदेड़ ही पाये थे कि तीन औरते प्रगट हुई जिनके कधो से वंदूके लटक रही थी और जो पाइप पी रही थी। वे शिकारी औरते मानसी जाति की थी जो तैगा के उन हिस्सो में रहती है। हमने उन्हे सिगरेट भेंट किये और इशारे से समझाया कि हम अपना रास्ता खो वैठे है। आध घटा वीता और हम राह पर थे। हमसे विदा लेते हुए उन्होंने कुछ मुस्कराकर कहा और हमें ये दोनो मुर्गे भेंट किये। आओ साथियो, छककर खायें-पीयें और सवेरा होते होते कूच करे।'

"सवेरा होने के लिए हमें वहुत देर तक इन्तजार नही करना पड़ा। उत्तरी उराल में जुलाई में रात वहुत छोटी होती है। आधी रात के लगभग सूरज का यह लाल चक्का जगलो की किनारी लगे क्षितिज में तिरोहित होता है। रात घिर आती है। दो घटे वीतते न वीतते, जहा सूरज डूवा था उससे थोडा हटकर दाहिनी तरफ, उजाला फैलने लगता है और प्रकृति, जो अभी मुश्किल से ही झपकी ले पायी थी, वालरवि की किरणो में नहा उठती है . .

"कई दिनो तक हम कम्पास और नक्शे की मदद से आगे वढ़ते रहे और अन्त में एक ऐसे महत्वपूर्ण स्थल-चिन्ह पर पहुचे जो नक्शे में नदी के रूप में इंगित था। वह विजाय नदी थी। हमारा रास्ता

इसके किनारे किनारे गया था। जहा तक हमारी दृष्टि जाती थी, वहा तक घने हरे देवदार, चीड और लार्च के वृक्षो से आच्छादित उराल के आदिम और भग्न पहाड़ नजर आते थे। यहा-वहा शिखरो ने बर्फ की टोपी पहन रखी थी।

"हमारा रास्ता वडा वीहड था। इस हिस्से में नदी वहुत ही प्रचड और खतरनाक है। जगल और चट्टानें मानो इसके तटो से चिपका दी गयी हो। यहा पर नाव आदि चलाने का सवाल ही पैदा नही होता था, इसलिए हम तैगा से होकर और चट्टाने लाघते हुए अपनी राह वढते गये। रात में हमपर मच्छडो और छोटे छोटे पतगो ने हमला वोल दिया। इन पतगो की भयकरता को जानने के लिए गर्मियो में तैगा में विचरने की जरूरत पड़ेगी। देहातो में इन पतगो की खुराफातो से इनकी कोई तुलना ही नही। ओह कितने भयकर है ये तैगा के लुटेरे! वे लगातार भनभनाते हुए वादलो के रूप में आप पर टूट पडते है, आपके कपडो में घुस जाते है और भयकर रूप से काटना शुरु कर देते है। आपका अग अग फूल जाता है और चेहरा तो इस तरह लाल होकर सूज जाता है कि आपको पहचानना मुश्किल हो जाता है।

"हमारे खाद्य-पदार्थ कम होते जा रहे थे। हम अपने राशन की मात्रा में कटौती करने लगे। जगली मुर्गिया हमारे पल्ले नही पडती थी। तभी एक दिन सयोग से जव हम लोगो ने एक नदी में झाककर देखा तो इधर-उधर चक्कर लगाती मछलियो का समुदाय नजर आया। वहा पानी की गहराई घुटने भर से अधिक न थी। हम खुशी से नाच उठे। मछली के मजेदार सूप की कल्पना करते हुए हमने मछली पकडने की वसी निकाली। लेकिन एक भी मछली हमारे पल्ले पड़ती नजर नही आयी। तव हमने पानी में गोली दागने की कोशिश की। लेकिन व्यर्थ। हताश होकर हम लोग छड़ियो से पानी

को पीटते हुए आगे वढ़े। कदराओं में रहनेवाले हमारे पूर्वज ऐसा ही करते होंगे। हम छ·जने मछलियो को पकड़ पाने की आशा में जल में छडिया पीटते वढते गये। पर निष्फल। वेदम होकर हम सास लेने के लिए तट पर वैठ गये और सोचने लगे कि इस धरती पर कम से कम एक भी मछली कैसे पकड़ी जाये।

"'यदि हमारे पास एक छोटा-सा जाल भी होता,' ब्लादीमिर मस्त्रुकोव बोला-'तो हमारे पास मछलियों का ढेर लग जाता।' "अहा!" मार्क पेरेल्सोन अचानक चीख उठा-'यदि मै आध घटे के भीतर कडाही मछलियो से न भर दू तो मेरा नाम पेरेल्सोन नही। कड़ाही तो क्या वोरो में कसने के लिए मछलिया मिल जायेंगी! लेकिन एक शर्त है कि तुम लोग मेरा हुक्म आख मूदकर वजा लाओ और जरा भी ची-चपड न करो।'

"'वहुत अच्छा!' हम एक साथ चिल्ला उठे क्योंकि हम मछली के सूप के लिए उतावले हो रहे थे।

"'विताली और द्मीत्री कोन्नोव, मोलोदोव और पोल्याकोव,' मार्क ने आदेश दिया-'तम्बू को नदी के तल से सटाकर वाध दो और उसका मुह धारा की ओर कर दो। कोई सवाल-जवाव नही,' उसने हमारी आखो में चमक देखते हुए कहा। 'जल्दी करो! मै और मस्त्रुकोव इस वीच उन छडियो को इकट्ठा करते है जिन्हे तुम लोगो ने गुस्से में फेंक दिया था।'

"हम ठढे पानी में घुसकर निर्देशानुसार तम्बू ठीक करने लगे और नदी के तल मे उसे सटा दिया। हमने अन्दाजा लगा लिया कि मार्क क्या खदेड़ रहा था। पतली नदी के पूरे पाट को तम्बू के मुह ने ढक रखा था। मार्क ने हम लोगो को छडिया देते हुए मछलियो को तम्बू में खदेडने के लिए हुक्म दिया।

"शोर-गुल करते हुए, पानी के छीटे उडाते हम पानी में कूद पडे। मार्क तट पर से आदेश दे रहा था। तब उसने छड़ियो को फेंक देने और तम्बू को तट पर खींच लाने का आदेश दिया। कहने से अधिक मुश्किल करना था—तम्बू में एक टन से कम पानी न होगा। लेकिन हम हाफते हुए भी जोर लगाकर उसे खीचते गये। जब-तब एक-दो मोटी-ताज़ी मछलिया तम्बू के खुले भाग से उछलकर पानी में समा जाती थी।

"'मछलिया भाग रही है!' मार्क गुर्राया—'निठल्लो, ज़रा जोर लगाकर खीचो!'

"आधा तम्बू अभी पानी में ही था कि मार्क ने एक गोता लगाया। कुछ देर तक तम्बू के भीतर से बुलबुलो के सिवा कुछ नही दिखाई पडा। और तब अचानक तम्बू के खुले भाग से एक के बाद एक मछलिया किनारे पर बरसने लगी। तम्बू हलका होता गया। गहरी सास लेकर हमने मार्क और छ बड़ी मछलियो सहित उस तम्बू को उठाकर किनारे पर पटका। कहने की जरूरत नही कि बडी शानदार दावत रही।

"कुछ दिनो के बाद हम एक पहाडी दर्रे के पास पहुचे। इसके आस-पास ही कही यूरोप और एशिया के बीच हद मिलती थी। रास्ता आसान हो गया। हमने राह पकडी।

"वोल्शाया मोइवा और विशेरा के सगम पर हमारी मुलाकात पर्यटको से हुई। वे चार जने थे जिनमें एक लडकी भी थी। हम एक दूसरे से मिलकर बहुत खुश हुए। इतने दिनो के बाद वे ही पहले इसान थे जिनसे हम मिले। हमने परस्पर परिचय प्राप्त किया और हमने बताया कि हम सभी, केवल एक मेरे भाई को छोडकर, मास्को विश्वविद्यालय में रसायन विभाग के छात्र है। वे लेनिनग्राद पोलीटेकनिकल संस्थान के छात्र थे।

"१५० किलोमीटर से अधिक दूरी हम पैदल तय कर चुके थे और आगे ४०० किलोमीटर का फासला जल-मार्ग से तय करना था। हम सुवह नदी किनारे पहुचे और तुरत एक वेडा वनाने लगे ताकि रात घिरने के पहले हम कूच कर जायें। काम में कच्चा होने के कारण, तीसरे दिन रात को ११ वजे हम दो वेड़ो पर रवाना हुए। सवसे नज़दीक की आवादी ८०-९० किलोमीटर दूर थी और हम वहा जल्द से जल्द पहुचना चाहते थे क्योकि हमें भूख ज़ोरो से सता रही थी। हमारे वेड़े तेज़ी से भागे जा रहे थे। जव-तव वे चट्टानो से टकरा जाते या जल से सरावोर हो जाते और तव हमें अपनी राइफलो, झोलो और तम्बू को वचाने की चिन्ता करनी पड़ती।

"अन्त में हमें पहला गाव दिखाई पड़ा और हम उतर पडे। सामूहिक किसानो ने हमारा हार्दिक स्वागत किया। इन इलाको में पर्यटको का आना कोई नयी वात नही। हमारी सच्ची खातिरदारी की गयी। हमारे मेजवान मास्को के समाचार जानने को उत्सुक थे। हमने उन्हे नगर और विश्वविद्यालय के वारे में सुनाया और संसार की घटनाओं के वारे में एक अच्छा-खासा वक्तव्य ही दे डाला।

"अगले दिन साज-सामान से पूरी तरह लैस होकर, जिसमें एक मक्खन का टीन भी था, हम आगे वढे। इस वार नाव हाथ लग गयी, जिसे अपनी एक राइफल देकर हमने हासिल की थी। हमें वहुत-सी तेज़ धाराओं का सामना करना पडा। वे हमारी नाव को उलट देने पर तुली हुई थी।

"लेकिन सामान्यत., कई दिनो तक सफर अच्छा रहा। हम लोगो का वज़न भी वढने लगा. . और तभी किस्मत ने हमें दगा दिया। अभी अभी हम लोग शानदार भोजन खत्म करके दम मार रहे थे कि 'वोयेल्स' नामक चट्टान दिखाई पड़ी। स्थानीय गीतो में इस वात का ज़िक्र है कि न जाने कितनी नौकाएं इस चट्टान की

वलिवेदी पर चढ चुकी है। हममें से चार वलिष्ठ लोगो ने डाड सभाली। हर सेकड हमारी नाव की गति वढती जाती थी, हम चट्टान की ओर खीचे चले जा रहे थे जो जल के ऊपर एक भयकर दानवी की तरह खड़ी थी। अलवर्ट मोलोदोव के आदेश के अनुसार जो 'आवशिनास' का काम कर रहा था, हमने पूरी ताकत लगाकर डाड चलानी शुरू की ताकि हम उस धारा में न पडने पायें जो सीधे चट्टान पर ले जाकर पटकती थी।

"हम उस खतरनाक धारा से तो निकल गये लेकिन एक भयकर लहर में पड़ गये जिसने हमारी नाव उलट दी और हम वर्फीले जल में जा गिरे। नाव से चिपके हुए तीन लडके धारा के साथ वहने लगे। वाकी तीन जने, जिनमे मैं भी एक था, डूवने लगे। मैं यह वता दू कि मैं अपने आप डूवने पर उतारू था क्योकि मैं सामान से भरे झोले और वन्दूक से अलग होना नही चाहता था। लेकिन जव जीवन या झोला—दोनो में से किसी एक को—चुनने की वारी आयी तो मैंने पहले को ही चुना।

"खैर, किसी तरह हम किनारे लगे। अपने सामानो में हम केवल तम्वू और वन्दूक का उद्धार कर सके। मक्खन का टीन और सारा सामान नदी के पेट में समा गया। नाव चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो गयी।

"हमारी दियासलाइया भाग्य से गीली नही हुई थी। हमने आग जलायी और कपडे सुखाने लगे। अपने वाटर-प्रूफ के जैकेट से मार्क ने एक सूखी रोटी का टुकडा ढूढ निकाला और हमने उसी पर सतोप किया। दूसरी सुवह हमारी मुलाकात फिर लेनिनग्राद के पर्यटक-दल से हुई। उन्होने अपने सामान में से हमें कुछ देने की उदारता वरती। हमारे अनुभवो से वचने के लिए उन्होने पैदल चलकर चट्टान से जान छुडायी।

"शेप यात्रा में कोई साहस का सामना नहीं करना पडा। गांव में पहुचने पर हमारा फिर से सत्कार किया गया और फिर से खाद्य-पदार्थ मिले लेकिन इस वार नि शुल्क क्योकि हमारी पूजी घटती जा रही थी। अपने द्वारा वनाये गये वेडो पर हम सतर्कतापूर्वक क्रास्नोविशेर्स्क की ओर चले। वही पर हमारी यात्रा खत्म होती थी। वहा पहुचकर हमने टिकट खरीदा और मास्को के लिए ट्रेन पर सवार हुए। ठीक समय पर मास्को भी पहुच गये जवकि नया शैक्षिक वर्ष शुरू हो रहा था।

"और आपको मालूम होना चाहिए," विताली कोन्नोव ने कहा—"कि उत्तरी उराल की यात्रा में इतनी सारी मुसीवतो को झेलने पर भी हम वहुत खुशी खुशी घर लौटे। हम इसे वहुत दिनो तक नही भूल सकते ।"

हम खेलकूद-क्लव के वैठके में वातचीत कर रहे थे, जहा पर्यटन-शाखा की मार्ग-निश्चय समिति की वैठक तुरत शुरू होनेवाली थी। पर्यटन का उत्साही शौकीन विताली उसका अध्यक्ष था।

"विश्वविद्यालय में अपनी पाच वर्ष की अवधि में तुमने कौन कौन से स्थानो की यात्रा की है?" मैंने पूछा।

"वात यह है कि वहुत-से विभिन्न स्थानो के सैर-सपाटे हुए। पहले सालो में मैंने मास्को-प्रदेश का अध्ययन किया, उसके वाद गोर्की प्रदेश का, खासकर पुराने तौर-तरीकेवाले लोगो की जिन्दगी का। नोवगोरोद प्रदेश में, मै वहां के ऐतिहासिक स्मारको से वहुत प्रभावित हुआ, खासकर उसके मठ से जो तेरहवी शती में वनाया गया था। उसके वाद डोगी की वह मजेदार सैर। करेलिया होते हुए शीतकालीन अद्भुत पर्यटन—छिट-पुट गाव, शानदार जगल, खुले

वलेरी मुर्गुचिव नामक क़ानून के छात्र और मुक्केबाज़ के विवाह के अवसर पर

संस्कृति-भवन का हॉल। पोशाकों और दृश्यों के रेखाचित्र।

आसमान के नीचे सोने के लिए खास तरह से बने वैगों में खर्राटे लेना। ट्रास-वैकाल की यात्रा भी कम उत्तेजनाजनक नही थी। तुन्द्रा के निर्जन स्थानो से होते हुए वत्तीस दिनो की सैर। भालू से आमना-सामना। एक पहाड़ की चोटी पर चढ़ाई, जिसका नाम हमने 'मास्को विश्वविद्यालय शृग' रखा। पत्थरो का एक किला-सा बनाकर हमने एक पट्टी पर कुछ लिखकर उसे वहा गाड भी दिया। लौटते वक्त नाव में पूरे वैकाल की सैर। कोला प्रायद्वीप—वर्फीले तूफान, वर्फ, पाला, 'उत्तरीय प्रभा'। जाडे में दूसरी यात्रा—उराल के उत्तर के आखिरी हिस्सो में। तापमान शून्य से नीचे ४३° (सेन्टिग्रेड)। तुपारकणो और वरफ की परत से भरे हमारे चेहरे। खुद स्लेज-गाडियो को खीचना। अपने को गरमाने के लिए खदको में आग जलाना। फिर मध्य एशिया की यात्रा भी मै वहुत दिनो तक नही भूल सकता—असह्य गरमी, पर्याप्त स्वादिप्ट फल, मीलो तक फैली हुई मरुभूमि, तीतरो, वत्तको और जगली सूअरो का शिकार।"

"छात्र अपने पर्यटन के मार्गो का निश्चय कैसे करते है?"

"वह भार हमारी समिति पर रहता है। उसी के सम्वन्ध में आज वहस-मशविरा होगा। कुछ लोग मछली के शिकार में जाना चाहते है, कुछ लोग जगली जानवरो के शिकार में। कुछ लोग नाव की सैर करना या तैरने का आनंद लेना चाहते है। अनुभवी पर्यटक अपनी सलाह देंगे। उसके वाद समिति पूजी और साज-सामान की समस्या हल करेगी।"

"और जरूरी साज-सामान के लिए पूजी की व्यवस्था कौन करता है?"

"हमारा खेलकूद-क्लव सफर के सारे खर्च, साज-सामान और कपडा-लत्ता देता है। खासकर विकट मार्गो से होकर पर्यटन

विभागों की ट्रेड-यूनियन संस्थाएं अपने उन छात्रों के लिए स्थानों की व्यवस्था करने में व्यस्त हो जाती हैं जिनका विश्रामालयो में या स्वास्थ्य-केन्द्रों में निशुल्क या ७० प्रतिशत की छूट पर आराम करना ज़रूरी होता है।

* * *

काले सागर के किनारे एक चित्रमय पहाड़ी ढलवान पर चिनार, सरो और ताड़ के कुंज के बीच विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य केन्द्र 'गेलेंजिक' की बर्फ-सी सफेद इमारत चमक रही है। समुद्र के सुनहरे रेतीले तट पर लड़को और लड़कियो का जमघट लगा है। उनमें से कई वॉली-वॉल खेल रहे हैं। सागर का जल स्नान-प्रेमियो की भीड़ के कारण उद्वेलित हो उठा है। गीत की मिठास हवा में तैरती हुई आ रही है। इंजन की घड़घड़ाहट ज़ोर पकड़ती जा रही है और अचानक अन्तरीप के पीछे से एक मोटर-बोट अपने पीछे फेनिल धारियां छोड़ती हुई सर्र से प्रगट होती है। तट पर की भीड़ उसका स्वागत करती है। छात्रों, स्नातकोत्तर छात्रो और प्राध्यापको की एक टोली काले सागर के किनारे किनारे जल-विहार करके लौटी है। मोटर-बोट किनारे आ लगती है और ज़िन्दादिल टोली के अट्टहास से तट गूंज उठता है।

सूरज तप रहा है और सागर के शीतल जल से भी क्षणिक सुख की ही प्राप्ति हो रही है। छुट्टियां बितानेवाले लोग स्वास्थ्य-केन्द्र के छायादार उद्यान-पथो की शरण लेते हैं। भोजन के बाद नियत समय तक सभी आराम करते हैं। कमरो का फेरा लगा-लगाकर डाक्टर पूछते रहते हैं कि चिकित्सा-प्रणाली—पंकस्नान, मर्दन और मालिश, चिकित्सा संबंधी शारीरिक व्यायाम आदि—से फायदा हो रहा है या नहीं। संध्या में कंसर्ट होता है या नृत्य, खेल-कूद या बाज़ियां।

काले सागर के तट पर स्वास्थ्य-केन्द्र के अलावा, विश्वविद्यालय के और भी दो विश्रामालय है, एक रीगा के समुद्र-तट पर और दूसरा मास्को के पास क्रास्नोविदोवो में। वहा हर साल ३-४ हजार लोग अपनी छुट्टियां विताते हैं।

विश्वविद्यालय का खेलकूद-शिविर भी है जहां २००-३०० अग्रणी खिलाडी, प्रतियोगिताओ के लिए ट्रेनिंग पाते है और अपनी छुट्टिया विताते हैं। उक्त शिविर ठीक मोस्कवा-नदी के तट पर 'क्रास्नोविदोवो' विश्रामालय के समीप जगल के किनारे अवस्थित है।

लगभग ६००-७०० विद्यार्थी अपनी गर्मी की छुट्टिया देश का पर्यटन करते हुए विताते हैं। उक्त सख्या के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के विदेशी छात्र हैं। वहुत-से छात्र छुट्टियो में अपने घर चले जाते है लेकिन वाकी यही रहकर सोवियत सघ का दौरा करते है।

१९५९ की गरमी में वियतनाम, कोरिया, चीन और अल्वानिया के छात्रो ने वोल्गा और लेनिन वोल्गा-दोन नहर मे जहाज पर एक महीने की सैर की। वोल्गा की सैर करते हुए उन्होने गोर्की, स्तालिनग्राद, कूइविशेव, सरातोव और उल्यानोव्स्क में ठहर कर वहा की वास्तुकला और दर्शनीय स्थानो को देखा और कल-कारखानो एवं सामूहिक फार्मों का निरीक्षण किया। उन हिस्सो की प्राकृतिक सुपमा को निहारता हुआ उनका जहाज आगे वढता गया। अद्भुत थे वे दृश्य -स्तेपी, पहाडी भू-भाग, गहरे हरे रगवाले घास के मैदान, वारी वारी से वर्च के कुज और चीड के वन ..

वहुत-से विदेशी छात्र अपनी छुट्टिया नालचिक या ओदेसा में, गेलेन्जिक या किस्लोवोद्स्क में, याल्ता में या रीगा के समुद्र-तट पर विताते है। इन स्थानो में रहने के लिए उनसे वास्तविक खर्च का केवल ३० प्रतिशत ही लिया जाता है।

भूगोल विभाग के हंगेरियन, रूमानियन और चेक छात्रो ने अपने सोवियत सहपाठियो के साथ मध्य एशिया और काकेशस का सफर करने का निर्णय किया। वहां उन्होंने दक्षिण की प्राकृतिक और भौगोलिक विशेषताओ का अध्ययन किया।

गर्मी की छुट्टियो से भिन्न, जाड़े की छुट्टी (२४ जनवरी से ६ फरवरी तक) सबके लिए समान ही होती है। देश के सुदूर हिस्सो के छात्र जाड़े की छुट्टी में अपने घर नही जाते क्योंकि आने-जाने में ही उन्हे छुट्टी का अधिकाश समय लग जाता है। उनमें से कुछ अपनी १२ दिनो की छुट्टी समीपवर्ती विश्रामालय में या स्किइंग-ट्रिपो में बिताते है। शेष छात्र विश्वविद्यालय में ही रहकर थियेटरो, कसर्टो और चलचित्रो की सैर करते है और स्केटिग या मास्को के पास स्किइग का आनद लेते है।

जाडे की छुट्टियो में लेनिनग्राद, खारकोव और वोरोनेज के विश्वविद्यालयो के साथ विद्यार्थियो का आदान-प्रदान करने की एक परंपरा-सी बन गयी है। पिछले जाड़े में हम लेनिनग्राद और वोरोनेज विश्वविद्यालय के छात्रो के मेजबान बने थे। अपने दौरे के सिलसिले में उन्होंने कई शौकिया कला कसर्ट पेश किये। विश्वविद्यालयो के बीच व्यायाम-प्रतियोगिता भी हुई। हमारे लगभग ५०० छात्र उस समय लेनिनग्राद विश्वविद्यालय के मेहमान बने थे।

चेकोस्लोवाकिया, बलगारिया, जर्मनी और चीन के लगभग १०० छात्रो ने अपने सोवियत सहपाठियो के साथ जाड़े की छुट्टिया अच्छी तरह बितायी। उनकी पहलकदमी पर ज्वेनीगोरोद के जीव-विज्ञान-केन्द्र में एक नये प्रकार का अन्तर्राष्ट्रीय स्किइंग शिविर कायम किया गया। खेलकूद-क्लब ने आवश्यक स्किइंग सामानों की व्यवस्था की और केन्द्र ने स्थान की। विद्यार्थी बारी बारी से भोजन तैयार

करते थे। हर दिन स्किइंग और उत्तेजनापूर्ण प्रतियोगितायें होती थी। लौटने पर सबने एक स्वर से यही कहा कि जाडे की छुट्टी इतनी अच्छी तरह पहले उन्होंने कभी नही वितायी थी।

जाडे की छुट्टियो में विश्वविद्यालय के छात्र, मास्को के तथा समीपवर्त्ती प्रदेशो के सामूहिक और राजकीय फार्मों तक की प्रचार सबंधी यात्रा स्किइंग करते हुए तय करते है। इन टोलियो में सामान्यत. 'कलाकार' और 'वक्ता' रहते हैं—वे सामूहिक किसानो के लिए कंसर्ट पेश करते है तथा राजनीतिक, वैज्ञानिक और सामाजिक विपयो पर भापण देते है। १९५७ के जाडे में, इतिहास विभाग के पचम वर्प के छात्रो की टोली का नायक येवगेनी तोश्चेको ने अपने कालूगा प्रदेश के दौरे के बारे में सुनाया—

"हमारा मार्ग ओका नदी के किनारे किनारे सुन्दर स्थानो से होकर जाता था, जहा महान पोलेनोव प्राकृतिक दृश्यो का चित्र बनाया करते थे। जब हम लोगो ने कूच किया तो दिन काफी बढिया और उजला था। हमने सफरी झोले अपने कंधो से लटका रखे थे और हम ऊबड़-खावड पहाडियो पर स्किइंग करते बढते गये। पहाडी की ढालो पर रुपहले बर्च-वृक्ष झूम रहे थे। जब हमारी छात्राओं ने थकावट के भाव जाहिर किये तो हमने आधे घटे के विश्राम का ऐलान कर दिया। सुस्ताकर हम फिर आगे बढे और तब तक स्किइंग करते रहे जब तक कि टीलो के पीछे से कालूगा प्रदेश के बोजनेसेस्क मशीन और ट्रैक्टर स्टेशन के लाल छप्पर न चमकने लगे।

"ट्रैक्टर चालको के आवास-गृह के दरवाजे पर एक बडा-सा रगीन इश्तहार लगा था जो विश्वविद्यालय की प्रचार-टोली द्वारा पेश किये जानेवाले आगामी कसर्ट की सूचना दे रहा था। चिपटी नाकवाली

क्लब-मैनेजर हमें मदद करने के लिए उत्सुक थी। एक मिनट भी बर्बाद न किये बिना हमारे 'कलाकारों' ने रिहर्सल करना शुरु कर दिया।

"सामूहिक फार्म का कंसर्ट-हॉल उस शाम को ठसाठस भर गया। लोगो की भीड खुली खिड़कियों तथा खुले दरवाज़ों के बाहर भी खडी थी। पर्दे के पीछे हम अंतिम तैयारी कर रहे थे। उसके बाद हमारे समारोह की नायिका स्वेत्लाना सोलोव्येवा ने प्रथम कार्यक्रम की घोषणा की। हॉल का शोर-गुल ख़त्म हो गया और ख़ामोशी छा गयी।

"स्लावा उस्कोव ने अकार्डियन पर 'मैत्री और शान्ति के गीत' की मधुर धुन बजाते हुए कंसर्ट का उद्घाटन किया। उसके बाद नर्तकों, गायकों और वक्ताओं ने अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये। बडी वाहवाहियां मिली। रंगमंच के पीछे खड़े-खड़े मैंने दर्शकों की किलकारियां सुनी। हमारी 'अभिनेत्रियां' एम्मा लोसेवा और लील्या कोचूरिना, कोर्नेइचुक के नाटक 'कलिनोवाया कुज' का एक दृश्य प्रस्तुत कर रही थीं।

"'जरा सोचो, प्रिय, मेरे पति कोंद्रात वार्फोलोमियेविच ने मुझे देश के मशहूर चिकित्सकों को दिखलाया। लेकिन उनकी दवाए कोई काम की नहीं. .'

"'सचमुच?'

"'यह सही बात है. . मैं इतनी कमज़ोर हू . और वे रोग का पता नहीं लगा सकते...'

"फिर हंसी के फौव्वारे। हमारी प्रतिभासपन्न 'अभिनेत्री' एम्मा लोसेवा की मिमियाहट और स्वांग अपना असर दिखा रहे थे। यहा तक कि दोनो 'अभिनेत्रियों' पर भी हंसी का भूत सवार हो गया था और वे रुमाल के भीतर उसे छिपाने की कोशिश कर रही थीं।

प्रदर्शन के पहले। बीच में—प्राणिशास्त्र विभाग की सेसीलिया सेर्वेन्यूक जो चायकोव्स्की के ऑपेरा 'येवगेनी ओनेगिन' में तत्याना की भूमिका में उतरती है।

डोसेन्ट सेसीलिया सेर्वेन्यूक प्राणिशास्त्र विभाग के छोटे-से शल्य-कक्ष में विद्यार्थियों को परामर्श देती हुई

फ्रांस का एक छात्र रंगमंच पर

इस पुस्तक के लेखक एक कंसर्ट के लिए अकार्दियन पर रिहर्सल करते हुए

फ़ैंसी ड्रेस-बॉल
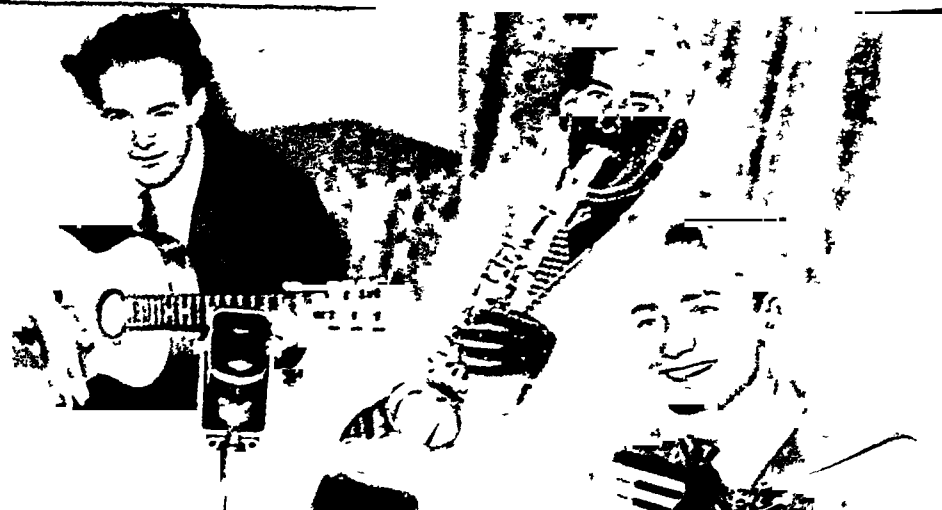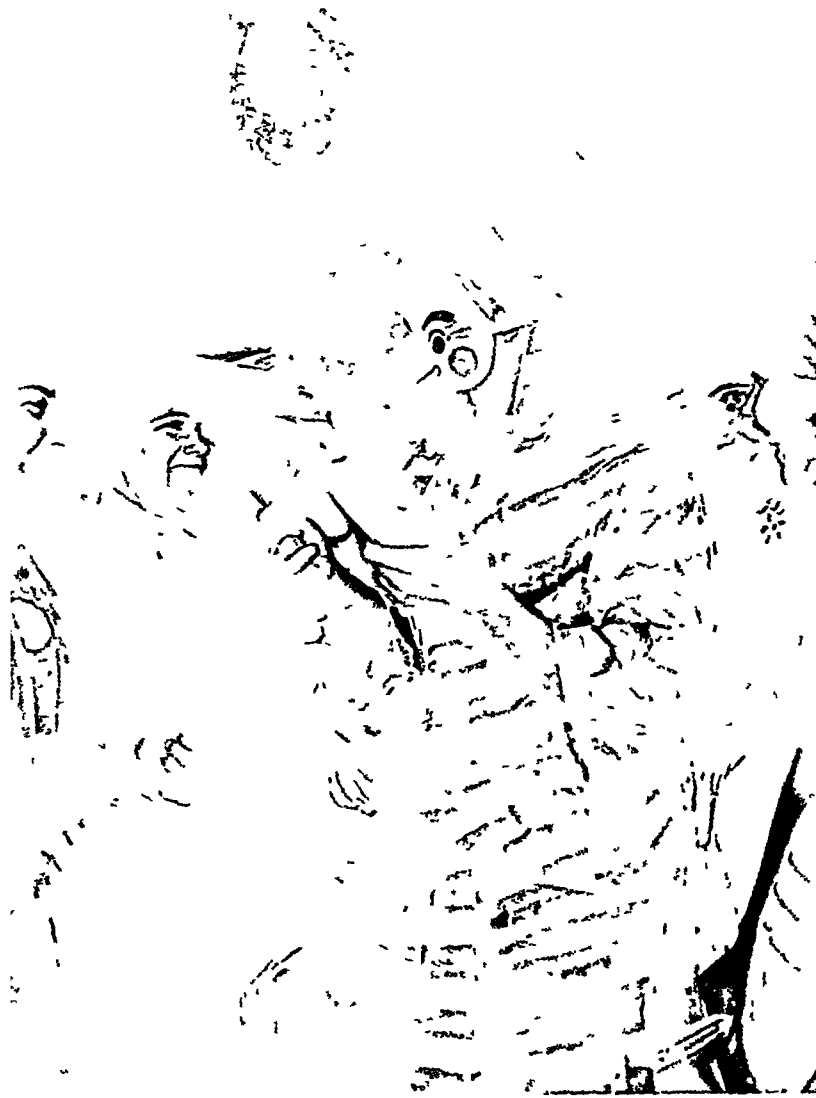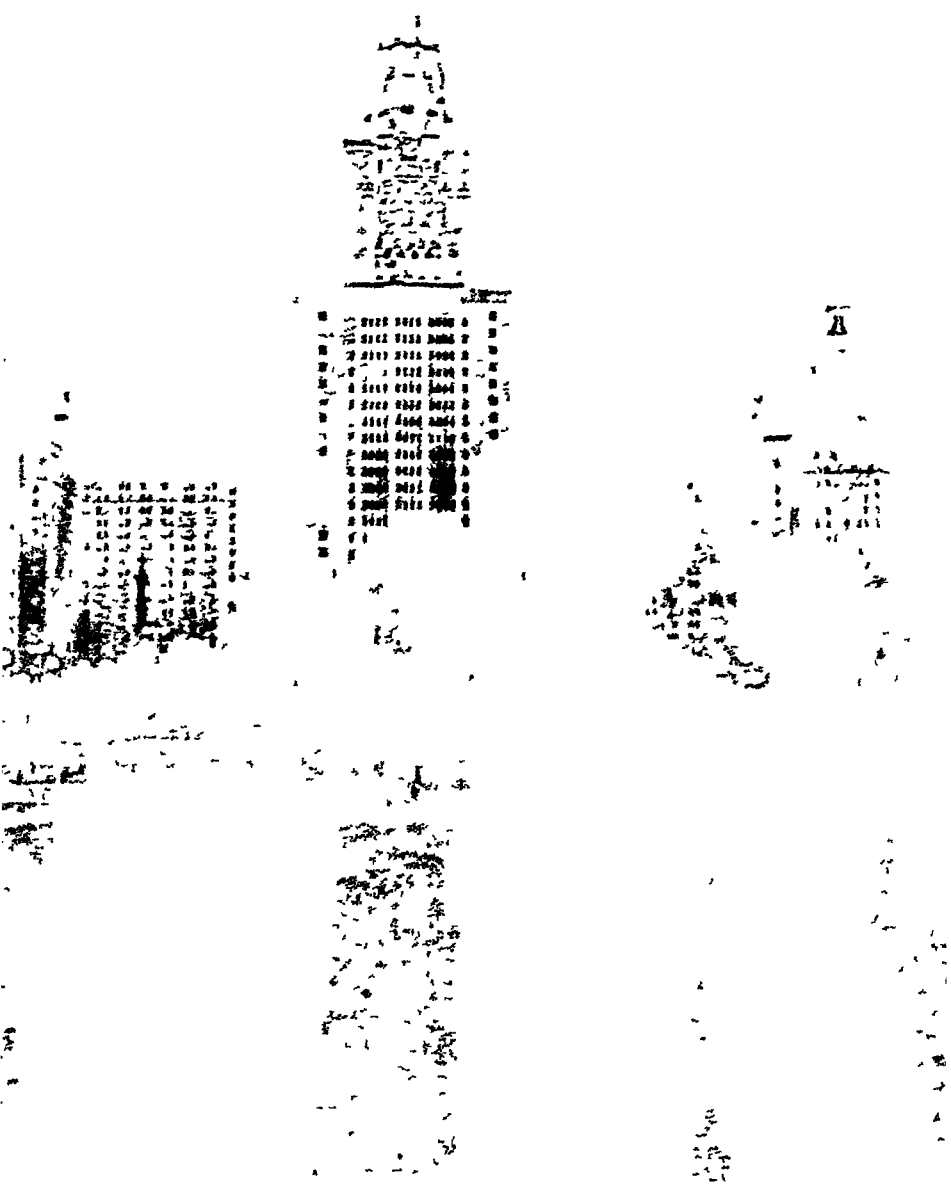
गार में मास्को विश्वविद्यालय का दृश्य

"कंसर्ट मे वडी कामयावी मिली। हार्दिक सत्कार और दीर्घकालीन प्रशसा से वढ़कर दूसरा पुरस्कार क्या हो सकता है! कोई वात नही यदि 'कलाकार' एकाध वार गड़वडा भी गये तो। हमें केवल अपने प्रदर्शनो के लिए ही नही वल्कि हमारी इतनी दूर की यात्रा के लिए भी वाहवाहिया मिली। कसर्ट के लिये कोई शुल्क नही था।

"अन्तिम कार्यक्रम के वाद स्वेत्लाना सोलोव्येवा ने रगमच पर आकर एलान किया कि यदि दर्शको की इच्छा हो तो छात्र अपने विभागीय गीत गा सकते है। इस ऐलान पर सभी ने जोर की तालिया वजाई। तव अपने शृगार और वेश-भूपा में ही हमने रगमच पर पक्तिवद्ध होकर अपने विभाग के छात्रो द्वारा विरचित गीत गाये।

"कसर्ट समाप्त होने के वहुत देर वाद तक लोग इसकी चर्चा करते रहे। एक समीपवर्ती सामूहिक फार्म के प्रतिनिधियो ने हमसे अनुरोध किया कि हम उनके यहा अगली सध्या मे कसर्ट पेश करे। हमने जवाव दिया कि 'हम वहुत खुशी से ऐसा करते लेकिन हमारा कार्यक्रम निश्चित है और हमें कल शाम तक कूच कर जाना है।' 'तव यदि दिन में ही कसर्ट की व्यवस्था हो जाये तो क्या हर्ज? हम आप लोगो के लिए घोडे दे देंगे ताकि आप अगले स्थान पर ठीक समय पर पहुच जायें।' हम राजी हो गये।

'इससे वढकर और सतोपजनक क्या हो सकता है कि हम जनता के काम आयें और वह भी ऐसे समय में जवकि हम अभी विश्वविद्यालय के विद्यार्थी ही हो?'

"आठ दिनो तक हम मास्को, तूला और कालूगा प्रदेश होते हुए सफर करते रहे। हमने कुल १२ कसर्ट पेश किये। हमने सामूहिक

के लिए उससे कैफियत पूछी गयी और उसने अपनी सफाई में यही कहा कि वह सोवियत संघीय खेल-समारोह के लिए तैयारियां कर रहा है। उसने मानिटर और कोमसोमोल सगठक से अपील करते हुए कहा— "आखिरकार मुझे अच्छी तरह भाग भी तो लेना है और उसके लिए ट्रेनिंग और अभ्यास की जरूरत है।"

उसके बाद आये परीक्षा के दिन और ल्योगा अनीसिमोव दो विषयो में फेल कर गया। यह सब होते हुए भी उसने धृष्टता दिखायी। अब सब कुछ कोमसोमोल सदस्यो के, उसके साथियो के निर्णय पर निर्भर करता था। विश्वविद्यालय से अनीसिमोव को निकालने के निर्णय पर हस्ताक्षर करने के पहले विभागाध्यक्ष, कोमसोमोल सदस्यो की राय जानना चाहते थे।

"साथियो, मैं सोचता हू कि अनीसिमोव जरूरत से ज्यादा दभी है। वह समझता है कि वह एक नायाब खिलाड़ी है। अभी भी आप उसके चेहरे की ओर देखें। उससे यही भाव झलक रहा है कि उसे निकाला नही जा सकता क्योंकि वह हॉकी का बहुत अच्छा खिलाडी है और विभाग ऐसे खिलाड़ी को खो नही सकता।"

ल्योगा ने, जो एक कोने में बैठा हुआ था, वक्ता की ओर देखा। वह उसका मित्र निकोलाई मास्लोव था। ल्योगा ने भौंहे चढायी और सर झुका लिया। कोमसोमोल की बैठकों में व्यक्तिगत सबध और सहानुभूति का कोई महत्त्व नही।

"लेकिन तुम्हे अपनी गलती का एहसास होना चाहिए, ल्योगा," वक्ता ने आगे बोलना शुरू किया। "विश्वविद्यालय को पेशेवर हॉकी खिलाडियो की आवश्यकता नही। सबसे पहले तो तुम एक विद्यार्थी हो। परीक्षा में केवल उत्तम अक प्राप्त करने का ही सवाल नही है, सवाल है ज्ञान का। इस ज्ञान की जरूरत हम सभी को है।"

मास्लोव गुस्से से कुछ वुदवुदाता हुआ वैठ गया। उसके वाद कक्षा की मानिटर नताशा पेरेल्मान वोलने के लिए उठी।

"मैं वहुत सक्षेप में ही वोलूगी," उसने कहना शुरू किया—"मुझे चिन्ता इस वात की नही कि वह परीक्षा में फेल कर गया। चिन्ता तो इस वात की है कि वह झूठ वोला।"

नताशा थोडा लाल हो उठी। स्पप्ट था कि इस सवध में चर्चा करना उसे कठिन जान पड़ रहा था। लेकिन अपने होठो को दवाते हुए उसने आगे कहना शुरू किया—

"परीक्षा के पहले ल्योशा वहुत से व्याख्यानो मे गैरहाज़िर रहता था। कई वार मैंने उससे पूछा कि राजनैतिक अर्थशास्त्र और गणित की पढाई कैसी चल रही है, वह परीक्षा की तैयारी ठीक से कर रहा है या नहीं। उत्तर में वह अपने खाली हाथ से मेरे कधे को थपथपा देता (इसके दूसरे हाथ में स्केट-जूतो की जोडी रहती) और कहता—"मेरी प्यारी नताशा, मैं गणित में सोफ्या कोवालेव्स्काया* और राजनैतिक अर्थशास्त्र में एडम स्मिथ की तरह पारगत हू। चिन्ता न करो, सव कुछ ठीक हो जायेगा।" और हुआ क्या? यह मिथ्यावादी और शेखीवाज़, मामूली समीकरण के हिसाव भी नही सुलझा सका और मात खा गया। मेरा ख्याल है साथियो, कि हमे इसके लिए कोई हमदर्दी ज़ाहिर करने की ज़रूरत नही। विभागाध्यक्ष मडल जो उचित समझे, उसे करने दो। वस इतना ही..."

---

*१६ वी शताब्दी की प्रसिद्ध रूसी गणितज्ञा जिसे ससार में पहले-पहल प्रोफेसर और विज्ञान अकादमी की सहायक सदस्या की पदवि से विभूषित किया गया।

अनीसिमोव लाल पड़ गया। उसे अब मालूम हुआ कि उसने सोचा भी नही था कि वात इतनी गभीर हो जायेगी। वह जानता था कि दल के कोमसोमोल सदस्य सिद्धान्त के वड़े पक्के है। लेकिन उसने यह सोचा भी नही था कि वे इतनी सख्ती और कड़ाई से पेश आयेंगे नताशा ने कैसा प्रहार किया था! उसने उसे 'मिथ्यावादी और शेखीवाज़' कहा। छि.! उसे अपने ऊपर वड़ा क्षोभ हुआ।

"अव तक ल्योशा के वारे में, उसकी ग़ैरज़िम्मेवारियो के वारे में वहुत कुछ कहा जा चुका है। उसने अंजाम नही सोचा और पढाई-लिखाई छोड़कर स्केटिग के पीछे पड़ा रहा। अत. वर्ग के प्रति उसके वफादार न रहने के कारण वर्ग का सर नीचा हो गया।" आर्मेनिया का एक छात्र जोरा अकोप्यात्स, अनीसिमोव की ओर अपनी काली आखो से घूरते हुए वोला।

"उसके सहपाठियो का उसपर कोई ज़ोर-दवाव नही था। उसने उनकी कभी सुनी नही। हमने भी यही किया और कहा कि जो उसके जी में आये करने दो। लेकिन मेरा ख्याल है कि हमें ऐसा करना शोभा नही देता। मेरा प्रस्ताव है कि वैठक उसके कृत्यो की सख्त निन्दा करे और हम विभागाध्यक्ष को सूचित करे कि ल्योशा के लिए वर्ग ज़िम्मेवारी लेता है और उसे न निकालने की प्रार्थना करता है। वस मुझे इतना ही कहना था।" यही पर ल्योशा अनीसिमोव के कृत्यो के वारे में वहस खत्म हो गयी।

"अच्छा तो, साथियो," ल्यूदा सविचेको ने कहा—"दो प्रस्ताव रखे गये है—पहला यह कि अनीसिमोव के मामले में दखल देने की जरूरत नही और दूसरा यह कि विभागाध्यक्ष से अनुरोध किया जाये कि वह उसे नही निकाले क्योकि हम उसकी ज़िम्मेवारी अपने ऊपर लेते है और वैठक उसके कृत्यो की सख्त निन्दा करती है। अव मैं इन प्रस्तावो पर वोट लेती हू। पहले प्रस्ताव का समर्थन कौन

करते है ? एक, दो, तीन, चार, पाच। दूसरे प्रस्ताव का नमर्थन ? एक, दो, तीन, चार, पांच, छ सात ... कुल तेरह। कितने तटस्थ रहे ? चार। दूसरा प्रस्ताव स्वीकार किया जाता है।

इस तरह से कोमसोमोल की उस वैठक की कार्यवाहिया, मैंने अपनी आंखो देखी। इसमें भाग लेनेवालो के नाम मैंने जानवूझकर वदल दिये है क्योकि अव परिस्थिति ही दूसरी है। जिस लडके को मैंने ल्योशा नाम दिया है, वह अव एक नये साचे मे ढल गया है। पहले तो वह वहुत चिढता रहा लेकिन वाद में उमने महमूस किया कि हर किसीने सामूहिक के तथा खुद उसके हित के लिए कार्य किया था। अव वह चतुर्थ वर्ष का छात्र है और अच्छी तरह से पढ-लिख रहा है और हॉकी टीम में भी नाम कमा रहा है।

विश्वविद्यालय के कोमसोमोल सगठन के वारे में दो शब्द। ९० प्रतिशत से अधिक छात्र कोमसोमोल के सदस्य है। विश्वविद्यालय में कोमसोमोल का उच्चतम अग, वार्षिक सम्मेलन है जो साल भर के लिए कोमसोमोल समिति का निर्वाचन करता है। समिति में २५ सदस्य होते है। वे ७ सदस्यो का एक व्यूरो निर्वाचित करते है। यह व्यूरो ही सम्मेलनों के वीच कोमसोमोल सगठन का आधारभूत पथ-निर्देशन केन्द्र होता है। समय समय पर (ऐसा अक्सर होता ही रहता है) कोमसोमोल के कार्य-कलापो के अति महत्त्वपूर्ण प्रश्नो पर वाद-विवाद करने के लिए पूरी समिति की वैठकें होती है। हमारी समिति के व्यूरो में एक मत्री, दो उपमत्री जो क्रमश सगठनात्मक और प्रचारात्मक कार्यो के उत्तरदायी होते है, तथा अन्य चार सदस्य रहते है जिनके जिम्मे सास्कृतिक कार्य, छात्रावास सवधी कार्य तथा अन्य सगठनात्मक कार्य होते है।

हर विभाग का अपना कोमसोमोल ब्यूरो होता है जो हर साल विभाग की आम कोमसोमोल बैठक में निर्वाचित किया जाता है। ब्यूरो में ७ से लेकर १३ सदस्य रहते हैं। उसके बाद प्रथम वर्ष से लेकर पंचम वर्ष के छात्रों के कोमसोमोल ब्यूरो होते हैं जिनमें ५ से लेकर ७ सदस्य होते हैं, यह कोमसोमोलों की संख्या पर निर्भर करता है; और अन्त में कोमसोमोल दल होता है जो कोमसोमोल का निम्नतम अंग होता है। कोमसोमोल दल के छात्र विद्या-वर्ष के आरम्भ में एक कोमसोमोल संगठक निर्वाचित करते हैं।

विश्वविद्यालय में कोमसोमोल अपने कार्य-कलापों के मामले में पार्टी संगठन पर हमेशा निर्भर कर सकता है जो उसे सदैव मदद और राय देने के लिए तैयार रहता है।

आगे मैं पाठकों को विश्वविद्यालय के कोमसोमोल संगठन के कार्य-कलापों से परिचित कराऊंगा।

विश्वविद्यालय के पास स्थित स्कूल नं० १४ का सम्मेलन-हॉल उस दिन संध्या में शोर-गुल से गूंज रहा था। ६ बजे संध्या से पहले ही बाल संवारे, साफ-सुथरे कपड़े पहने एवं इस्त्री किये हुए पायनियर-रूमाल गले में बांधे स्कूली बच्चों से हॉल भरने लगा था। जीवशास्त्र एवं मृदाविज्ञान विभाग में चतुर्थ वर्ष का छात्र दिमा ओसोगोस्तोक, जो याकूत जाति का था, हॉल में दाखिल हुआ। वह भी अपने गले में एक पायनियर-रूमाल बांधे हुए था। वह छठी 'ब' कक्षा का तरुण पायनियर नेता है।

"शुभ संध्या, दिमा," चारों तरफ से अभिवादन के स्वर टूट पड़े।

"तुम्हारे साथ यह कौन है, दिमा?"

वह अपनी सहपाठिन् पोल लड़की माग्दा जेमायतिस के साथ आया था।

"दिमा, हम लोगों के पास बैठो," चारों तरफ से आवाजें आ रही हैं। दिमा और माग्दा पहली पंक्ति में बैठ जाते हैं। कुछ मिनट के बाद नीली आंखोंवाली एक सुन्दर लड़की, जो पायनियर परिषद् की अध्यक्षा है, रंगमंच पर प्रगट होती है।

"आज हम लोग अपनी मेहमान पोलैंड निवासिनी माग्दा जेमायतिस की बातें सुनने के लिए एकत्रित हुए हैं। वे मास्को विश्वविद्यालय की छात्रा हैं और हमें वारसा के बारे में सुनाएंगी।" उस लड़की ने गूंजती हुई आवाज में ऐलान किया।

उसके बाद तालियों की गड़गड़ाहट से हॉल गूंज उठा। माग्दा जेमायतिस रंगमंच पर चढ़ी।

वारसा की रहनेवाली यह लम्बी, सुनहरे बालोंवाली लड़की वारसा में हुए विश्व युवक समारोह में भाग ले चुकी थी। अन्तर्राष्ट्रीय युवक सम्मेलन के बारे में पायनियरों को बताने के लिए उसे यहां आमंत्रित करने की योजना दिमा ने बनायी थी।

माग्दा ने बताया कि वारसा ने तरुण मेहमानों का स्वागत कैसे किया। समारोह की तैयारियों में नगर के स्कूली छात्रों ने किस तरह मदद पहुंचायी थी और वहां किस प्रकार विश्व के कोने कोने से नौनिहाल इकट्ठा होकर एक दूसरे के घनिष्ठ मित्र बन बैठे थे।

जब उसने अपनी कहानी खत्म कर ली तो बच्चों ने उससे अनुरोध किया कि वह एक पोलैंड का गीत गाये। माग्दा ने 'कुक्कू' नामक लोकप्रिय गीत सुनाया।

उसके बाद एक शौकिया कला कन्सर्ट हुआ। उसके खत्म होते ही बच्चों ने अपनी पोलिश मेहमान को घेर लिया जिसने उन्हें वारसा में हुए युवक समारोह के संबंध में बहुत सी पत्रिकाएं और चित्र दिखलाये।

पायनियर संगठक के कार्य विविध और दिलचस्प होते हैं। जब प्रथम वर्ष में दिमा से पूछा गया कि वह कौन-से सामाजिक कार्य का संचालन करना पसद करेगा तो उसने चट इस काम को चुन लिया। उसे तनिक भी हिचकिचाहट नही हुई। दिमा ओसोगोस्तोक किसी माध्यमिक स्कूल का शिक्षक वनना चाहता है। स्कूली जीवन के वारे में अच्छी तरह जानने के लिए इससे वढ़कर कारगर अन्य सामाजिक कार्य क्या हो सकता है? दिमा ने वच्चो से घनिष्ठ मित्रता कायम कर रखी है। वह विविध दिलचस्प सम्मेलनो के आयोजन में ही उनकी मदद नहीं करता है वल्कि उनकी पढ़ाई-लिखाई में भी मदद करता है। उन्हे कृपि-प्रदर्शनी, त्रेत्याकोव कला-प्रदर्शनी और नगर के वाहर विभिन्न स्थानों की सैर कराता है।

विश्वविद्यालय के छात्र विभिन्न स्कूली मंडलियो के सक्रिय सगठक के रूप में भी काम करते हैं। भौतिकशास्त्र विभाग के छात्र—तरुण भौतिकशास्त्रियो की मंडली का; रसायनशास्त्र विभाग के छात्र-तरुण रसायनशास्त्रियो की मडली का; और जीव-शास्त्र विभाग के छात्र—तरुण प्राणिविज्ञो, प्रकृतिविज्ञो और वनस्पतिविज्ञो की मडलियो का पर्यवेक्षण करते है। इनके अलावा विभिन्न स्कूली मडलिया, विश्वविद्यालय के विद्यार्थियो की देख-रेख में विश्वविद्यालय के व्याख्यान-हॉलो में अध्ययन करती हैं।

विश्वविद्यालय के कोमसोमोल सदस्यो ने ज़िले के कामगारो मे घनिष्ठ मित्रता कायम कर रखी है। भौतिकशास्त्र विभाग में प्रथम वर्ष की छात्रा लरीसा स्वेग्निकोवा तरुण महिला कर्मियो के वीच प्रचार-कार्य करती है और उनकी रुचि के लायक उन्हे पाठ्य-सामग्री देती है। हाल में जव मेरी मुलाक़ात लरीसा से हुई तो वह ड्रेस्डेन चित्र-प्रदर्शनी के चित्रों का एक वड़ा-सा अलवम लिए हुए थी।

उसने मुझे बताया कि वह जर्मन चित्र-कला पर एक व्याख्यान देने जा रही थी। ऐसा जान पडता है कि उसने पिछली बार उन्हे रूसी चित्रकारो के बारे मे बताया था और तब उन्होने जर्मन चित्र-कला के बारे में भी जानने की जिज्ञासा प्रगट की थी।

लरीसा के पास उन लडकियो के लिए एक खुशखबरी भी थी। ज़िला सामाजिक बीमा विभाग का दो बार चक्कर लगाने के बाद वह एक महिला कर्मी की पगु बहन को पेंशन दिलाने में सफल हो चुकी थी। अब चिन्ता की कोई बात नही, आगे से उसे पेंशन मिलती रहेगी।

उच्च कक्षाओ के कोमसोमोल सदस्य, ज़िले के कारखानो और निर्माणियो में भी काफी सक्रिय देखे जा सकते हैं जहा वे राजनैतिक मडलियो का सगठन और सचालन करते है। मिसाल के लिए, अर्थशास्त्र विभाग के छात्र, ओर्जोनिकिद्ज़े यन्त्र-निर्माण कारखाना में और इतिहास विभाग के कोमसोमोल सदस्य 'लाल अक्तूबर' मिठाई कारखाना में मडलियो का सचालन करते है।

मास्को विश्वविद्यालय के छात्रो ने नये कृषि-क्षेत्रो मे अपना वास्तविक परिचय दिया है। नये कृषि-क्षेत्रो में अच्छी फसल काटने के लिए कम्यूनिस्ट पार्टी के आह्वान पर विश्वविद्यालय के एक हज़ार छात्रो ने सक्रिय सहयोग देकर अपना वास्तविक परिचय दिया।

अपने दौरे का वर्णन करते हुए गणित एव यन्त्रशास्त्र विभाग के चतुर्थ वर्ष की एक छात्रा एव कोमसोमोल सदस्या एल्विरा सिमाकोवा लिखती है—

"हमारे विभाग से ९७ छात्र और दूसरे विभागो ने कोई ६०० छात्र गाड़ियो में लदकर प्रतिघटे ३० किलोमीटर की औसत गति मे नयी बजर ज़मीन की ओर बढे जा रहे थे। मानव-विज्ञान विभाग के नटखट छात्रो ने हमारी गाडियो पर खडिये से लिख रखा था—'४ टन

सूखा माल।' जरा उनके आश्चर्य की कल्पना कीजिये जब उन्होंने हमें पाया कि हम 'सूखे' नहीं बल्कि अत्यधिक सरस थे—ट्रेन में हम सबसे अधिक जिन्दादिल थे, गीत और खुशी का दरिया बहाते रहे और हंसी-मजाक से वातावरण को मुखरित करते रहे। और मानव-विज्ञान के उन्हीं छात्रों को इसके सिवाय कोई चारा नहीं रहा कि वे उस लिखावट को मिटा डालें क्योंकि वह बिलकुल निरर्थक और असंगत साबित हुई .."

उसने आगे ज़िक्र किया है कि नये कृषि-क्षेत्र में काम करना बहुत कठिन था। खाद्य-पदार्थ नियमित रूप से नहीं पहुंच पाते थे। गरमी असह्य थी। आवास की व्यवस्था गयी-गुजरी थी—भवन-निर्माण के कार्य अभी शुरू ही हुए थे। काम बहुत ही मेहनतवाला था और लगता था जैसे वह कभी खत्म ही नहीं होगा। लेकिन यह सब होते हुए भी .

"यहां बड़ा आनंद आ रहा है," हम लोगों ने अपने पत्रों में लिखा। हमारे कहने का तात्पर्य था कि अच्छा भोजन और नरम बिछावन ही आनंद की पराकाष्ठा नहीं है।

"वहां अपने डेढ़ महीने की अवधि में," सिमाकोवा आगे ज़िक्र करती है—"हम अपनी टीम-टाम, गणितज्ञों की तरह खोये खोये से दूर, बहुत दूर में, देखने रहने की आदत भूल बैठे। हमारे कार्य-दिवस का वर्णन संक्षेप में यूं किया जा सकता है—काम उतना हीं नहीं करना जितना कि आप कर सकते हैं, बल्कि उतना जितना कि जरूरी था। भोजन उतना नहीं करना जितना कि जरूरी था, बल्कि उतना जितना कि वहां उपलब्ध था। सुबह उस समय न जगना जबकि आप चाहते हों, बल्कि उस समय जब कि आपको उठना होता था .."

सक्षेप में इसका विवरण इसी तरह दिया जा सकता है। काम करनेवाले हमारे बहादुर कोमसोमोलों की एक सेना ही समझिये। वे रात-दिन काम करते रहे, कम्बाइन चलाते रहे, मतलब कि चन्द दिनो में ही जटिल यन्त्रो के चलाने में माहिर हो गये। वे कभी नही भूले कि अधिक से अधिक फसल काट कर ही दम लेना है।

ऐसे भी अवसर आये जब राजकीय फार्मों के कामगारो के साथ साथ छात्रो को अधड और तूफान, वारिश और अगलगी का सामना करना पडा। विधिशास्त्र विभाग में तृतीय वर्ष के छात्र व्लादीमिर शेवचेको ने इस सबध में एक कहानी सुनायी—

"अगलगी नये कृषि-क्षेत्रो के लिए बहुत बडा अभिशाप है . कज़ाख़ जनतन्त्र मे 'इलिस्क' राजकीय फार्म में आग तब लगी जब कि पूरी की पूरी फसल खेत में ही खडी थी। आग लगने की घटी सुनकर मिनटो में ही हम घटना-स्थल की ओर लारियो मे दौडे।

"आग की भयकर लपटो के एक विशाल घेरे ने रास्ता रोक रखा था। हमारी गाडिया झटके से रुक गई। गाडियो मे कूद-कूद कर हम आग बुझाने के लिए लपके। हमारा दल बीच के क्षेत्र मे था जहा लोगो ने बडी कठिनाई और मेहनत से गेहू की सबसे अच्छी फसल लगा रखी थी। दुर्भाग्य से हवा का रुख भी उसी तरफ था।

"लोगो की एक बडी भीड खेत पर टूट पडी। जिसको जो हाथ लगा, वही लेकर आग बुझाने दौडा। कुछ लोग सरसो की झाडू से, कुछ अपने रुईदार जैकटो से आग बुझा रहे है, तो कुछ अपने खाली हाथों से गेहू के डठल उखाड उखाड कर जमीन पर पटक रहे है और कुछ मुट्ठी भर भर कर धूल फेक रहे है ताकि आग आगे न फैलने पाये।

"गेहू के खेत में मानो ज्वालाओ का सागर लहरा रहा है और जलती हुई गर्म हवा पागल की तरह दौड़ रही है। सांस लेना भी कठिन हो रहा है। सूखे तिनके और डंठल ज़ोर ज़ोर से चटख कर जल रहे हैं। गेहू की लहलहाती फसल ज्वालाओ के सहस्त्र मुखो का ग्रास वन रही है। कइयो के चेहरे और हाथ झुलस गये हैं और कपड़े जलकर राख हो गये हैं। लेकिन आग को ही हार माननी पड़ी।

"नये लोगो से भरी लारियां हमारी सहायता को दौड़ी। आग वुझानेवाला दल भी वहादुरी से आग का मुकावला कर रहा है। ट्रैक्टर आग लगे हिस्सों को रौंदते दौड रहे हैं ताकि आग फैलने न पाये। हम अव छिट-पुट ज्वालाओ से लड़ रहे हैं। नीले धुओ के वादल और काली राख के ढेर ही भयानक लपटो के साथ हमारे मुकावले की कहानी कहने के लिए रह गये हैं...

"विद्यार्थी फिर अपने अपने दलो में शामिल होकर ट्रैक्टरो और कम्वाइनो से जूझ गये, गेहूं काट-काटकर अनाज पीटने के स्थान पर जमा करने लगे। लारियो में अनाज लाद-लादकर इलेवेटरो तक पहुंचाने लगे जहां से गेहूं के ये पुष्ट दाने हमारे देश के नगरो और गांवो में वरसने लगेंगे।"

मास्को विश्वविद्यालय के कोमसोमोल सदस्यो के नि स्वार्थ श्रम की चर्चा आदर के साथ की जाती है। विश्वविद्यालय के ४०० छात्रों को 'नये कृषि-क्षेत्रो के आचार्यत्व के लिए' सोवियत सघ की तरुण कम्यूनिस्ट लीग की केन्द्रीय समिति के विल्लो से सम्मानित किया गया है। विश्वविद्यालय के ४० छात्र—'कृषि में समाजवादी होड़ के अग्रणी' के विल्ले गौरव के साथ पहने हुए दिखाई पड़ते हैं। वहुत-से छात्र सोवियत सघ की कृषि-प्रदर्शनी में भी भाग लेने के अधिकारी वन चुके हैं।

* * *

जब १९५६ में सोवियत संघ के नौजवान, छठे विश्व युवक एवं छात्र-समारोह की तैयारियां मास्को में करने लगे तो कोमसोमोल सदस्यों के नेतृत्व में विश्वविद्यालय के छात्रों ने तैयारियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। १९५७ के आरंभ में 'मास्को विश्वविद्यालय' नामक समाचारपत्र में 'हम एक रचनात्मक क्लब बनायें' शीर्षक से एक लेख निकला जिसमें विश्वविद्यालय की कोमसोमोल समिति के एक सदस्य और समारोह-तैयारियों के प्रभारी, व्लादीमिर लेवेनग्तेइन ने लिखा—

"आप सुबह अखबार उठा लें और आप पढ़ेंगे—समारोह! समारोह! समारोह! आप रेडियो खोल दें और आपको समारोह के नवीनतम गीत सुनाई पड़ेंगे। शाम को स्कूल के छात्र विदेशी भाषा के पाठ सुनने के लिए टेलीविजन को घेर कर बैठ जाते हैं। कोमसोमोल द्वारा संगठित समारोह-क्लब, मास्को के विभिन्न भागों में खोले गये हैं। नगर की सड़कों और चौकों को सजाने के लिए सूरिकोव आर्ट स्कूल के छात्र डिजाइन तैयार कर रहे हैं।

"हमारे विश्वविद्यालय में समारोह संबंधी तैयारियों के बारे में आपने क्या सुन रखा है? सच्ची बात तो यह है कि अब तक कुछ नहीं। हालांकि हममें से हर कोई किसी न किसी रूप से सहयोग देने को तैयार है। हमारे पास लोग हैं और योजनाएं हैं। अब हमें एक ऐसे संगठनात्मक सूत्र की जरूरत है जो प्रतिभा और उत्साह से भरे लड़के-लड़कियों को एक जगह खींच लाये।

"अतः, हम एक रचनात्मक क्लब बनायें जिसमें सभी विभागों और उपविभागों के नर्तक और कलाकार, गायक और कवि एकत्र होकर अपनी प्रतिभा का परिचय दें।"

नृत्य-गान की, खेल-कूद की,
किसी कला की, जो प्रतिभा चाहो, दिखलाओ—

विद्यार्थियो, तुम्हारा स्वागत है

इस कोमसोमोल-क्लव में, आओ आओ, तुम सव आओ!

लेख इन शब्दो के साथ समाप्त होता था—"अत., शुभस्य शीघ्रम्।"

कुछ दिन वीते, और कोमसोमोल क्लव में ज़ोर-शोर से तैयारिया शुरु हो गयी। इसकी विभिन्न शाखाएं, नियत दिनो को विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक भवन में काम करने लगी। एक कमरे में विभिन्न उपविभागों के कई दर्जन व्यग्य चित्रकार प्रथम व्यग्यात्मक विज्ञापन निकालने की तैयारियां करने लगे। उन्होंने पढने और काम से जी चुरानेवाले छात्रों का वड़ी वेरहमी से मखौल उड़ाया। शौकिया फोटोग्राफरो की एक शाखा अपनी कला का आरभिक ज्ञान प्राप्त करने मे निरत थी। दूसरे कमरे में मनोरंजन शाखा के सदस्य 'विश्वविद्यालय की परपरा' के अनुसार वॉल-नृत्य के कार्यक्रमो की योजना वना रहे थे। एक अन्य कमरे में जहा लड़कियों का जमघट लगा था, हालाकि वहा मैंने दो लडको को भी देखा, समारोह-फैशन और कार्निवल-पोशाक शाखा पूर्ण रुप से व्यस्त थी।

हमारे विश्वविद्यालय में कोमसोमोल कार्यकलाप का क्षेत्र वहुत विस्तृत है जिसमें हर कोई अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार कोई न कोई काम अवश्य कर सकता है। हमारे नवयुवकों के इस अति लोकप्रिय गीत के शब्द अपना ख़ास अर्थ रखते हैं—

लेनिन की तरुणाई,

तुम हो वह उमग, वह लहर कि जिसने कभी विराम नही जाना है—

कभी नहीं सीखा मिट जाना—

लेनिन की तरुणाई,

तुमने काम न छोडा कभी अधूरा!
बस, तो, मित्रो,
आगे आओ, कदम बढाओ—
जीवन की पुकार पर केवल बढते जाओ!

जहां विद्यार्थी रहते हैं

आज मैं छात्रावास का निरीक्षण कर पाठकों को छात्रो के रहने के कमरो से परिचित कराऊगा। तथाकथित विद्यार्थी-भवन विश्वविद्यालय की मुख्य इमारत की बगल में है।

तीसरी मजिल के लिफ्ट से बाहर निकलकर मैं बैठके की ओर अग्रसर होता हू, जहा से सगीत की ध्वनि तैरती हुई आ रही है। खिडकियो पर रेशमी पर्दे झूल रहे हैं। खिडकियो के दासो पर फूल लगे गमले रखे हैं। आरामदेह आरामकुर्सिया और गद्दे करीने से सजाकर रखे हुए हैं। शतरज की छोटी-सी मेजें भी हैं। दीवाल के पास एक टेलीविजन सेट भी रखा है। एक विद्यार्थी पियानो बजा रहा है। उसकी कुर्सी के पीछे एक नीला जैकेट लटक रहा है जिसपर 'म० ग० ऊ०'* अकित है। ऐसे जैकेट भूगर्भशास्त्र विभाग के छात्र पहनते हैं।

बैठके से मैं चौथी मजिल की ओर बढता हू। एक लम्बे गलियारे के दाहिने और बायें, विद्यार्थियो के दो कमरेवाले फ्लैट हैं। हर दरवाजे पर लिखा है ४२७, ४२८, ४२९ ... पहले अक का अर्थ है—मजिल सख्या, और अन्तिम दो अको का अर्थ है—फ्लैट सख्या।

---

* मास्को राजकीय विश्वविद्यालय

एक दरवाज़ा थोड़ा-सा खुला हुआ है। इसके दरवाज़े पर लगी तख्ती से पता चलता है कि इसमें रईसा कोरनिगेवा और होचू-ती रहती हैं। ड्योढी में कई कोट टगे हैं। धूमिल शीशे के दरवाज़े से कमरे की रोशनी छनकर आ रही है। कमरे से आह्लादपूर्ण हंसी और ग्रामोफोन के वजने की आवाज़ सुनाई पड़ रही है। मैं दरवाज़ा खटखटाकर अन्दर दाखिल होता हू। ऐसा महसूस होता है कि मैं विना वुलाये किसी दावत में टपक पड़ा हू।

खाने की मेज़ के इर्द-गिर्द चार विद्यार्थी वैठे है, जिनमें है—दो रूसी लड़कियां, एक चीनी लड़की और एक लडका। मैं अपना परिचय देता हूं। वे सव भूगर्भशास्त्र विभाग के छात्र हैं उनके नाम—ल्युदमीला मिरोव्स्काया, चेन ल्यु-यॅग, रईसा कोरनिगेवा और हो चू-ती। वे मुझे वताते है कि वे हो चू-ती की २१ वी सालगिरह मना रहे है।

हो चू-ती का कमरा खूवसूरती से सजा हुआ है। दाहिनी तरफ दीवाल से सटी आलमारी रखी है, जिसका ऊपरी खाना पुस्तकें रखने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। उसमें भूगर्भशास्त्र की पुस्तके, माओ त्से-तुग और चीनी एवं सोवियत लेखको की कृतिया शोभायमान है। विचले खाने में, जो खींच देने पर मेज़ का भी काम करता है, पुश्किन की छोटी-सी ऊर्ध्वकाय मूर्त्ति, कई अन्य मूर्त्तियां और चीनी मजूपाए सजाकर रखी हैं। निचला खाना खाद्य-पदार्थ और वरतन-वासन रखने के काम में आता है। चौड़ी खिड़की के सामने लिखने-पढ़ने की मेज़ रखी है। दाहिनी तरफ एक कोच रखा है। दरवाज़े के पास कपड़े रखने के लिए दीवाल में आलमारी वनी है। सुंदर चीनी कशीदाकारी से दीवाल सुसज्जित हैं। किताव की आलमारी के ऊपर किसी विचित्र जानवर का वड़ा-सा सींग रखा हुआ है।

मेज़ पर नज़र दौडाने से पता चल जाता है कि मुझे हसी की गूज क्यो सुनाई पडी थी। छुरी और काटे की जगह चीन देश मे भोजन करने के लिए प्रयुक्त सलाइया (चौप स्टिक्स) रखी थी। ल्यु-काग और चू-ती अपने रूसी मित्रो को सिखा रही है कि उन सलाइयो का इस्तेमाल कैसे किया जाता है। लेकिन यह उतना आसान नही। चौथी वार रईसा एक मास के टुकडे को सलाइयो पर किसी तरह उठाने में सफल हुई लेकिन मुह तक पहुचते न पहुचते वह गिर गया। उस मौके पर मैंने उस पार्टी का एक चित्र ले लिया। चू-ती की स्वास्थ्य-कामना करते हुए मैंने चमकती हुई लाल मदिरा के घूट चटाये और फिर इस शुभकामना के साथ कि उनके जीवन में ऐसे अनेको आनंदपूर्ण वर्ष आयें और उसे अध्ययन मे सफलताए मिले, मैं आगे बढा।

छात्रो के एक कमरे मे से वातचीत और कहकहे की आवाज़ सुनाई पड रही है। कोई रूसी में बोल रहा है लेकिन विचित्र उच्चारण के साथ। अपनी सफेद राष्ट्रीय पोशाक पहने काले वालो वाला एक सावला लडका कमरे से निकलकर रसोईघर में दाखिल होता है। ये कौन लोग यहा जमा है? आयें चलकर देखें।

यहा ऐसी कोई नफासत या टीम-टाम नही दिखाई पडती जिससे यह जाहिर हो कि यहा कोई लडकी रहती है। प्रत्यक्ष है कि यह एक छात्र का कमरा है। कितावो की आलमारी में रूसी, अग्रेज़ी और हिन्दी की किताबें सजाकर रखी है। अच्छा, तो यह एक भारतीय स्नातकोत्तर छात्र भानुमूर्ति का कमरा है जो अध्ययन के लिए हाल ही में मास्को आया है।

मेज के इर्द-गिर्द आठ व्यक्ति वैठे है। वे जरा धक्कम-धुक्की से वैठे है, पर इनकी परवाह किसी को नही। भानु के यहा जो मेहमान पहुचे है, उनमें कनक चन्द्र महता, प्रतापसिंह और अरविन्द

वुचे नामक तीन भारतीय है जो मास्को विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर छात्र हैं और कुछ नये रूसी मित्र हैं जिनमें वोरीम त्वेस्कोई एक भाषाशास्त्री है, इवान मोरोज़ोव इन्डोलॉजी का छात्र है, व्लादीमिर पोद्व्याज्नी एक रासायनिक है और येव्गेनी त्सेन्त्रोव कानून का छात्र है। ये सव लोग मुरव्वा, विस्कुट और पीनखजूर के साथ सुगन्धित भारतीय चाय पी रहे है—सुदूर भारत से भेजा गया यह तोहफा हाल ही मे उन्हे प्राप्त हुआ है। मेरे वहा पहुचने से वातचीत का जो सिलसिला टूट गया था, वह फिर जारी हो जाता है।

"अच्छा यह तो वताओ, मूर्ति, कि आज के भारतीय लेखक अपनी रचनाओ में कौनसी समस्याए उठाते है?" इवान मोरोज़ोव ने प्रश्न किया। इवान मोरोजोव विश्वविद्यालय के प्राच्य भाषा संस्थान में अन्तिम वर्ष का छात्र है, जहा वह हिन्दी और भारतीय साहित्य का अध्ययन कर रहा है।

इन समस्याओ के वारे में कुछ यू ही वोल देना इतना आसान नही है," मूर्ति ने जवाव दिया। "लेकिन मै इतना ज़रूर कह सकता हू कि हमारे लेखक उपनिवेशवाद से मुक्त मानव-जीवन के नये मूल्याकन पर और मनुष्य के आवेगो के चित्रण पर काफी ज़ोर दे रहे हैं।" मूर्ति सोफा पर से उठ जाता है और दोनो खिड़की के पास चले जाते हैं। यह भारतीय छात्र लम्बा और दुवला-पतला-सा है, उसके काले चमकीले वाल अच्छी तरह संवारे है और चश्मे के भीतर से उसकी चतुर आखें झाक रही हैं।

वह गणितज्ञ है। उसे गणित सवंधी एक रूसी किताव पढने का पहला मौका १९४८ में मिला था। प० स० अलेक्सान्द्रोव की टोपोलॉजी सवधी पुस्तक का वह जर्मन अनुवाद था। टोपोलॉजी में मूर्ति की वहुत अभिरुचि रही है और उस पुस्तक की गहनता से वह वहुत प्रभावित हुआ।

उस समय से मूर्ति, जो बंगलोर विश्वविद्यालय का स्नातक था, सोवियत वैज्ञानिकों की कृतियों की तलाश में रहने लगा। उसे वहां अलेक्सान्द्रोव की एक दूसरी पुस्तक का पता चला जिसका नाम था 'कम्बिनेटोरियल टोपोलॉजी'। मूर्ति ने सोचा, "अलेक्सान्द्रोव एक महान् वैज्ञानिक है और उनकी पुस्तकें, चाहे जैसे भी हो, मुझे पढ़नी ही चाहिए।" लेकिन यह पुस्तक केवल रूसी में ही उपलब्ध थी और मूर्ति रूसी का एक शब्द भी नहीं जानता था। तब उसने उस सुदूर और अपरिचित देश की भाषा सीखने का संकल्प किया जहां उसके प्रिय विषय गणित की ऐसी उल्लेखनीय प्रगति हो चुकी है।

उस समय रूसी पाठ्य-पुस्तकों की तो बात अलग रही, अच्छे शब्दकोश भी प्राप्य नहीं थे। लेकिन मूर्ति ने रूसी भाषा में ही अलेक्सान्द्रोव की पुस्तक प्राप्त कर ली और उसमें सुपरिचित सूत्रों (फार्मूला) को देखकर उसका मन मसोस कर रह जाता। अन्तत, एक रूसी-अंग्रेजी शब्दकोश की मदद और अपनी दृढ़ लगन से वह एक एक पृष्ठ करके पूरी किताब पढ़ गया। वस्तुत यह एक बहुत कठिन काम था। लेकिन विज्ञान के लिए वह असंभव को संभव बनाने के लिए तैयार था। किताब के अन्त में पुस्तक-सूची थी। मूर्ति ने सोवियत वैज्ञानिकों की और कई किताबें मंगायी। शीघ्र ही यह तरुण गणितज्ञ सोवियत गणित के नवीनतम विकासों से अच्छी तरह परिचित हो गया और उसका पुस्तकालय लगभग तीन सौ रूसी पुस्तकों से भर गया। उसके पुस्तकालय में गणित की पुस्तकों के साथ साथ रूसी साहित्य की पुस्तकें भी रखी थीं। भानुमूर्ति को लेव तोल्स्तोय, चेखोव, गोर्की, निकोलाई ओस्त्रोव्स्की, मकारेंको और अलेक्सेई तोल्स्तोय की कृतियों में बड़ा आनंद मिलता था। उसने भाषा में अच्छी प्रगति कर ली तथा उस सुदूर देश की संस्कृति उसे और भी आकर्षक और निकटतर लगने

लगी   उसके मन में यह इच्छा वहुत वलवती हो उठी कि वह सोवियत संघ में जाकर रूसी गणित का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करे।

१९५७ में जब भारत और सोवियत संघ के बीच छात्रो के विनिमय का समझौता हुआ तो मूर्ति का स्वप्न पूरा हुआ। उसे सोवियत सघ आने का अवसर मिला और अब वह गणित तथा यन्त्रशास्त्र विभाग में स्नातकोत्तर छात्र है।

मूर्ति के भारतीय मेहमानो में से एक है मंझोले कद का नौजवान, जिसका नाम है प्रतापसिंह। वह वनस्पतिविज्ञ है—जड़ी-बूटियो का विशेषज्ञ। एक बार सोवियत संघ से जड़ी-बूटी और सुगन्धित वनस्पति के अखिल संघीय सस्थान के निर्देशक, लखनऊ राष्ट्रीय वनस्पति-उद्यान को देखने के लिए आये।

उस समय तरुण वनस्पतिविज्ञ प्रतापसिंह वही काम करता था और उक्त निर्देशक से उसकी जो वातचीत हुई वह उन दोनो ही के लिए दिलचस्प थी। प्रतापसिंह ने सोचा, "इनके देश में मैं बहुत-कुछ सीख सकता हू।" यह १९५५ की बात है। उसने सोवियत सघ जाने का सपना देखा और वह सपना शीघ्र ही पूरा हो गया। जब सोवियत संघ में पढने के इच्छुक विद्यार्थियो के लिए एक प्रतियोगिता की घोषणा की गयी तो प्रतापसिह ने तुरत अर्जी दे दी। मास्को आनेवाले ग्यारह सफलीभूत छात्रों में से वह भी एक था। वह अब वनस्पति विज्ञान विभाग में स्नातकोत्तर छात्र है। वह अब एक थीसिस की तैयारी कर रहा है जिसका नाम है—'हृदय-रोगो के इलाज में व्यवहृत जड़ी-बूटियां।

"अब एक गीत हो जाय," बुचे ने प्रस्ताव रखा।

"ठीक है," दूसरो ने उत्साह के साथ समर्थन किया, "वही अपना प्यारा गीत!"

उन लोगो ने एक लोकप्रिय गीत गाना शुरू किया और छोटा-सा कमरा स्वरो के उतार-चढ़ाव से गूंजने लगा—

काश ! कही तुम लेते जान,

काश ! तुम्हे होता अनुमान।

कितनी मुझको

प्यारी है—

मास्को की यह शाम !

मास्को की यह शाम !

मैं उन्हे खलल पहुचाये विना चुपचाप वहा से विदा हुआ।

मैंने सामूहिक पाकशाला का निरीक्षण करने का निर्णय किया। रसोईघर काफी हवादार, विस्तृत और साफ-सुथरा है। चार विद्यार्थी—तीन लड़किया और एक लडका—गैस के चूल्हे पर खाना पकाने में व्यस्त थे। एक दूसरा छात्र, शीशे की दीवाल के पीछे अपना पतलून इस्त्री कर रहा था। इस काम में वह वहुत निपुण जान पडता था।

निकल किये हुए एक वडे-मे व्वायलर से गर्म पानी लेकर अपनी केतलिया भरने के लिए आने-जानेवाले विद्यार्थियो का ताता कभी टूटता ही नही था।

वहा से मैं भूगोल विभाग के वैठके की ओर चला। नजदीक पहुचने पर मुझे एक लडकी का सुरीला स्वर सुनाई पडा। वह कोई अपरिचित धुन गा रही थी। गीत एक ऐसी लडकी के वारे में था जो पढाई के वाद गलियारे में घूमती हुई उस लडके को खोज रही थी जिससे उसकी मुलाकात लिफ्ट में हुई थी और जो पहली नजर में ही उससे इश्क में मुब्तला हो गई थी। जव वह गीत की आखिरी कडी गा रही थी तो मैं भीड से भरे वैठके में दाखिल हुआ। तालियो की गडगडाहट से कमरा गूज उठा। मैंने देखा कि गायिका ने अधिक पियानो वादक—काले वालोवाला एक दुवला-पतला लडका—ही झुक-झुककर विनम्रता प्रगट कर रहा था।

"यहा क्या हो रहा है और वह पियानोवादक कौन है?" मैंने अपनी वगलगीर से पूछा।

"क्यो आप विताली वोल्कोव को नही जानते?" वह आश्चर्य से बोली। "भूगोल विभाग में पचम वर्ष का वह छात्र एक होनहार सगीतकार हैं। उसने अभी अभी अपनी सवसे नयी धुन वजायी है।" "आज किस उपलक्ष्य में यहा गाना-वजाना हो रहा है?" "भूगोल विभाग में आज कविता और गीत भरी सध्या हम मना रहे हैं। उस लडके को देखिये जो आगे जा रहा है। वह कोल्या कार्पोव है, वह अपनी कविताए सुनायेगा।"

मच पर पहुचकर उसने मद्धिम आवाज़ में कुछ कहा। आगे वैठे विद्यार्थियों ने स्वीकृति के साथ सर हिलाये, लेकिन पीछे की भीड ने चिल्लाकर कहा—"ज़ोर से!"

उसने कई कविताए सुनायी। मुझे यह कविता वहुत पसद आयी—

हमें नही प्रिय उप काल का निर्मल, नील गगन, नीराजन—
हमें वहुत प्रिय पवन, प्रभजन, वर्षातप, घन—
कितना सत्य और शिव, सुन्दर,
विश्व हमारा ऐसा ऐसा उसका जीवन!
सुख-सन्तोष हमारा सीमित नही घरो की दीवारो तक
नहीं किसी निश्चित पौरी तक—
सुख-सन्तोष हमारा विस्तृत दूर वनो तक, उन खेतो तक, उन खानो तक—
अपने दिव्य-जगत के उन मधुमय प्राणो तक!
क्रुद्ध पवन उच्चास, प्रभजन हम झेलेंगे केवल हसकर—
हम कि वढेंगे अनदेखी, अनजानी-सी दुस्तर राहो पर—
हम प्रयोग के, हम साहस के, हम कि विजय के चिर-आकाक्षी,
हमें देखकर समय स्वय अपनी गति शिथिल करेगा, सत्वर!

आगे बढने पर मेरी भेंट अकस्मात् एक 'अन्वेषक' से हो गयी। वह अति मौलिक ढग से—घुटनो के बल—बढता चला जा रहा था। इसके सिवा दूसरा कोई चारा नही था क्योकि मेरा 'अन्वेषक' ८—१० महीने से अधिक उम्र का नही था। उसके चेहरे पर मुस्कराहट खेल रही थी। वह दरी पर रेंगता हुआ जल्द से जल्द बहुत दूर निकल जाना चाहता था। अभी मैं उसे उठाकर उसके मा-बाप की तलाश करने का विचार कर ही रहा था कि मुझे एक चिन्तित स्वर सुनाई पडा— "हे भगवान, बोवा कहा गया!" एक तरुणी ने दरवाजे से झाककर देखा और अपने बेटे पर नजर पडते ही बोल उठी—

"ओह, इसने घूमने की लत अपने मा-बाप से सीख ली है। एक मिनट के लिए भी हम बेखबर हुए नही कि यह लम्बी-चौडी दुनिया को देखने के लिए चुपके से सरक जाता है।'

उसने बच्चे को थपथपाया और अपने कमरे में लौट गयी।

निचली मजिल पर उतरकर मैंने अपने को भोजनालय में पाया। वहा भोजन करने के चार बडे बडे कमरे, कई लचन्स दर्जनों कैन्टीन और खाद्य-पदार्थ की दूकानें हैं। इनकी व्यवस्था हर छात्रावास में है।

मैं भोजन करने के एक कमरे मे घुसा। अधिकाश मेजें भरी हुई थी (उनमें ८०० व्यक्तियो के लिए स्थान है)। लडके और लडकिया हाथों मे ट्रे लिए हुए (विद्यार्थियों के भोजन के कमरे में खुद खाना परोसने की व्यवस्था है) मेजों के पास चले जा रहे थे। तीन रूबल पचास कोपेक में तीन कोर्सोवाले भोजन मिल जाते हैं जिनमें मास भी शामिल है। ५ रूबल में ४ कोर्सोवाले भोजन—ठडा भोजन (सलाद मछली के अडे या मक्खन), मास का सूप, मास सहित चुकदर या गोभी का सूप कटलेट, भूने हुए मास आदि औटे हुए फल, जेली, कॉफी या दूध मिल जाते हैं। हर मेज पर टमाटर, खीरे और गोभी के अचार रखे हैं जो रोटी की तरह ही मुफ्त खिलाये जाते हैं।

दरवाज़े के एक किनारे एक बडी-सी मेज हर प्रकार के ठंडे भोजन, पनीर, मछली के अडे, सौसेज सहित सैंडविच, कई प्रकार के सलाद, टिकिया, समोसे, केक, ग्रॉटे हुए फल, जेली, कॉफी या दूध से लदी हुई है। यहा से तुरत भोजन प्राप्त करने की व्यवस्था है। छात्र अपनी पसद के अनुसार भोजन की तश्तरी उठाकर ट्रे पर उसकी कीमत रख देते है और वाकी फाज़िल पैसे वापस ले लेते है। समय समय पर कैन्टीन का कर्मी पैसे उठाकर रखता जाता है।

दूसरे कमरे में दो काउटर है। एक पर ग्राप सेव, मोसम्मी, नारगी, नीबू और विभिन्न प्रकार के टीन में वद फल ख़रीद सकते है। दूसरे काउटर पर—कच्चे कटलेट, मांस के टुकडे, कुतरे हुए मास आदि ख़रीदे जा सकते है। गलियारे से आगे आने पर खाद्य-पदार्थ की दूकाने है और दाहिनी तरफ दरवाज़ो की कतार, जिनके ऊपर अकित है 'जूतो की मरम्मत', 'कपडो की मरम्मत', 'दर्ज़ीघर', 'फोटोग्राफर', 'धोबीघर' आदि।

धुले हुए कपडो का गट्ठर लिए हुए एक लड़की आख़िरी कमरे से वाहर निकली। अन्दर दाख़िल होने पर मैंने अपने को एक वडे-से धुलाईघर में पाया। यहा विद्यार्थी खुद ही कपड़े धो सकते है। उसमें दो वडे कमरे है जिनकी दीवाले और फर्श उजले टाइलो के वने है। एक कमरे से धुलाई-मशीन की हिमहिसाहट सुनाई पड रही है।

"साबुन को और छोटे छोटे टुकडो में काटो," सफेद चोगा पहने हुए एक लड़की, काले वालवाले वादामी रंग के एक लडके से कह रही है।

जब उसने देखा कि वह लड़का उसकी वात नही समझ पा रहा है तो लड़की ने इशारे से समझाया कि किस तरह साबुन काटकर धुलाई मशीन में डालना चाहिये। लड़का मुस्करा देता है और अव वात उसकी समझ में आ जाती है।

"कौन है यह?" मै पूछ बैठता हू।

"एक मिस्र देशवासी। और उसकी वगल मे खडा वह लडका इटालियन है। उसके पास ही एक और मिस्र देशवासी खडा है। दूसरे छोर पर, वहा दो मिस्र देशवासी, एक वियतनामी और एक रूसी लडकी है। अधिकाश लडकिया अपने कपडे धोवीघर में धुलाती है या अपने छात्रावास के स्नानघरो में ही खुद धो लेती है।

दूसरे कमरे में झाकने पर मुझे इस्त्री करने की खास मेजें और 'ड्रायर' दिखाई पडे। ये सब मुझे वहुत आवश्यक जान पडे क्योकि इनसे समय और पैसे की वचत होती है।

विद्यार्थियो की सुविधा के लिए विद्यार्थी-भवन में पुस्तको लेखन-सामग्रियो, औषधियो और विसाती की दूकानें है। भीतरी प्रागण में विद्यार्थियो का पोलीक्लिनिक है जो एक्स-रे, शरीर-चिकित्सा, चिकित्सा-सवधी शारीरिक व्यायाम तथा अन्य प्रकार की चिकित्साओ के कमरो से सम्पन्न है।

छात्रो के किराये का विल कितना उठता है, यह भी वता देना जरूरी है। सारी सुविधाओ—फर्नीचर, विछावन, विजली, नल और रेडिओ—से सुसज्जित कमरे के लिए छात्र को प्रति मास २५ रूवल, अर्थात् अपनी छात्रवृत्ति का ५—७ प्रतिशत देना पडता है। इसी किराये मे फुहारा-स्नान, गैस, टेलीफोन, रेडियो, टेलीविजन और पियानो का उपयोग भी शामिल है।

विश्वविद्यालय के सभी विद्यार्थियो को छात्रवृत्तिया मिलती है। नये छात्रो को प्रतिमास २९० रूवल और अर्द्धवार्षिक परीक्षा में सभी विषयो में उच्च अक प्राप्त करनेवाले छात्रो को अतिरिक्त २५ प्रतिशत प्राप्त होता है जो कुल मिलाकर ३६३ रूवल हो जाता है।

द्वितीय वर्ष के छात्र प्रतिमास क्रमश ३२० और ४०० रूवल, तृतीय

और चतुर्थ वर्ष के छात्र – ३५५ और ४४४ रूबल, पंचम वर्ष के छात्र – ३६५ और ४६४ रूबल पाते हैं। जब तक कोई छात्र उच्च अंक प्राप्त करता रहेगा तब तक उसे अतिरिक्त २५ प्रतिशत मिलता रहेगा।

छात्रवृत्ति नियत करने की व्यवस्था ऐसी है। विभागाध्यक्ष की अध्यक्षता में हरेक विभाग में विशिष्ट छात्रवृत्ति कमीशन बनाया गया है। इस समिति में विभागाध्यक्ष के अलावा, उसका एक उपाध्यक्ष और पार्टी, कोमसोमोल और ट्रेड-यूनियन संस्थाओं के प्रतिनिधि रहते हैं। समिति के पास छात्र अपने आवेदन के साथ साथ अपने मा-बाप की आमदनी के बारे में प्रमाणपत्र भी पेश करता है। इसके आधार पर, अर्थात् छात्र की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए, समिति फैसला करती है कि विद्यार्थी छात्रवृत्ति का हकदार है या नहीं।

सामान्य छात्रवृत्ति के अतिरिक्त, गण्यमान्य वैज्ञानिकों, लेखकों, चित्रकारों, राजनीतिज्ञों और सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं के सम्मान में भी छात्रवृत्तिया देने की व्यवस्था है।

मिसाल के लिए, स्तालिन छात्रवृत्ति (७८० रूबल) और कई कालीनिन छात्रवृत्तियां (५८० रूबल) सभी विभागों के सम्मानित (आनर्स) छात्रों को दी जाती है। गणित एवं यन्त्रशास्त्र विभाग में, अनुसधान के एक निश्चित क्षेत्र के वैज्ञानिकों के सम्मान में भी छात्रवृत्तिया हैं, जैसे – न्यूटन, 'रूसी विमान-चालन के प्रणेता' जुकोव्स्की, कोचिन, चेबिशेव और मोरोज़ोव छात्रवृत्तिया (प्रत्येक ४८० रूबल की)। जीवशास्त्र और मृदा विज्ञान विभाग में देश के गण्यमान्य जीवविज्ञानियों, शरीरविज्ञानियों और वनस्पति-शास्त्रियों – सेवेरत्सेव, प्रयानिश्निकोव, मेचनिकोव, पावलोव, तिमिर्याज़ेव, मिक्लूखो-मकलाय – के सम्मान में छात्रवृत्तियों की व्यवस्था है। भाषा-शास्त्र विभाग के छात्र चेखोव, गोर्की या मयकोव्स्की छात्रवृत्तिया या अन्य प्रसिद्ध लेखकों और साहित्यिकों के सम्मान में छात्रवृत्तिया पाते हैं।

हर साल उच्च शिक्षण का मत्रालय विभिन्न विभागो के लिए ऐसी छात्रवृत्तियो की निश्चित सख्या की व्यवस्था करता है। १९५६–१९५७ के विद्या-वर्ष में ऐसी २२८ छात्रवृत्तिया थी।

निस्सन्देह ३००–४०० रूबल कोई वहुत वडी रकम नही है लेकिन भोजन और किराये के लिए इतना काफी है। जरूरत पडने पर छात्र स्कूली छात्रो को पढाकर या अपने व्यावहारिक कार्यो के सिलसिले में गर्मियो में अभियान दलो के साथ काम करके अतिरिक्त पैसे जुटा सकते है। काम की व्यवस्था ट्रेड यूनियनो को सौपी जाती है।

प्रेम के वारे में

मै पाठको को अध्ययन और खेल-कूद के वारे में विश्वविद्यालय की मैत्री और पारस्परिक सहयोग के वारे में वता चुका हू, किन्तु मैने उस विषय के वारे में एक शब्द भी नही कहा जिसके विना युवक विद्यार्थियो की वात तो दूर रही, कोई भी युवक-मडली नही रह सकती। यहा तक कि समस्त मानव प्राणी भी नही रह सकता।

हमारे एक विद्यार्थी कवि ने एक वार लिखा था–

"खुशी आती है हमेशा
जोडे के पास,
और कभी नही
अकेले के पास

प्रिय पाठक, जैसा कि दुनिया के हर हिस्से में होता है हमारे विश्वविद्यालय के युवक भी प्रेम-जाल में पडते है और युवतिया भी वार-वार (दुर्भाग्य से) प्रेमासक्त होती है। रात्रि की नीरव वेला में हाथो में हाथ डाले मास्को की सडको पर युवक-युवतिया और ...

है। मोस्कवा-नदी के तटों पर प्रभात का अभिनन्दन करते है। ट्रालीवस के पड़ाव पर वस का इंतजार करते हुए भी वे एक दूसरे के आलिंगन में वधे रहते हैं। यानी अपने समय का हर क्षण वे एक दूसरे के साथ विताते है। हां, वे एक दूसरे को जी-जान से प्यार करते हैं। पर कभी कभी उतनी अनुरक्ति से भी नही। और जैसा कि सभी जगह होता है, उनमें भी प्रेम का झगडा, द्वेप और जुदाई होती है, पर फिर तुरत ही उनमें मेल भी हो जाता है।

किन्तु प्रेम के वारे में आपको वताने की आवश्यकता नहीं है, क्योकि प्रेम के वारे में जितना मैं जानता हू उतना आप भी जानते होगे। मै अपने दो मित्रो के मिलन, मित्रता और रोमास के सुखद अन्त के वारे में वताना चाहूगा जिनकी शादी में मुझे हाल ही में आमंत्रित होने का मौका मिला था।

एक दूसरे से उनका प्रथम परिचय द्वितीय वर्प में हुआ, गर्चे कि वे प्रथम वर्प में भी साथ-साथ पढते रहे थे। मैंने पहले ही वताया है कि विश्वविद्यालय में पहला वर्प विद्यार्थी को कितना कठिन जान पडता है। उसके ऊपर ब्लैक-वोर्ड, शिक्षक, पुस्तके और व्याख्यान ही हावी रहते है। मेरे ये दोनो मित्र द्वितीय वर्प में राहत लेने लगे और तव . इन दोनो की आखें चार हुईं।

इनके साथ पहली नज़र में ही मुहब्वतवाली वात नही घटी थी। दोनो में कोई खास खूवसूरती नही थी। पावेल वन्देल एक साधारण-सा रूमानियन लडका था और एमीलिया विनोकूरोवा एक साधारण रूसी लड़की।

दूसरा वर्प वीता और तीसरा वर्प भी। लडके और लडकियां घनिप्ट दोस्त वन गये। साथ साथ सिनेमा, थियेटर और प्रदर्शनियो में जाने लगे। परीक्षा में एक दूसरे के लिए चिन्ता करने लगे। एक दूसरे की खुशी में खुश और गम में दुखी रहने लगे। लेकिन 'वह', जैसा

कि दोनो कहते हैं, चौथे साल में ही शुरू हुई। "कैसे ? वे हसते हुए पूछते है। "यह कहना वहुत मुश्किल है।" हालाकि वह बुखारेस्त का रहनेवाला और वह मास्को के समीप प्तित्सेग्राद नगर की रहनेवाली थी। लडका काले वालोवाला और सफेद एव लवे चेहरेवाला था और वह सुनहले वालो और गुलावी गालोवाली एक टिपिकल रूसी लडकी थी। फिर भी उन दोनो में वहुत-सी वाते एक जैसी ही थी। पावेल हसमुख और मिलनसार था तथा केवल इतिहास विभाग में ही नही (जहा दोनो साथ साथ पढते थे) वल्कि दूसरे विभागो में भी लोकप्रिय था। वह सहज ही मित्र वना लिया करता था। एमीलिया शात स्वभाव की थी और खासकर छात्र सहपाठियो के साथ कुछ अधिक गभीर रहती थी। वह अपनी सध्या पुस्तके पढने में विताना पसद करती थी। उसे सगीत से प्रेम था और पियानो वह थोडा-वहुत वजा लिया करती थी। दोनो अपने पेशे को पसद करते थे। पावेल अपने वर्ग में सवसे अच्छे छात्रो मे से एक था। एमीलिया की अध्ययन-क्षमता उसके वहुत-से सहपाठियो के लिए ईर्ष्या का विषय थी।

एमीलिया और पावेल दोनो एक ही वर्ग में अग्रेज़ी का अध्ययन करते थे। एक दिन एमीलिया वीमार पड गयी और उसे कई व्याख्यानो से गैरहाजिर हो ज़ाना पडा। पावेल अग्रेजी अच्छी तरह जानता था, इसलिए उसने लडकी की मदद करने का इरादा किया। उन दोनो के लिए वे खुशियो से भरे दिन थे। वह उसके कमरे में आता और उसके विस्तर की वगल में वैठकर अग्रेजी के कठिन शब्दो का प्रयोग करता और उनका अर्थ वताता। दोनो यही सोचते हैं कि उन्ही दिनो मुहव्वत ने अपना अन्तिम अस्त्र चलाया।

लेकिन जव उसे प्रगट करने का अवसर आया तो पावेल की जीभ तालू से सट गई। वैसे मौके पर उसकी ज़िन्दादिली, मिलनसारिता और हिम्मत ने धोखा दे दिया।

जाड़े की छुट्टिया आयी और पावेल बुखारेस्त चला गया और एमीलिया प्तित्सेग्राद। दोनो को एक दूसरे का अभाव बहुत खला। वापस आने पर अगली सध्या को पावेल, एमीलिया से मिलने गया और उसने अपना प्रस्ताव रख दिया।

हाल ही में उन्होंने अपनी शादी की खुशिया मनाई। उनके दोस्तों ने पूजी जुटायी और उसका नतीजा यह कि खाने-पीने का अबार लग गया।

विवाहोत्सव के दिन, सध्या होने के पहले से ही एमीलिया के दोस्तो का ताता बध गया और उसका बिस्तर उपहारो के छोटे-बड़े बडलो से भर गया। रसोईघर में किसी को भी जाने की इजाजत नही थी। वहा एमीलिया की तीन सहपाठिनिया—एक रूसी, एक उक्रइनी और एक कराकाल्पक लडकी—विविध व्यजन तैयार करने में गैस के चूल्हे के साथ भिडी हुई थी। बगल के कमरो मे मेजें लायी गयी और विस्तृत रसोईघर में एक लम्बी पक्ति में करीने से सजा दी गई। छात्रो को अपने साथ दो-दो कुर्सिया लाने को कहा गया ताकि मास्को के एक समीपवर्ती कारखाने तथा अन्य उच्च शैक्षणिक सस्थाओ मे आमन्त्रित मेहमानो के लिए भी स्थान का प्रबन्ध हो जाय।

हम ४० जने मेज को घेरकर बैठ गये। निस्सन्देह भीड काफी थी, पर कहावत है कि जितनी ही अधिक भीड उतना ही अधिक मज़ा। पहला दौर पावेल के सहपाठी आर्मेनिया निवासी ग्रीशा मकरतिचान की ओर से चला—

"तुम एक दूसरे को हमेशा हमेशा के लिए प्यार करो। तुम्हे ससार की सारी खुशिया और मौज मिले तथा तुम्हारी सेहत अच्छी रहे और ढेर-से बाल-बच्चे हो!"

बड़े बडे समोसो से मेज़ भरी थी और एक बड़े-से समोसे पर अकित था—"नवदम्पति को प्यार और शुभकामना के साथ।" अचानक कोई चिल्ला उठा—"कडवी!"

यह एक रूसी रस्म है कि विवाहोत्सव में प्रस्तुत मदिरा जब मेहमानो को "कड़वी" जान पडे तो दुल्हा और दुल्हन एक दूसरे को तब तक चूमते रहते हैं जब तक मेहमान यह ऐलान न कर दें कि मदिरा मीठी हो गयी है और अब पीने लायक है। उन बेचारों को झेंपते झेपते बारह बार एक दूसरे को चूमना पडा और तब जाकर मेहमानो की 'कड़वी-कडवी' की रट बद हुई।

७ वी मज़िल पर खुशी और आनद से भरा यह उत्सव देर गयी रात तक चलता रहा। नाच और गाने हुए। नवदम्पत्ति की खुशी और सौभाग्य के लिए, रूमानियन और सोवियत जनता की मैत्री के लिए शराब के अनगिनत दौर चले।

सभी लड़के दुल्हन के साथ नाचे और सभी लड़कियो के साथ दुलहा नाचा।

एमीलिया और पावेल वन्देल के लिए आनद से भरे इस दिवस का कभी अन्त न हो!

विश्वविद्यालय की शौकिया कला-मंडलियां

मास्को विश्वविद्यालय के हज़ारो छात्र ऐसी कई शौकिया कला-मडलियो के सदस्य हैं जो विभिन्न विभागो और छात्र-दलो में कायम की गयी हैं। मुख्य मडलिया लेनिन पहाडी पर सास्कृतिक भवन में, मखोवाया सडक पर विश्वविद्यालय की पुरानी इमारत के क्लब में और मानव-विज्ञान विभाग के छात्रावास के क्लब में सगठित की जाती है। विश्व के युवको और छात्रो के छठे समारोह के लिए विश्वविद्यालय की सभी शौकिया कला-मडलियो ने सक्रिय रूप से तैयारिया की। हर विभाग और हर छात्र-दल ने अपने अपने नये कार्यक्रम तैयार किये। एक विश्वविद्यालय-व्यापी कला-प्रतियोगिता की घोषणा की गयी जिसमें छात्र-जीवन पर आधारित सर्वोत्तम

व्यग्यप्रधान प्रहसनात्मक समीक्षा (रिव्यू) संबधी प्रतियोगिता भी शामिल थी। उन्होने कार्यक्रम खुद लिखकर उनका प्रदर्शन किया। विद्यार्थियो और प्राध्यापको पर प्रहसन तैयार किया गया था। प्रदर्शन लोगो को बहुत पसद आया।

सास्कृतिक भवन का कसर्ट-हॉल बहुत ही अच्छा है। उसमें ८०० दर्शको के लिए स्थान है तथा रिहर्सल के लिए कई कमरे भी है। उधर से गुज़रते हुए मेरी नज़र एक दरवाज़े के ऊपर चली गई जिसपर अकित था–'आपेरा स्टूडियो'। मैं अन्दर दाखिल हुआ। छात्र, चैकोव्स्की के 'येवगेनी ओनेगिन' में बाल-रूम दृश्य का रिहर्सल कर रहे थे।

इस आपेरा स्टूडियो को खुले बहुत दिन नही हुये है। पिछले साल इसने फोमिन का प्रहसनात्मक आपेरा 'चक्कीवाला, जादूगर, ठग और अगुवा' और मेडतुस द्वारा विरचित 'तरुण रक्षक' तथा 'येवगेनी ओनेगिन' के कई दृश्य प्रस्तुत किये। इन तीनो में इसे बहुत बड़ी सफलता मिली। इससे प्रोत्साहित होकर निर्देशक और छात्रों ने अखिल संघीय शौकिया कला प्रतियोगिता के लिए सम्पूर्ण 'येवगेनी ओनेगिन' को रंगमंच पर प्रस्तुत करने का निर्णय किया। इस मंडली द्वारा प्रस्तुत एक भी दृश्य मैंने कभी नही देखा था। मेरा ख्याल था कि आपेरा शौकिया कला-प्रेमियो के लिए नहीं है। और उन्होंने अपनी सामर्थ्य से अधिक काम का बीडा उठा रखा है। लेकिन उनके कुछ मिनटो के रिहर्सल से ही मुझे अपना ख्याल बदलना पड़ा।

इस दृश्य का रिहर्सल चल रहा था जिसमें लेस्की, ओनेगिन को द्वन्द्वयुद्ध के लिए ललकारता है। एक छरहरा लड़का शीघ्रता से कमरे के बीच में आ जाता है–

"ओनेगिन, अब तुम मेरे मित्र नही रहे! मैं तुम्हारा तिरस्कार करता हूं!"

कैसा कोमल स्वर था, मैंने वैसा स्वर कभी नही सुना था। उसके स्वर और व्यक्तित्व प्रेम मे विभोर स्वप्नदर्शी तरुण कवि की भूमिका के लिए बिलकुल उपयुक्त थे।

ओनेगिन सामने आता है। उसकी भूमिका, सघन काले वालो तथा काली मूछोवाला एक छात्र गाता है।

"सुनो, लेस्की ."

"रुको।"

यह आवाज निर्देशक प्योत्र मित्रोफानोविच सुरको की थी।

"ठीक नही हुआ। व्लादीमिर तुम्हारा चेहरा वहुत भावशून्य जान पड़ता है। याद रखो तुम्हे लेस्की को कुरेदने वाले आवेगो, उसका क्रोध, उसका तिरस्कार और उसकी प्रतिशोध-पिपासा का प्रदर्शन करना है।"

निर्देशक पियानो की ओर वढता है। "अत फिर शुरू से।" वह पियानो-वादक को आदेश देता है।

इस वार उस दृश्य का रिहर्सल कुछ सतोपजनक रहा। लेकिन अभी भी वहुत कुछ ठीक करना है। लेस्की और ओनेगिन, दोनो को, रगमंच पर और भी अधिक स्वाभाविक दिखाई पडने के लिए वहुत कुछ सीखना है।

"अव हम थोडी देर के लिए विश्राम करेगे," निर्माता ने कहा—"और तव हम ट्रिकेट से दृश्य का रिहर्सल करेगे।"

रिहर्सल के वाद निर्देशक ने मुझे वताया कि उस वढिया स्वर का मालिक व्लादीमिर चेरेमिमीनोव है जो भौतिकशास्त्र विभाग मे अवर स्नातक है तथा ओनेगिन की भूमिका गानेवाले का नाम गोरा अरुत्यूनोव है जो रसायन विभाग में प्रयोगशाला-सहायक है। ओल्गा है—नताशा कार्सायेन्सकाया, जो जीवशास्त्र और मृदाविज्ञान विभाग में छात्रा है तथा तत्याना है—सेसिलिया सेर्वेन्युक, जो जीव-शास्त्र की कैंडिडेट, अध्यापिका और विभागीय सदस्या है।

वाहर गलियारे में फिर से संगीतात्मक स्वरों का जमघट सुनाई पडता है। एक कमरे से लोक वाद्यो के साथ एक सुरीला स्वर सुनाई पड़ रहा है।

यह व्लादीमिर कुज़्नेत्सोव है जो भौतिकशास्त्र विभाग में पचम वर्ष का छात्र है। वह अकार्दियन और वलालायका के साथ एक पुराना रूसी गीत गा रहा है।

दूसरे कमरे से विलकुल एक दूसरे प्रकार की संगीत-ध्वनि आ रही है। दरवाज़ा खोलते ही विविध स्वरो के ववडर में मै पड जाता हू। विश्वविद्यालय की जाज वैंड मडली फौक्स-ट्रॉट की एक सजीव धुन वजा रही है। वैंड नेता अगल-वगल झूम रहा है। तीन लड़के तुरही वजा रहे है। अन्य पाच जने अपने अपने साक्सोफोन पर विविध स्वर निकाल रहे है और ढोल वजानेवाला अपने सारे वाद्य-यन्त्र वजा रहा है। वह साथ साथ अपनी डडियां ऊपर फेंक कर रोक लिया करता है और आख-मुह वना रहा है। मै भी वाजे की धुन पर झूमने लगा और पैर पटकने लगा। चुपचाप वैठना मुश्किल था। जाज़ वैंड मंडली अगले समारोह के लिए रिहर्सल कर रही थी।

दूसरे कमरो में ललित कला के प्रेमी व० न० रुत्साई नामक चित्रकार से सवक ले रहे थे। आज वे एक मॉडल देखकर चित्र में रग भर रहे थे। गर्मियो और जाड़ो में अक्सर नौसिखिये चित्रकार विश्वविद्यालय की वसों में लद कर मास्को से वाहर जाते है और वहा के दृश्यो के चित्र वनाते है।

स्टूडियो से मैंने भीतर झांककर यह जानने की कोशिश की कि जनतत्र के जन-कलाकार, प्रो० निकोलाई वासिल्येविच पेत्रोव के निर्देशन में थियेटर मंडली का रिहर्सल कैसा चल रहा है। अभी हाल ही में इस शौकिया कला मडली ने यूगोस्लाव नाटककार कृत 'डा०' ('दर्शनशास्त्र का डाक्टर') नामक कॉमेडी का पहला प्रदर्शन वड़ी

सफलता के साथ प्रस्तुत किया था। उस रात सास्कृतिक भवन के कसर्ट-हॉल में तिल रखने की भी जगह नही थी और कलाकारो को दर्शको के आग्रह के कारण वार वार पर्दे से वाहर आना पडा।

केवल लेनिन पहाडी पर स्थित सास्कृतिक भवन में २३ शौकिया कला मडलिया है जिनमें ७०० से ज्यादा शौकिया कलाकर–छात्र, प्राध्यापक और कर्मचारी है। जिस दिन मै दौरे पर निकला था, उस दिन मैने १०० गायकोवाली शास्त्रीय गीत मडली नही देखी जो पिछले २० वर्षो से मास्को सगीत-विद्यालय के प्राध्यापक स० व० पोपोव के नेतृत्व में ख्याति प्राप्त कर रही है। द्वितीय थियेटर मडली भी नही देख सका जिसने हाल में मक्सिम गोर्की के 'अन्तिम' का प्रदर्शन वडी सफलता से किया था। वैले मडलियो, पियानो और वैंड मडलियो, अकार्दियन वादक मडली तथा अन्य कई मडलियो को भी देखने का अवसर नही मिला।

कौन जानता है कि ये शौकिया कलाकार भविष्य में पेशेवर कलाकार वनकर ख्याति और प्रशसा प्राप्त करे। ऐसा पहले हो चुका है। लेकिन अधिकाश शौकिया कलाकारो का ध्येय यह नही है क्योकि वे अपने प्रधान और आधारभूत पेशे को प्यार करते है और केवल मनोरजन और जीवन का आनन्द लेने के लिए ही शौकिया कला की ओर झुकते है।

'हर एक देश और हर जाति, जवानो के ही दम से जगमगाती.'

"यह मास्को राजकीय विश्वविद्यालय का प्रसारण-केन्द्र है। अव हम अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थी-दिवस के उपलक्ष्य में प्रसारण आरभ करते है। हमारे कार्यक्रम में विभिन्न देशो के छात्रो और युवको के गीत शामिल है।"

जब हम केन्द्र के निकट पहुचे तो हमें "प्यार की उम्र" नामक फिल्म से एक गीत के मधुर स्वर हवा में तैरते हुये सुनाई पडे मेरे साथ थी मेरी सहायिका स्वेतलाना गोर्बाचेवा–भाषा-शास्त्र विभाग में पंचम वर्ष की छात्रा। वह हमारे अखबार की संवाददातृ है और फ्रेंच भाषा की दुभाषिया। अन्तर्राष्ट्रीय छात्र-दिवस के उपलक्ष्य में लेनिन पहाड़ी पर मनाये जानेवाले कार्निवाल के बारे में हमें लिखने का भार सौंपा गया था।

किसी भी देश में ऐसी हर शैक्षणिक संस्था का, जिसमें विदेशी छात्र पढते है, अपना एक स्थान है जहा छात्र मिलते-जुलते हैं। लेनिन पहाड़ी पर वही, प्रसारण-केन्द्र के रूप में है। इसके दरवाजे सब के लिए खुले हुए हैं। इनकी देहली पार कर सोवियत छात्रों के बीच पहुंचते ही हर कोई अपना अपना-सा महसूस करने लगता है। ये सोवियत छात्र ही इसके अधिकाश कार्यक्रम तैयार करते है। विभागीय रेडियो सपादक-मंडल भी हैं जो विभागीय कार्यक्रम तैयार करते है। बहुत-से प्रसारणो में विदेशी छात्र भी भाग लेते है।

जब हम वहा पहुचे तो सपादकीय कार्यालय में १०–१५ विद्यार्थी थे। बायीं ओर, कोने में मेरी नज़र ल्यूबोव पोल्तोरक पर पडी जो टेकनिकल सेक्रेटरी है। वह टाइप-राइटर के सामने बैठी हुई, दस वर्षीय स्तेफान होन्डा के साथ टिकटो को छाट रही थी। मुझे याद है कि कई महीने पहले वह यहा आया था और दरवाज़ा खोलकर उसने पूछा था–

"कृपया यह बताइये कि क्या आप यही से बोलती है?"

"हा," ल्यूबोव ने जवाब दिया, "अन्दर आओ। कौन हो तुम?"

"मेरा नाम स्तेफान हैं। मेरे पिता, होडा, रूमानियन स्नातकोत्तर छात्र हैं। मैं देखना चाहता हू कि आप प्रसारण कैसे करती हैं। इजाज़त है?"

"क्यो नही? चले आओ। केवल चूहे की तरह शात रहना।"

श्तेफान एक घटे तक आपरेटिग रूम में रहा और उसके छ वड़े वड़े टेपरकर्डरो का निरीक्षण करता रहा। वहा से चलते समय उसने कहा—

"मुझे यहां वहुत अच्छा लगा और मैं यहा अक्सर आते रहना पसंद करूंगा।"

और सचमुच श्तेफान अगले दिन आया। वहा उपस्थित सभी व्यक्तियो का अभिनदन करते हुए वह तत्याना पुस्तोवालोवा के पास पहुचा जो सपादक-मंडल की एक सदस्या है, और वोला—

"क्या तुम अभी व्यस्त हो?"

"नही। मैं आज का प्रसारण-कार्य समाप्त कर चुकी हू।"

"तो क्या तुम मुझे डिक्टेशन देने की कृपा करोगी?"

"जरूर!" तत्याना ने उत्तर दिया।

जान पड़ता है कि श्तेफान को सोवियत स्कूल में वुरे अक मिलते रहे है—वह रूसी भाषा में कमजोर है। तत्याना ने उसको अच्छे अक दिलाये और वह खुशी से फूल उठा। उस दिन से वह प्रसारण केन्द्र नित्य प्रतिदिन पहुच जाता है। इसके अलावा, एक और भी कारण है। उसे टिकटो का सग्रह करने का वडा शौक है। ल्यूवोव, जो विदेशी डाक खोलती है, टिकटो को उखाड कर श्तेफान को सौंप देती है। अपने पहले दौरे के शीघ्र वाद ही वह एक दिन अपने पिता को वहा खीच लाया। हमें पता चला कि श्तेफान को और तीन भाई-वहन हैं। वे वुखारिस्त में अपनी मां के पास रहते है।

"तत्याना!", आपरेटर ने अपने कमरे से पुकारा, "हम फ्रेंच ब्राडकास्ट की रेकर्डिंग खत्म कर ले।"

"अच्छी वात है। मैं तैयार हूं। साथियो, सावधान! तीन मिनट के लिए पूर्ण शांति।"

तत्याना कमरे के दो टेलीफोनों के रिसीवर उठाकर अलग रख देती है (ताकि वे बजने न पायें), एक खिड़की के सामने रखी एक छोटी-सी मेज़ के पास बैठ जाती है। उस मेज़ पर तीन माइक्रोफोन रखे हैं। कुछ देर वाद आपरेटर को इशारा करती है। लाउड स्पीकर से वाक्य की अन्तिम कड़ी सुनाई पड़ती है और तब उसका अनुवाद: "वाकी सांझ तुम कहा विताना पसंद करोगे?" फिर फ्रेंच शब्द और तब उनका अनुवाद—"मैं नाच में शरीक होना पसंद करूंगी..." कुछ सेकंड वाद तत्याना ऐलान करती है—

"अभी अभी आपने फ्रेंच भाषा के सवक का प्रसारण सुना। आज का विषय था 'रेस्तरां में रात का भोजन'। प्रसारण में भाग लेनेवाले हमारे फ्रेंच मित्र थे जॉन डास्काट और आन्ना रोजे। आप अपनी आलोचनाएं निम्न पते पर भेजें—मास्को विश्वविद्यालय का प्रसारण-केन्द्र, सेक्टर 'न', कमरा १४७। अच्छा, विदा! शुभरात्रि, साथियो।"

जब विश्वविद्यालय में समारोह की तैयारिया की जाने लगीं तो प्रसारण-केन्द्र के संपादक-मंडल के पास ढेर-से पत्र पहुंचने लगे जिनमें विद्यार्थियों ने विदेशी भाषाओं के पाठ प्रसारित करने का अनुरोध किया था। शुरू शुरू में संबद्ध भाषाओं (फ्रेंच, अंग्रेजी और जर्मन) के हमारे शिक्षकों ने पाठ्य-क्रम तैयार कर प्रसारित करना शुरू किया। लेकिन शीघ्र ही विश्वविद्यालय के विदेशी छात्रों ने अपनी सेवाएं समर्पित की और वे स्वयं पाठ तैयार कर उन्हें प्रसारित करने लगे।

मेज़ के पास से तत्याना के उठते ही कमरा फिर शोर-गुल से भर गया। हर कोई किसी न किसी काम में मशगूल हो गया। जॉन

मेफिस्टोफेलिस का चित्र बना रहा है और अन्ना उसे मदद दे रही है। चमडे के लम्बे-से कोच पर बैठा हुआ सुनहरे बालोवाला एक व्यक्ति, जिसने हलके खाकी रग का सूट पहन रखा है, काले बालो और बडी बडी आखों वाले लड़को से अग्रेज़ी और फ़्रेंच में बाते कर रहा है। ये लड़के मिस्रदेश और अलजीरिया के रहनेवाले है। मिस्रदेशवासी अग्रेज़ी बोलते है और अलजीरियावाले—फ्रेंच तथा उनका नया दोस्त—आन्द्रे राडिगे—फ्रास का रहनेवाला है। वह फ़्रेंच, अग्रेज़ी और रूसी, तीनो भाषाओ में समान अधिकार रखता है।

फ्रेंच विद्यार्थी मिस्रवासी विद्यार्थियो के मित्र बन गये। वे फ़्रेंच विद्यार्थियो के साथ विश्वविद्यालय का निरीक्षण करते रहे। फ़्रेंच विद्यार्थी उनके मार्ग-प्रदर्शक का काम कर रहे थे। शाम में मिस्रदेश के छात्र सैर-सपाटे के लिए निकलना चाहते थे, लेकिन उनके पास गरम कोट नही थे। आन्द्रे मोनियट, जानोट डूरेन और आन्द्रे राडिगे ने अपने कोट उन्हे दे दिये और अपने लिए कोट अपने रूसी सहपाठियो से माग लिये। हाथो में हाथ डाले ये नये साथी विश्वविद्यालय के अहाते में बर्फ की ओढनी ओढे सडको पर टहलते रहे, गाढी नींद में सोये फौव्वारो और बरफ की परत से लदे चीड वृक्षो की बगल से गुज़रे।

वे एक दूसरे के घनिष्ठ मित्र बन गये और नित्य-प्रतिदिन प्रसारण-केन्द्र में मिलते-जुलते रहे।

मिस्रदेश के छात्रो के आने के कुछ दिन बाद आन्द्रे राडिगे की नज़र भोजन के कमरे में बादामी चमड़ीवाले एक लडके पर पडी जो खज़ांची के पास खड़ा खड़ा बेबसी से इधर-उधर देख रहा था।

"एक नवागंतुक, मिस्रदेशवासी," आन्द्रे ने यही सोचा।

उसके पास पहुच कर आन्द्रे ने अंग्रेजी में पूछा—"क्या मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकता हू?" आन्द्रे को आश्चर्य में डालते हुए उस लड़के ने वडी अच्छी फ्रेंच भाषा में जवाव दिया—

"अफसोस, मैं अंग्रेजी नही वोल सकता। क्या तुम फ्रेंच जानते हो?"

"ओह, हा, हा, मैं 'थोड़ी' फ्रेंच भाषा जानता हूं!"

"मै अलजीरिया का रहनेवाला हूं। मैं हाल ही में पेरिस से यहा आया हू। मै वही पढता था। मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि अन्तर्राष्ट्रीय छात्र सघ ने मुझे मास्को भेजा है। इसके वारे में मैं वाद में तुम्हे विस्तारपूर्वक वताऊंगा। अभी कृपया तुम मुझे खाद्य-पदार्थ खरीदने में मदद करो। मै रूसी का एक शब्द भी नही जानता..."

इस प्रकार अलजीरिया के छात्र से आन्द्रे की दोस्ती हो गयी।

. घड़ी में सात वजने को हैं। अन्तर्राष्ट्रीय दिवस के उपलक्ष्य में कार्निवाल शुरू होनेवाला है।

सांस्कृतिक भवन और सम्मेलन-हॉल की दर्शक-दीर्घाए रोशनियो से जगमगा रही थीं। उनकी दीवाले चीड़ की हरी टहनियो और फूलो तथा विभिन्न प्रकार के मजेदार कार्टूनो से सुसज्जित थी। आर्केस्ट्रा एक सजीव धुन वजा रहा था।

घड़ी ने शाम के ८ वजाये। सम्मेलन-हॉल की रोशनी मन्द पड़ गयी। कई लड़के और लड़किया हाथ में मशाल लिए रगमच पर प्रगट हुये... विशाल गोलक विविध रंगीन रोशनियो से जगमगा उठे—ये रंग छठे विश्व युवक एवं छात्र-समारोह के प्रतीक थे।

मास्को में पढनेवाले विदेशी छात्रो का कसर्ट एक कोरियन गीत से आरंभ हुआ जिसे स्कूल न० २४ की छात्राएं और विश्वविद्यालय के कुछ कोरियन लडके मिलकर गा रहे थे।

दर्शको से खचाखच भरा हॉल जर्मन छात्रो की लोकप्रिय मडली के प्रगट होते ही तालियो से गूज उठा। एक के वाद दूसरी और दूसरी के वाद तीसरी स्वर-लहरिया तैरने लगी और तव स्पप्ट स्वर समवेत स्वर में खो गये। वह गीत यूरोप के विभिन्न नगरो के वारे में था। वर्मी छात्रो ने अपनी मातृभूमि के वारे में गीत गाये। उसके वाद रुसी लोक-नृत्य मडली सामने आई और तव फ्रेंच छात्रो ने एक मूक-प्रहसन प्रस्तुत किया। उसके वाद रूमानिया का ओक्ताविअन निजदारे एक जादूगर के रूप में रगमच पर प्रगट हुआ। रुसी छात्रा ओल्गा दोव्रोखोतोवा ने कई लोक-गीत गाये और जॉन डेसकाट ने इव मन्तान के 'गिरी हुई पत्तिया' और 'युद्ध के लिए निकला हुआ सैनिक' गीत सुनाये।

उसके वाद पूर्वी राग-रागिनियो को सुडानी छात्र यूसेफ वुगर ने वासुरी से मिलते-जुलते एक लोक-वाद्य पर मुखरित किया। सर्कस-विद्यालय के छात्र एर्मिनगेल्ट लुट्टो नामक एक निग्रो ने कई करतव दिखलाये। वुलगारियन छात्रा तोल्का दोव्रियानोवा ने कविता-पाठ किया और एक सहपाठी के साय वलगारिया का प्रहसन-गीत गाया।

..पर्दा गिरता है और खुशी और शोर-गुल से उमगती भीड दीर्घा की ओर लपकती है। शोर-गुल में जाज़ वैंड की आवाज डूव जाती है। देदीप्यमान चेहरे रगविरगी पोशाके। एक स्पेनिश छात्र अपने जोड़े की ओर मुस्कराकर देखता है और नृत्य-मडली में खो जाता है। रुसी पोशाक पहने हुए लडकियो का दल नर्र से गुज़र जाता है। एक झवरा भालू भीड को ठेलता हुआ वढा जा रहा है

वहुत-से विदेशी छात्र अपनी राष्ट्रीय पोशाके पहनकर आये है।

वर्मी अपने सिर पर के रंगीन रूमालो से ही पहचान लिये जा सकते हैं। लम्बी चोटियोवाली एक रूसी लड़की, पगड़ी पहने एक लम्बे लड़के के साथ नाच रही है। उसकी वर्फ-सी सफेद पोशाक उसकी वादामी चमडी पर खूब फब रही है। वह वही सुडानी लड़का है जिसने कंसर्ट में भाग लिया था। उसके पास हम पहुंचते हैं। युसेफ़ मोहम्मद वुशर हमें बताता है कि वह चिकित्साविज्ञान का स्नातक है और अब मास्को विश्वविद्यालय में रसायनशास्त्र का अध्ययन कर रहा है। आन्ना रोजे जिससे हमारी मुलाकात हो चुकी है, लूट्टो और एर्नस्ट अमेतिस्तोव नामक एक विधिशास्त्र विभाग के छात्र से वहस कर रही है। यह कल्पना करना मुश्किल है कि यह फ्रेंच लड़की युद्ध की विभीपिका सहन कर चुकी है। अपने देश की मुक्ति के लिए राष्ट्रीय सघर्प में वह तीन वर्ष तक सक्रिय रूप मे भाग लेती रही। वह सितम्बर के आरभ में सोवियत सघ पहुची और यहां के हायर नरवस एक्टिविटी के उपविभाग में छात्रा है जहा वह कन्डिशनल रेफलेक्सेज़ की समस्याओ का अध्ययन कर रही है।

"हम लोगो का यहा ऐसा हार्दिक स्वागत हुआ है," वह कहती है, "कि यदि मैं रूमियो की एक पुरानी दोस्त नही होती तो मैं अब जरूर हो जाती।"

दो नौजवानो ने हमारा साथ पकड़ लिया। वे सिरिया के छात्र डेक एल वाव जाफर और अकेल इशाम इब्रगीम हैं।

"यह वताइये कि आप लोग सोवियत संघ कैसे आये?" हम लोगो ने पूछा।

"खुशी से," इशाम ने वताया, "जव मास्को विश्वविद्यालय ने हमारे यहा से दो छात्रों को आमन्त्रित किया तो आशा से अधिक उम्मीदवार खडे हो गये। तव हमारी सरकार ने स्कूल की पढ़ाई खत्म

कर चुकनेवाले विद्यार्थियो एवं अन्य छात्रो की एक देशव्यापी प्रतियोगिता की।"

"प्रतियोगिता का रूप क्या था?"

"सभी उम्मीदवारो को अरबी से अग्रेज़ी में और अगेज़ी से अरबी मे अनुवाद करने को दिया गया था। सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछे गये थे और अन्त मे सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह था कि हमें एक लेख लिखने को कहा गया था। उसका विषय था—'विज्ञान और सस्कृति में पिछड़े रहने से प्रगति अवरुद्ध हो जाती है'।"

"हां, तो," जाफर ने मुस्कराते हुए कहा, "हमने प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त की और इस तरह मास्को पहुचने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।"

"आप मास्को कब पहुचे और आप किस विभाग में पढ रहे है?"

"मैं हवाई जहाज़ से १४ अक्तूबर को पहुचा और इशाम १२ अक्तूबर को। हम रूसी भाषा और साहित्य का अध्ययन करना चाहते हैं। चूकि हम भाषा बिलकुल नही जानते, इसलिये अगले साल तक हमें उसी का अध्ययन करना पड़ेगा और तब कही हम भाषाशास्त्र विभाग में दाखिल हो सकते हैं।"

"आपको यहा कैसा लग रहा है, विश्वविद्यालय के बारे मे तथा इसके छात्रों के बारे में आपका क्या ख्याल है?"

"वे जोश और उत्साह से उमगे हुए है, लेकिन हर कोई भड़कीले कपड़ों में नही दिखाई पडता है", जाफर ने जवाब दिया। "और दूसरी बात यह", इशाम ने टोका, "कि हर कोई मित्र जैसा ही बर्ताव करता है।"

"हां, हां," जाफर ने कहना शुरू किया, "हमने ऐसा दोस्ताना वर्ताव कहीं नहीं देखा। हर कोई, विदेशी छात्रों के साथ अपनापन का भाव जताने की कोशिश करता है। हम कहीं भी हों, चाहे व्याख्यान-हॉल में या भोजन के कमरे में, छात्रावास के अन्दर या बाहर, हर सोवियत छात्र हमारी मदद करने को तैयार रहता है। जिस हवाई जहाज़ पर इमाम उड़ा उसे मैं पकड़ नहीं सका। अतः मुझे अगले हवाई जहाज़ से आना पड़ा। मुझे अपने दूतावास को सूचित करने का भी मौका नहीं मिला। अत. मुझे हवाई अड्डे पर कोई लेने भी नहीं आ सका। मैं अपने को इस अजनबी नगर में बिल्कुल बेसहारा-सा महसूस कर रहा था कि यात्रियों में से एक रूसी लड़की, जिसका बाप उससे मिलने आया था, मेरे पास आकर बोली –

"आपको लेने कोई नहीं आया है। इस रात आप हमारे मेहमान बनेंगे। कल सवेरे हम आपके दूतावास से आपका सम्पर्क स्थापित करा देंगे।" उन्होंने मुझे अपना एक कमरा दे दिया। हमारे ये मेज़बान मेरे लिए बिलकुल अजनबी थे, अतः मैं उनकी समझदारी और हमदर्दी से बहुत प्रभावित हुआ। मुझे तो ऐसा लगता है कि यहां हर कोई उन्हीं जैसा ही है।

इसके बाद हम अपनी शुभकामनाओं के साथ उन दोनों से विदा होकर आगे बढ़े।

इस मज़ेदार बॉल-नृत्य के वर्णन में पृष्ठ के पृष्ठ ख़त्म हो जायेंगे। वह रूसी डाक का थैला, प्रहसनपूर्ण कार्टून, ससागेह-फैशन की प्रदर्शनी और कला-आचार्यों द्वारा प्रस्तुत कंसर्ट आदि सब कुछ... लॉटरी भी खेली गयी। एक रूबल देकर आप बरतन, गुड़िया, बच्चों के जूते, मिठाइयां, सेंट और यहां तक कि एक साइकिल भी

जीतने के लिए अपनी किस्मत आज़मा सकते थे। भले ही वह संख्या में एक थी, पर इसको जीतने के लिए उत्साह कितना था. . किस्मत का निपटारा करने के लिए एक छोटी-सी वियतनामी लडकी को वुलाया गया और उसे एक टोपी में से सख्याओ को निकालने के लिए कहा गया। पलक झपते ही उसने किस्मत का फैसला कर दिया। भाग्यवान विजेता वही पर चट अपनी साइकिल पर सवार हो रफू-चक्कर हो गया। अन्य प्रतिद्वन्द्वी हाथ मलते रह गये। हमें उस भाग्यवान का नाम पूछने का भी मौका नही मिला।

वॉल-नृत्य समाप्त हुआ। हाथ मे हाथ लिये सभी छात्रो ने नवयुवको के गीत गाये। विश्व की विभिन्न भापाओ में गाये जानेवाले इस गीत के गानेवालो के समवेत स्वर से हॉल गूज उठा—

"एक है हमारी आज राहे
एक है हमारा आज गान
कोई देश हो, कोई भाषा
पर समझते है दिलो की हम ज़बान "

पाठकों से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है—

२१, जूबोव्स्की बुलवार, मास्को,
सोवियत संघ।